कावूर।

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर-सीरीजका ३८ वाँ ग्रन्थ ।

काबूर ।

इटलीके पुनरुद्धारक, सुप्रसिद्ध देशभक्त
और राजनीतिज्ञ केमिली काबूरका
जीवन-चरित ।

लेखक,

पण्डित **हरिभाऊ उपाध्याय,**

सरस्वतीके भूतपूर्व सहायक-सम्पादक ।

प्रकाशक,

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

कार्तिक, १९७५ वि० ।

प्रथमावृत्ति ।] नवम्बर १९१८ ई० । [मूल्य १)

प्रकाशक—
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।
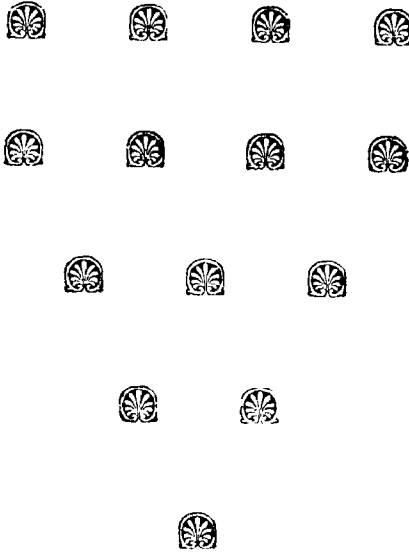
मुद्रक—
मंगेश नारायण कुळकर्णी,
कर्नाटक प्रेस,
नं० ४३४, ठाकुरद्वार, बम्बई।

वक्तव्य ।

महत्त्वाकांक्षा उन्नतिका मूल है । क्योंकि महत्त्वाकांक्षाका अर्थ है—उन्नतिकी इच्छा; और जहाँ इच्छा ही नहीं वहाँ कार्य्यकी क्या सम्भावना ? महत्त्वाकांक्षा जिसमें नहीं, वह कार्य्यक्षमता रखते हुए भी संसारमें कोई विशेष कार्य्य नहीं कर पाता । इसमें सन्देह नहीं कि केवल महत्त्वाकांक्षी होनेसे ही मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता, अन्य अनेक गुण यथा–निश्चय, साहस, कौशल, त्याग इत्यादि भी उसे दरकार होते हैं । परन्तु महत्त्वाकांक्षा इन सबकी अपेक्षा अधिक आवश्यक है । संसारमें वह मनुष्य धन्य है जिसमें इन सब गुणोंका सङ्गम हो । उसकी महत्ता, और कार्यशीलताका पूछना ही क्या ? सिद्धिको तो उसकी दासी ही समझिए । पर ऐसे अलौकिक पुरुष होते हैं इने गिने ही । इटलीका उद्धारक हमारा चरित-नायक केमिली कावूर उन्हीं महान् पुरुषोंमेंसे है । वह अद्वितीय महत्त्वाकांक्षी था । पर उसकी महत्त्वाकांक्षा व्यक्तिगत न थी । वह देश-प्रेम, लोकसेवासे लबालब भरी हुई थी । इटली-राष्ट्रका निर्म्माण ही उसकी एक मात्र अभिलाषा थी—उत्कण्ठा थी । यही उसकी महत्त्वाकांक्षाकी बड़ी भारी विशेषता है । इसीके बल पर वह अद्भुत सफलता प्राप्त कर सका—उस समय असम्भव समझी जानेवाली इटलीकी राष्ट्रीय एकता कर सका । इसीमें उसके स्वार्थत्यागका बीज है । महत्त्वाकांक्षाका सम्बन्ध जहाँ व्यक्तियोंसे होता है–जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थमें ही महत्त्वाकांक्षाकी परिसमाप्ति होती है—वहाँ स्वार्थत्याग और देश-भक्तिको कौन पूँछता है ? यदि बीजरूपमें ये गुण ऐसे मनुष्यमें हों भी तो वे अपना रास्ता ले लेते हैं । इन दिव्य गुणोंका विकास तो उन्हींमें होता है जो वैयक्तिक स्वार्थको तुच्छ और जनता—समाज—के स्वार्थको महत्त्वपूर्ण समझता हो । और ये गुण हमारे चरित-नायक काबूरके रोमरोममें व्याप्त थे । सारे योरपकी खाक छीन डालिए, इन गुणोंमें अर्थात् स्वार्थत्याग-पूर्वक प्रकृत देशभक्तिमें काबूरकी टक्करका कोई पुरुष आपको न मिलेगा ।

इटली राष्ट्रके निर्म्माणमें ही काबूरने अपना सारा जीवन लगाया । अतएव उसका जीवन राजनैतिक जीवन था । किसी कार्य्यमें मनुष्य तभी सफलता प्राप्त

कर सकता है जब उसकी विधान-विद्यामें भी वह निपुण हो। कावूरमें यह गुण भी विद्यमान् था। वह अद्भुत राजनीतिविशारद और बड़ा राजकाजी था। कार्य्य-कुशल अथवा महात्मा तिलकके शब्दोंमें 'कर्म्मयोगी' तो वह पहले नम्बरका था। तत्कालीन योरपके समस्त राजनीतिज्ञोंको उसकी राजनीति-पटुता और कर्म्म-कुशलताका लोहा मानना पड़ता था।

उन्नतिके लिए अन्य आवश्यक गुण--निश्चय, साहस, दूरदृष्टि इत्यादि भी--उसमें कूट कूट कर भरे थे। इनका परिचय उसके प्रायः प्रत्येक कार्य्यसे मिलता है। यह देखकर कहना पड़ता है कि कावूर निस्सन्देह अलौकिक पुरुष था—दिव्य विभूति थी। स्वदेश-सेवाके लिए उसने अपने सारे सुखोंपर पानी फेर दिया था। यहाँतक कि देशसेवाव्रतमें बाधा पड़नेके खयालसे उसने आजन्म विवाह नहीं किया। वह बालब्रह्मचारी था। उसी महात्माका यह चरित है; उसीका गुण-गान इस पुस्तकमें किया गया है।

कावूरका यह चरित्र हमें दिखलाता है कि उसमें वे समस्त गुण विद्यमान् थे जो एक बढ़े-चढ़े देश-नायकमें होने चाहिए। इसी लिए उसका चरित प्रत्येक देशहितैषीके लिए अनुकरणीय है। वह शिक्षाप्रद भी खूब है। अतएव भारत-की वर्तमान-स्थितिमें, युवाओंके लिए, वह आदर्शस्वरूप है।

प्रस्तुत पुस्तक मराठी-भाषामें लिखित 'कावूर अथवा इटलीचा रामदास' नामकी पुस्तकका अनुवाद है। अनुवादमें हमने प्रधानतः भाव-दर्शनकी ओर विशेष ध्यान दिया है। हमारी रायमें यही अनुवादका उत्तम मार्ग है। मूल लेखकी सरसता अनुवादमें नहीं आसकती। कमसे कम हमारे सदृश अल्पज्ञ जनके लिए तो यह बहुत कठिन बात है। भाषा हमने सरल बोलचालकी लिखनेका प्रयत्न किया है। परन्तु हम इन बातोंमें कहाँतक कृतकार्य्य हुए हैं इसका हाल परीक्षक ही जान सकते हैं, हम नहीं। भ्रम या प्रमाद मनुष्यके लिए स्वाभाविक है। हम भी इस नियमके अपवाद नहीं हैं। जो सज्जन कष्ट करके हमारी भूलें दिखलानेकी कृपा करेंगे हम कृतज्ञता-पूर्वक उनका सुधार अगले संस्करणमें करनेका प्रयत्न करेंगे।

मूल मराठी-पुस्तक किसी एक पुस्तकका अनुवाद नहीं है। लेखकने कावूरके चरित्रसे सम्बन्ध रखनेवाली कितनी ही भिन्न भिन्न पुस्तकोंसे मसाला संग्रह करके

उसे भारतोपयोगी ढँगसे लिखा है। यह उसकी विशेषता है। अतएव यह हमारे विशेष कामकी है। और इसीलिए हमने स्वतन्त्र रूपसे अलग पुस्तक न लिख कर इसीका अनुवाद करना उचित समझा। उसके प्रकाशक (स्वर्गीय) श्रीयुत जनार्दन विनायक ओक एम० ए०, मालिक, राष्ट्रीय शिक्षणमाला, और संपादक लोकशिक्षण पूना, के हम कृतज्ञ हैं कि उन्होंने नाम-मात्रके द्रव्य पर उसके अनुवादकी अनुमति हमें दी। आपहीकी इस कृपाके बदौलत हम यह पुस्तक हिन्दी-संसारके सन्मुख रख सके हैं। इति।

इन्दौर,
शारदपूर्णिमा,
१९७५।

अनुवादक।

कैमिलो कावूर ।

इटली राष्ट्रका निर्म्माता

कावूर।
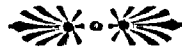
१—परिस्थिति।

कावूरका चरित्र क्या है, मानो उन्नीसवीं सदीके इटलीके पुनर्जीवन या पुनरुत्थानका इतिहास ही है। अतएव जबतक इटली-देशकी पूर्वपरस्थितिका थोड़ा भी परिचय पाठकोंको न होगा तबतक इस चरित्रका मर्म वे ठीक ठीक न समझ सकेंगे। सो पहले इटलीकी तत्कालीन और तत्पूर्व दशाका वर्णन थोड़ेमें सुनिए—

इटली-देश योरपखण्डके दक्षिणमें है। उसका आकार बूटके तलवेके सदृश है। इस देशकी सभ्यता कोई दो हजार वर्षोंसे भी अधिक प्राचीन है। रोमन-साम्राज्यके समय यह देश वैभवशिखर पर जा पहुँचा था। परन्तु जब रोमन-साम्राज्य रसातलको चला गया तब इटलीकी बड़ी दुर्गति हुई। उसे कितनी ही भिन्न भिन्न राज्य-सत्ताओंके आगे सिर झुकाना पड़ा। रोमन-साम्राज्य के नष्ट होजानेके पश्चात् इस देश पर विदेशियोंके आक्रमण शुरू हुए, जिससे उसके टुकड़े होने लगे। ५६८ ईसवीके लगभग लाम्बार्ड्स् लोगोंने इटलीका उत्तर-भाग अपने कब्जेमें कर लिया। दक्षिण-भागमें भी कितने ही छोटे छोटे स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गये। इसके पश्चात् सोलहवीं शताब्दीमें, स्पेनिश लोगोंने उसे

अपनी साम्राज्य-सत्ताके अधीन कर लिया। फिर अठारहवें शतकमें स्पेन-साम्राज्यके नष्टप्राय होजाने पर, आस्ट्रियाने उस पर अपना अधिकार जमाया। परन्तु आस्ट्रियाने सारा इटली-देश अपने राज्यमें नहीं मिलाया; सिर्फ उत्तरी विभागकी एक तहसील (लाम्बर्डी) अपने राज्यमें मिला ली और शेप सारा प्रदेश जिनका था उन्हें सौंप दिया। हाँ, उन प्रान्तोंके अधिकारियों पर उसने अपना राजनैतिक आधिपत्य अवश्य कायम रक्खा। लाम्बर्डीको छोड़ कर अन्य प्रान्तोंमें, इस समय, आठ प्रधान रियासतें थीं। पर थीं वे छोटी छोटी। उनमेंसे नेपल्स और सिसिली ये दो रियासतें बोरबोन राजवंशके अधीन थीं। उनकी आबादी कोई ६० लाख थी। सार्डीनिया, जिसे पीडमाण्टका राज्य भी कहते हैं, सेवायके राजवंशके अधिकारमें था। उसकी लोकसंख्या कोई ३५ लाख थी। इन दोनों वंशोंकी सत्ता पूर्ण एकतन्त्रात्मक अर्थात् एक राजाधीन (Monarchy) थी। सरदार और धर्म्मगुरु ही उनकी सत्ताके—शासनके—आधारस्तम्भ थे। सर्वसाधारणको तो वे कोई चीज ही न समझते थे। इटलीके मध्यभागमें पोपके छोटे छोटे राज्य थे। वहाँका सारा काम-काज पोप और उनके सहायकोंके द्वारा होता था। वेनिस और जिनोआ ये दो बड़े घरानोंके स्वसत्तात्मक राज्य थे। टस्कनी, पार्मा और मोडेना ये तीन छोटी छोटी जागीरें थीं। इनके अतिरिक्त दो और बहुत ही छोटे लोक-सत्ताक राज्य तथा तीन जरा जरासी जागीरें थीं। फ्रान्सकी राज्यक्रान्तिके (१७८९ ईसवी) पहले इटली देशके इतने टुकड़े हो गये थे।

पूर्वोक्त सभी रियासतें एक दूसरीसे अलग थीं। उनमें परस्पर वैमनस्य भी था। इससे उनमें बार बार झगड़ा हो जाया करता था। इन सब स्थानोंकी स्थिति और वहाँके लोगोंकी रहन-सहन एक दूसरेसे

थोड़ी बहुत भिन्न थी। अतएव उनमें एकता स्थापित होनेकी सम्भावना कम ही रहा करती थी। धर्म और भाषा ऐक्यके बड़े ही महत्त्वपूर्ण साधन हैं। ये साधन उनके लिए उपलब्ध तो थे; परन्तु उस समय पारस्परिक परिचय-प्राप्ति अथवा व्यवहारके मार्ग, आजकी तरह सुगम न थे। अतएव एक रियासतके लोग दूसरी रियासतके लोगोंसे बहुत कम मिलने-जुलने पाते थे। इससे पूर्वोक्त साधनोंका विशेष उपयोग न हो सकता था। प्रत्येक राज्यके साधारण लोग बिलकुल अज्ञान-दशामें थे। अर्थात् वहाँकी प्रजा यही समझती थी कि हमारा राज्य ही सब कुछ है। सारा संसार इसीमें है। पहले दरजेके लोगोंको —सरदारों और धर्मगुरुओंको—कितनी ही राजनैतिक सुविधायें थीं। राजनैतिक मामलोंमें उनकी बहुत रियायत की जाती थी। उनकी मान-प्रतिष्ठा भी खूब थी। इससे वे अपने ही बड़प्पनमें फूले न समाते और ऐशो आराममें चूर रहते थे। राजा लोग भी एक दूसरेके विषयमें उदासीन, बल्कि मत्सरग्रस्त, रहते थे। इस दशामें, इटलीमें, एकताके भावका प्रवेश कैसे हो सकता था? सोलहवें शतकमें मैकवेलीने अपने ग्रन्थोंमें इस भावनाका दिग्दर्शन किया था; परन्तु उससे कुछ भी काम न निकला। उसके पीछेके कितने ही कवियों और ग्रन्थकारोंने, अपने अपने ग्रन्थोंमें इस भावनाका कहीं कहीं उल्लेख किया है; परन्तु बहुत दिनोंकी पुरानी परिपाटी टूटना उन्हें असम्भव जान पड़ता था। अतएव उन्होंने इस पर विशेष विचार नहीं किया। अठारहवीं सदीमें, विटोरियो आलफेरी (१७४९--१८०३ ईसवी) नामका एक प्रतिभा-सपन्न कवि हुआ। उसने अलबत्ते अपने काव्योंमें भावी इटली राष्ट्रका उज्ज्वल चित्र खींचा है। तत्कालीन सुशिक्षित लोगों पर उसका असर भी अच्छा पड़ा, यद्यपि उनकी संख्या बहुत कम थी।

इससे उन लोगोंमें एक तरहकी जागृति और तेजस्विता उत्पन्न हो गई। इन्हीं दिनों इटलीके उत्तर-भाग और टस्कनीमें, व्यापार और उद्योग-धन्धोंकी वृद्धिके कारण सधन लोगोंका एक दल तैयार हो गया था। धनवृद्धिके साथ साथ उन लोगोंमें शिक्षाकी भी वृद्धि हो चली थी। सम्पत्ति और शिक्षाकी प्राप्तिके कारण कितने ही विषयोंमें सरदारोंसे उन लोगोंका साबका पड़ने लगा। तब उन्हें आप ही सरदारोंके गुणदोषोंका ज्ञान होने लगा। इसी समय फ्रान्सके कुछ नामी ग्रन्थकर्ता सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक समताके सिद्धान्तोंका प्रतिपादन करने लगे। उनका भी प्रभाव इस नवीन दल पर पड़ने लगा। जोसफ पारिनी (१७२९–१७९९ ईसवी) नामक एक कवि इन्हीं दिनों मिलानमें होगया। वह भी पूर्वोक्त सिद्धान्तोंकी पुष्टि करने लगा। उसके काव्योंने पूर्वोक्त दलके लोगोंमें विशेष करके मिलान और नेपल्सके लोगोंमें असन्तोष उत्पन्न कर दिया। उन्हें अपनी वर्तमान दशा पर खेद होने लगा। उसके सुधार—परिवर्तन—करनेकी आकांक्षा और भावनाका उदय उनके हृदयोंमें होगया। इटलीके दक्षिण-भागमें अभी ऐसा दल तैयार न हुआ था। वहाँ पूर्वोक्त आकांक्षा और भावना उत्पन्न न हुई थी। वहाँ सिर्फ दो ही दल थे—एक सरदारों और पादरियोंका दल; दूसरा सर्व साधारणका कङ्गाल दल। यह दूसरा दल पहले दल पर सर्वथा अवलम्बित था, अर्थात् उनका दास बन गया था। इस प्रदेशमें, उत्तरी प्रदेशके सदृश, उद्योग-धन्धोंकी उन्नति भी विशेष न हुई थी। अतएव वहाँ धन-सम्पन्न मध्यम दलकी सृष्टि अभी न होने पाई थी। इससे, वहाँ सर्व-साधारणमें शिक्षाका प्रचार भी जियादह न हो सका। उनका दारिद्य और अज्ञान ये दोनों उनकी उन्नतिके रास्तेमें काँटे बखेरते थे और उन्हें

अधिकाधिक हीन दशाको पहुँचाते थे। ऐसी दशा दक्षिण इटलीकी थी। परन्तु उत्तरी-भागकी स्थिति, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, इसके बिलकुल विपरीत थी। वहाँके निवासी अपनी दशाका सुधार करनेके लिए अत्यन्त लालायित थे। इतनेहीमें फ्रान्समें राज्यक्रान्ति शुरू हुई और फ्रान्सकी तरफसे पहले नेपोलियनने इटलीपर चढ़ाई की। इस अवसरसे लाभ उठाकर कुछ उत्तरी राज्योंके लोगोंने नेपोलियनकी सहायतासे लोकसत्ताक राज्य स्थापन किये। पीछे, कुछ दिनोंमें, प्रायः सारा इटली-देश नेपोलियनके कब्जेमें आ गया। तब वहाँ, न्यूनाधिक परिमाणमें लोकसत्ताक राज्यपद्धति जारी हुई। नेपोलियनने इस देशमें, फ्रेंच आधिपत्यके अन्तर्गत भिन्न भिन्न माण्डलिक राज्य निर्माण किये और फ्रान्सके सदृश, शासन-संस्थाओं (Institutions) का भी बीज-वपन किया, जिसके बदौलत वहाँके लोगोंको शासन-कार्यकी शिक्षा भी मिलने लगी। आगे चलकर, इससे उनका बड़ा काम निकला। नेपोलियनका युद्ध-यज्ञ १८१४—१५ ईसवीमें समाप्त हुआ। उस समय योरपके प्रधान राष्ट्रोंकी सम्मतिसे इटलीका पुनस्सङ्गठन हुआ। उसमें सार्डिनिया, अर्थात् पीडमाण्टका राज्य, फिरसे सेवाय-राजवंशके युवराजको मिला। इसी राज्यमें पहलेवाला जिनोआका लोकसत्ताक राज्य भी शामिल किया गया। आस्ट्रियाने लाम्बर्डी और वेनिशिया-प्रान्त अपने राज्यमें मिला लिये और इटलीके अन्य भागोंमें जो भिन्न भिन्न रियासतें इस समय स्थापन हुई उनमेंसे पोपकी रियासतोंको छोड़कर बाकी जगह आस्ट्रियाके राजवंशीय रिश्तेदार ही गद्दी-पर बिठाये गये। अर्थात् पीडमाण्टको छोड़कर प्रायः सारे प्रदेश पर आस्ट्रियाका आधिपत्य हो गया। अकेला पीडमाण्ट ही उसके संसर्गसे अलिप्त रहा। परन्तु उसका राजा, विक्टर इमेन्युअल दि फर्स्ट बूढ़ा था।

वह एक-तन्त्री, अर्थात् एकराजाधीन, शासनप्रणालीका प्रेमी था और वहाँकी प्रजाको तो फ्रेंच लोगोंके संसर्गसे लोकसत्ताक शासन-पद्धतिका मजा मालूम हो गया था। अतएव वह उस राजासे खुश न थी—उसे न चाहती थी। परन्तु लोगोंने उसे जियादह तङ्ग न किया। क्योंकि उसे कोई सन्तति न थी। उसका भतीजा, चार्ल्स अलबर्ट, उदार-शासन-प्रणालीका प्रेमी था और शीघ्र ही उसके सिंहासनारूढ़ होनेकी सम्भावना भी थी। परन्तु १८२०–२१ ईसवीके बीच इटलीके अधिकांश राज्योंके सैनिक सत्ताधारी लोगोंने विप्लव और क्रान्तिका झण्डा खड़ा कर दिया। पीडमाण्टके राज्यमें भी उनका थोड़ा बहुत प्रवेश होने लगा। तब विक्टर इमेन्युअल दि फर्स्टने तङ्ग होकर राज्यसे इस्तीफा दे दिया—शासनसे अपना सम्बन्धमोचन कर लिया और अपने भाई चार्ल्स फेलिक्सको गद्दीका वारिस और अधिकारी बना दिया। चार्ल्स फेलिक्स इस समय मोडेनामें था। उसने चार्ल्स अलबर्टको अपना अस्थायी मुख्तार बना कर भेज दिया। चार्ल्स अलबर्टके विचार तो सुधारवादी लोगोंसे मिलते जुलते थे ही। बस, फिर क्या देर थी! अधिकार हाथमें आते ही उसने स्पेनकी शासन-प्रणालीके ढँगपर शासनप्रणाली (Constitution) की घोषणा कर दी। उसका यह काम चार्ल्स फेलिक्सको बिलकुल न भाया। मोडेनासे ही उसने अलबर्टका घोषणापत्र रद कर दिया। फिर जब वह स्वयं ट्यरिनको आया उसने चार्ल्स अलबर्टके इस कार्यकी निन्दा करके उसे निकल जानेकी आज्ञा दी। उस समय पुरोगामी अर्थात् सुधारवादी पक्षके लोगोंने अलबर्टकी रक्षा करके उसका साथ देनेका जोड़ तोड़ लगाया; परन्तु फिर यह सोच कर कि आस्ट्रियन सेनाकी सहायतासे फेलिक्स अपना और अपने देशका सदाके लिए घात कर

बैठेगा, अलबर्ट चुपचाप भाग निकला। उसके वहाँसे दबे-छुपे निकल भागनेपर पुरोगामी और अनियन्त्रित सत्तावादियोंमें लड़ाइयाँ छिड़ीं। उनमें पुरोगामियोंका पूरा पराजय हुआ। उनके नेताओंको अपने प्राणोंकी रक्षाके लिए देशान्तरगमन करना पड़ा। इटलीके अन्य प्रान्तोंके सैनिकोंके द्वारा किये गये उपद्रव भी आस्ट्रियाकी सहायतासे शान्त किये गये। तब फिरसे चारों तरफ अनियन्त्रित शासनका डङ्का पिटने लगा। इस प्रकार यद्यपि अधिकारी और सैनिक पुरोगामियोंके राजनैतिक सुधार-विषयक प्रयत्न विफल हुए, तथापि उन सुधारोंकी कल्पनाका बीज नष्ट न हुआ। फ्रेंचोंके संसर्गसे लोक-स्वतन्त्रताका जो भाव इटलीमें उदय हुआ था उसकी जड़ बहुत गहरी जा चुकी थी। उसका उन्मूलन होना प्रायः असम्भव था। बल्कि ये भाव वहाँके सुशिक्षित समाजमें झपाटेसे फैल रहे थे। लेखन-स्वातन्त्र्यका यद्यपि अत्यन्त सङ्कोच हो गया था तथापि, उस विपरीत परिस्थितिमें भी, उनका सङ्गोपन हो ही रहा था। नेपोलियनके समयकी पीढ़ी—उसके जमानेकी जनता—अब न रह गई थी। उसकी जगह नई पीढ़ीका उदय हो रहा था। नेपोलियन और आस्ट्रियाके द्वारा किया गया अपने देश-का वण्टाढार यह नव पीढ़ी देख चुकी थी और उसके हृदय पर इसका असर भी बुरा हुआ था। अतएव उसके हृदयमें यही चिन्ता—यही धुन— दिनरात रहा करती थी कि यह दुर्दशा, यह विपन्न अवस्था कैसे दूर हो? १८२०–२१ ईसवीके सैनिक पुरोगामी पक्षके क्रान्ति-कारक प्रयत्न असफल होने पर इटलीके अधिकांश राज्योंमें प्रतिगामी शासन-पद्धतिने बड़ा जोर पकड़ा। अतएव लोग खुल्लमखुल्ला राज-नैतिक सुधारोंका आन्दोलन न कर पाते थे। लाचार होकर वे गुप्त मण्डलियोंकी स्थापना करके देशमें क्रान्तिकारक विचारोंका प्रचार करने

लगे । इन गुप्त आन्दोलनोंका मुख्य अग्रणी था मेजिनी। मेजिनीके प्रयत्न तथा उनके परिणामोंके विषयमें कुछ कहनेकी यहाँ आवश्यकता नहीं । इटलीमें अकेले पीडमाण्टके राज्यको ही राजनैतिक स्वतत्रंता प्राप्त थी। शेष प्रायः सभी राज्य एक दूसरेसे द्वेष और ईर्षा करते थे। हाँ पोपकी रियासतें बहुत कुछ स्वतन्त्र थीं; परंतु पोप भी था—अनियन्त्रित-सत्तावादी । अतएव उसका और पुरोगामियोंका कभी बनाव बननेकी सम्भावना न थी । पीडमाण्ट पर भी आस्ट्रियाकी आँखें लग रही थीं । परंतु यह राज्य फ्रान्सकी सीमा (Buffer state)से सटा हुआ था । अतएव फ्रेंचसरकारके ऐतराजसे बचनेके लिए उसने उसे स्वतन्त्र रहने दिया था । यद्यपि इन राज्योंकी शासन-पद्धति एकसूत्री थी तथापि वह बिलकुल असह्य न थी । वहाँ प्रातिनिधिक शासनसंस्था स्थापन हो गई थी और किसी उदारचेता और विवेकशील राजाके गद्दी पर बैठनेसे तद्विषयक अधिक सुधार होनेकी सम्भावना थी । इस परिस्थितिका भलीभाँति परिशीलन करके पहले तो पीडमाण्टके और फिर समस्त इटलीके राजनैतिक सुधार करनेके लिए तथा पीडमाण्टके राजवंशीय राजपुरुषका एकच्छत्र राज्य स्थापन करनेके लिए कितने ही लोगोंने प्रयत्न किये वे सफल भी हुए । परन्तु उन सबमें हमारे चरित्रनायक कावूरका आसन श्रेष्ठ और ऊँचा है । इन सब प्रयत्नोंका सूत्रसंचालक वही था । प्रधानतः उसीकी प्रतिभा और राजनीति-पटुताकी बदौलत यह कठिन कार्य जो सामान्यतः असम्भव समझा जाता था, सिद्ध हुआ । उस महत्कार्यका हाल आगे कावूरके जीवनचरित्रसे आपको मालूम होगा । कावूरके प्रयत्नके सफल होनेमें पीडमाण्टके राजा विक्टर इमेन्युअल दि सेकण्ड और, जनरल गेरीबाल्डिकी भी सहायता करणीभूत है । अतएव कावूरकी जीवनकथामें इन दोनों

सज्जनोंका भी वर्णन थोड़ा बहुत किया जायगा; परन्तु उतना ही जितना कि उसके चरित्रसे सम्बन्ध रखता है। इस त्रिमूर्तिने, कोई १५ ही वर्षोंके भीतर, इटलीकी गई हुई स्वतन्त्रता फिरसे प्राप्त कर ली और पीडमाण्टसे वहाँके छोटे छोटे राज्योंकी एकता इतने आश्चर्यकारक ढँगसे की कि जगतके इतिहासमें इस घटनाकी जोड़ मिलना कठिन है। इन कारणोंसे कावूरका चरित अपूर्व और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। नीतिपटु मनुष्य एक सींकके सहारे अपने बुद्धिबलके द्वारा कितनी भव्य और विशाल इमारत खड़ी कर सकता है, यह बात इस चरितके अध्ययनसे भलीभाँति जानी जा सकती है।

२—कुलकथा और शैशव।
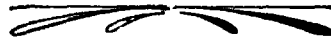
कावूरका जन्म १८ अगस्त सन् १८१० ईसवीको टयूरिनमें, अपने परिवारके राजमहलमें हुआ। उसका परिवार पहलेहीसे प्रसिद्ध था। इस कुलके कितने ही पुरुषोंने अपने देशकी सैनिक सेवा करके नाम और कीर्ति कमाई थी। इस सेवाके उपलक्ष्यमें कावूरके किसी पूर्वजको तत्कालीन पीडमाण्टके राजाने 'मार्किस आव् कावूर' की पदवी प्रदान की थी। तभींसे उसका वंश 'कावूर' कहलाने लगा। इससे पहले वह 'बन्सो'के नामसे मशहूर था। जिस समय कावूरका जन्म हुआ, उसके कुटुम्बमें—रिश्तेदार और आत्मीय मिलकर—भिन्न भिन्न प्रकृतिके कितने ही लोग थे। उन सबमें एकता और मेल-मिलाप रखनेका कठिन काम उसकी दादीकी तरफ था। वह बड़ी चतुर

सुशील, समझदार और कर्तव्यक्षम स्त्री थी। इतने बड़े परिवारका प्रबन्ध मजेमें—बिना झगड़े और मनमुटावके—करके दिखलाना आसान काम नहीं। पर उसके लिए यह बायें हाथका खेल था। यह परिवार पहले बड़ा धन-सम्पन्न था। परन्तु इस समय उसकी दशा हीन हो गई थी। इसका कारण था। पहले नेपोलियनने इटली पर कितने ही बार आक्रमण किया। इस वंशकी धन और जन-सम्पत्ति उसके सैनिक अत्याचारका शिकार हो गई। यहीं तक बस नहीं, पूर्वोक्त देवी—काबूरकी दादी—को नेपोलियनकी बहनकी 'दासी' बन कर भी रहना पड़ा। उसके साथ वह नेपोलियनकी दूसरी शादीमें पेरिस गई। वहाँ उसने किसी फ्रेंच शिक्षकसे अध्यापनकला सीखी। उसका उद्देश यह था कि आगे चलकर मैं स्वयं अपने नातियोंको शिक्षा दे सकूँ। काबूरके पिताका नाम मार्किस माइकेल बेन्सो था। स्वयं काबूरका नाम था——केमिली। उसे सिर्फ एक ही जेठा भाई था। उसका नाम था गस्टाव। एडेल उसकी माताका नाम था। एडेलका पिता जिनीवा (स्विजरलैंड) का काउंट अर्थात् सरदार था। उसे तीन लड़कियाँ थीं। तीनों अपने अपने स्वामियोंके साथ टयूरिनके 'पालात्सो काबूर'——(Palazzo Cavour) नामके राजमहलमें रहती थीं। हमारे चरित्र-नायक, केमिली काबूरका जन्म इसी राजमहलमें हुआ। इस महलमें काबूरकी उम्रके कितने ही बालक थे। सब अमीरी ठाटबाटमें रहते थे; परंतु केमिलीका बरताव और रहन-सहन बहुत सादी थी। उसका हृदय भी वैसा ही उदार था। सरदारों और अमीरोंके सदृश ऐंठ, उद्दण्डता, अड़ियलपन, उससे दूर रहता था। वह बहुत शान्त प्रकृति और मिलनसार था; परंतु कभी कभी उसके क्रोधका भी पारा चढ़ जाया करता था। अध्ययनमें उसकी विशेष रुचि न थी। तथापि उसकी बुद्धिमत्ता और

निर्णयशक्तिका विकास कम उम्रमें ही हो गया था। चतुरता या साव-धानी, जो राज-नीति-विशारदों या राजकाजियोंका मुख्य गुण है, लड़क-पनसे ही उसमें पाया जाता था। जब वह छः ही वर्षका था, उसने अपनी एक बालिका सखी–लड़कपनकी साथिनी–को एक पत्र लिखा था। वह पत्र आज भी मौजूद है। बालिका कहीं अन्यत्र चली गई थी। कावूर उसकी जुदाईसे दुखी था। वह चाहता था कि वह फिरसे वहीं रहे। अत-एव उसने उस पत्रमें लिखा था "तुम तो मुझको छोड़ कर चली गई हो; पर मैं तुम्हें उसी तरह चाहता हूँ। एक बहुत ही सुन्दर बालिका-से मेरी जान-पहचान हो गई है। वह मुझे दो बार अपने सुनहले बागमें घूमनेके लिए ले गई थी।" इतने छोटे बालककी यह व्यव-हार-चतुरता देखकर किसे विस्मय न होगा? इसी समयकी उसकी धीरता और साहसकी भी एक कहानी सुनी जाती है। कावूरके घरके लोग हर साल अपने नानाके यहाँ जिनीवा जाया करते थे। एक बार वे अपने नानाके एक मित्र दलारिवेके गाँवको घोड़ागाड़ी पर सवार हो कर गये थे। घोड़े अच्छे न थे इससे रास्तेमें उनको कुछ तकलीफ उठानी पड़ी। यह देख कर बालक कावूर क्रोधकी आँचसे तपने लगा। मुकाम पर पहुँचते ही उसने बड़ी शानसे दलारिवेसे हाथ मिलाया और कहा–"पोस्ट मास्टरने खराब घोड़े देकर हमारा अपमान किया है; उसे बरखास्त कर देना चाहिए।" इसपर दलारिवेने जवाब दिया—"यह बात मेरे बसकी नहीं। यह तो ग्रामाधिकारी सिंडिककी इच्छा पर अवलम्बित है।" सुनते ही केमिलीने कहा—"ठीक है, सिंडिकसे मेरी भेट करा दीजिए।" उत्तर मिला—"कल।" थोड़ी ही देरके बाद रिवेने वहाँके सिंडिकको, जो उसका मित्र था, एक पत्र लिखा—"कल मैं एक

मजेदार बालक पाहुनेकी भेट आपसे करानेवाला हूँ। " दूसरे दिन केमिली घूमते-घामते सिंडिकसे मिलने गया। सिंडिकने उसका बहुत अच्छा स्वागत किया परंतु उस आव-भगतमें न भूल कर केमिलीने शान्तिपूर्वक अपनी शिकायत खुलासेवार सुनाई। फल यह हुआ कि पूर्वोक्त पोस्ट मास्टरकी बरखास्तीका आश्वासन उसे मिल गया। तब बड़ी खुशी खुशी आकर केमिलीने दलारिवेको कहा—" बस, अब वह जरूर बरखास्त हो जायगा। "

पीडमाण्टकी शासन-शैली अनियन्त्रित थी। उस राज्यमें सरदारों अर्थात् अमीर-उमरोंकी खूब चलती थी। वहाँके शासन-कार्य्यमें भी उन्हींकी तूती बोलती थी। कुछ अंशोंमें यह उचित भी था। क्योंकि उस राज्यकी प्रतिष्ठा और स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिए उन्होंने असीम धन और रक्त खर्च किया था। अतएव उनकी यह अभिलाषा होना स्वाभाविक ही था कि शासन या सत्ताके अधिकारका अधिकांश उन्हींके हाथोंमें रहे। वे इस बातमें नाखुश थे कि अधिकार या सत्ताका कुछ अंश सर्वसाधारणको दिया जाय। उन लोगोंकी यही धारणा थी कि " राजा और हम सिर्फ दोनों ही राज्यके मालिक हैं, तीसरा कोई नहीं। " हाँ, प्रातिनिधिक शासन-प्रणालीके वे थोड़े बहुत कायल अवश्य थे; परन्तु इस सिद्धांत, इस तत्त्वकी पहुँच सर्व साधारण तक करानेके लिए वे तैयार न थे। तथापि फ्रेञ्च राज्य-क्रान्तिके बाद सारे योरप-खण्डमें स्वतन्त्रता, समता और बन्धुभावका उदय सर्व साधारणमें हो गया था और फ्रेञ्चोंके संसर्गसे इटलीमें तो इन भावोंका प्राबल्य बहुत ही हो गया था। फलतः वहाँ सरदारों और सर्व साधारणमें शाब्दिक द्वन्द्व भी शुरू हो गया था। योरपके अधिकांश देशोंमें अब लोकमत अनियन्त्रित (despotic) शासन-

पद्धतिके प्रतिकूल और नियन्त्रित अथवा प्रातिनिधिक (Limited Monarchy or representative Government) शासन-प्रणालीके अनुकूल हो चला था। स्विजरलैंडके उच्चवर्गमें तो पूर्ण लोकसत्ता वादियोंका एक दल भी बन गया था।

कावूर जबतक अपनी ननसार जाया करता था, वहाँ उसे सदा पूर्वोक्त कथायें सुननेका मौका मिला करता। उसके कोमल हृदय पर उनका बड़ा असर पड़ता। इससे लड़कपनसे ही उसके विचार उदार और उच्च हो चले थे। उसके परिवारके अन्य लोगोंके–बालकों तकके विचार पूर्वोक्त सरदारोंके विचारोंकी तरह थे। कावूर उनसे अधिक मिलता जुलता न था। यह देख कर वे लोग उसकी दिल्लगी भी उड़ाया करते। ऐसे समय कावूरकी नानी अलबत्ते उसकी तरफदारी करती। घरके अन्य लोगोंकी अपेक्षा वही कावूरका जियादह दुलार करती—हिमायत करती। वह थी भी उदार विचारोंकी अनुरागिणी। कावूरके उदार विचारों पर वह मुग्ध थी। कावूर हमेशा उससे दिल खोल कर बातचीत करता और वह भी उसके गुणों पर लट्टू थी। दस वर्षकी अवस्था होने तक कावूरकी सामान्य शिक्षा घर ही पर हुई। पश्चात् वह ट्यूरिनके सैनिक विद्यापीठमें भेजा गया। वहाँ गणित-शास्त्रकी शिक्षा बड़ी अच्छी दी जाती थी। उसने थोड़े ही समयमें गणितमें अच्छी प्रवीणता प्राप्त कर ली। कावूर बार बार कहा करता था कि गणित शास्त्रका यह अध्ययन उसके बड़े काम आया। किसी भी विषयका अचूक अनुमान करनेमें उसे इससे बड़ी सहायता मिलती थी। मनुष्यकी सच्ची परख करनेका सामर्थ्य भी इसी अध्ययनके कारण—इस अध्ययनके द्वारा प्राप्त हुई बुद्धिकी तरलता या कुशाग्रता के कारण—उसे प्राप्त हुआ। यह उसीका कथन है। उस पाठशालामें

भाषाकी शिक्षा बहुत थोड़ी दी जाती थी। अतएव वह प्रभाव-शाली भाषा या प्रबन्ध न लिख सकता था। इसका उसे बड़ा रंज रहा। शिक्षाक्रमकी इस त्रुटि पर वह हमेशा कटाक्ष किया करता था।

१८२४ ईसवीमें पीडमाण्टके भावी राजा चार्ल्स अलबर्टने कावूरको अपने खिदमतगारकी जगह मुकर्रर किया। तब उसकी शिक्षाकी सारी जवाबदेही अलबर्ट पर आ गिरी।*

चार्ल्स अलबर्ट भी पहले उदार-मतों और सुधार-वादियोंका हिमायती था। परन्तु पीछे परिस्थिति उलट गई। तब उसे भी अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तिको ताकमें रखकर राजपरिवारके अन्य प्रभाव-शाली पुरुषोंके अनुदार अर्थात् प्रतिगामी मतोंका अनुकरण करना पड़ा। इस कारण कावूरसे उसकी पटी नहीं। शीघ्र ही कावूरके हृदयमें उसके प्रति बुरा भाव उत्पन्न हो गया और वह अन्त तक कायम रहा। १८२६ ईसवीमें कावूरकी सैनिक शिक्षा समाप्त हुई। अन्तिम परीक्षामें वह सर्वप्रथम पास हुआ। तब सैनिक विभागकी इंजनियरिंग शाखामें लेफ्टनण्टके पद पर उसकी नियुक्ति हुई। यह नौकरी स्वीकार कर चुकने पर उसने अँगरेजी सीखना आरम्भ किया। इस समयका लिखा हुआ उसका एक पत्र विद्यमान है। उसमें उसने इतिहास और प्रचलित भाषाके अध्ययनकी आवश्यकता दिखलाई है। "एक हि साधे सब सधे सब साधे सब जाय" के अनुसार उसने यह बात भी उस पत्रमें लिखी है कि बहुत विषयोंके अध्ययनमें कालक्षेप और बुद्धि व्यय करनेकी अपेक्षा अपने मनोनीत एक ही दो

---

* टयूरिनके सैनिक विद्या-पीठमें जो सरदार-जादे होते थे उनमेंसे राज-परिवारके खिदमतगार नियत हुआ करते थे और जब तक उनकी शिक्षा पूरी न हो जाती वे राजाके खर्चसे विद्यापीठमें रहते थे।

विषयोंके अध्ययनमें अपनी शक्तिका प्रयोग करना श्रेयस्कर है। ज्यों ज्यों वह बड़ा होने लगा, अपने प्रागतिक विचारोंके कारण अपने घरके लोगों और आप्त इष्टोंका कुछ अप्रीतिभाजन होने लगा। चार्ल्स अलबर्टने कावूरके एक रिश्तेदारको पत्र लिखा था। उसमें उसने लिखा कि—"यह है तो होनहार और भला आदमी, परन्तु है असन्तुष्ट वृत्ति। अतएव सम्भव है, वर्तमान समयमें यह त्रास-दायक और भविष्यमें अहित-कारक हो।" कावूरने सैनिक विद्यालयमें रहते हुए एक निबन्ध लिखा था। उसमें उसने चार्ल्स अलबर्ट (पाठक जानते ही हैं, यह पहले उदार-मतवादी था) के पुराने मित्र संटोरी डी संट रोजाके उदार राजनैतिक मतोंका अनुवाद किया था। संटो-रीने एक पुस्तकमें अपनी यह उत्कट इच्छा प्रकट की थी कि अमे-रिकाको स्वतंत्रता प्राप्त करा देनेवाले वाशिंगटनका अवतार इटलीमें हो। उसका एक वचन भी कावूरने अपने लेखमें उद्धृत किया था। उस निबन्धके कारण पूर्वोक्त विद्यापीठके अधिकारियोंमें बड़ी हलचल मच गई। परन्तु शोर-गुल न मचाकर उन्होंने कावूरको खूब डाँट डपट दिया और निबन्ध छिपाकर रख दिया। तथापि इससे उसके स्वभावमें फर्क न पड़ा। हाँ, तबसे वह अपने मतोंके प्रतिपादनमें यथा-सम्भव सावधान रहने लगा। उसके हृदयमें स्वदेशके सम्बन्धमें कौनसे विचार लहरें मार रहे थे, इसका दिग्दर्शन उसके एक दो खानगी पत्रोंसे किया जा सकता है। ये पत्र उसने उन्हीं दिनों लिखे थे। २१ वर्षकी उम्रमें लिखे अपने एक पत्रमें वह लिखता है—

" इटालियन लोगोंका पुनरुद्धार करना आवश्यक है। स्पेनिश और आस्ट्रियन लोगोंके तिरस्करणीय और अन्यायपूर्ण शासनके कारण

उनके सत्त्वका जो अधःपात हुआ, फ्रेञ्चोंके शासनसे उसमें सजीवता आगई है और देशके उत्साही युवक इटलीके एकराष्ट्रीयत्वके लिए लालायित हैं। परन्तु पूर्वस्थितिके दबावकी परवा न करके—उसे दूर करके—यदि इटली नूतन राष्ट्रकी सृष्टि करना चाहता हो तो उसे दीर्घ प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए इस बातकी भी आवश्यकता है कि इटालियन लोगोंका शील सब तरहके स्वार्थत्यागोंकी भट्टीमें तपाकर जाँच लिया जाय।"

इस पत्रसे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि ठेठ युवावस्थासे ही उसका यह विचार था कि इटलीके छोटे छोटे राज्योंको नष्ट करके उनका एक राष्ट्र बनाया जाय। कावूरने यह पत्र १८३१ ईसवीमें आल्प्स-पर्वतके समीपस्थ वार्ड नामके किलेसे काउंट डी सेलॉंको लिखा था। कावूरकी नियुक्ति इस एकान्त स्थानमें, उसके पिताकी इच्छाके अनुसार, चार्ल्स अलबर्टने (उस समय यह पीडमाण्टका राजा होगया था) जान बूझकर की थी; इस हेतुसे कि वहाँ रहनेसे उसके प्रागतिक विचारोंका विकास न होने पावे। परन्तु उसके पिताका यह उद्देश सफल न हुआ। इस किलेमें सैनिक इंजिनियरिंग-विभागमें नौकरी करते हुए कावूरको जो अवकाश और निश्चिन्तता प्राप्त हुई उससे उसने बड़ा काम लिया। इस अवधिमें उसने बेन्थम और एडन स्मिथ इन अँगरेजी ग्रन्थकारोंके राजनीति और अर्थशास्त्र पर लिखे ग्रन्थोंका अध्ययन किया। अँगरेजी राजनीतिका भी अध्ययन वह करने लगा। सुदैव-वश वहाँ एक अँगरेज चितेरेसे उसकी जान पहचान होगई। इस कारण अँगरेजी राजनीति और वहाँकी समाजस्थितिके सम्बन्धमें दिल खोल कर चर्चा करनेका मौका उसे घर बैठे मिल गया। इंग्लैंडमें इस समय अर्थात् १८३२ ईसवीमें, पहले रिफार्म बिलकी अर्थात् पार्लियामेंट सभाके सदस्य

चुननेके लिए सामान्य जनताको मतके अधिकार देनेकी हलचल हो रही थी। तद्विषयक सारी जानकारी प्राप्त करलेनेमें वह इस समय निमग्न था। अँगरेजोंकी सामाजिक और राजनैतिक अवस्था तथा उनकी सामान्य मनःप्रवृति अर्थात् स्वभाव उसे बहुत पसन्द था। उनके विषयमें जो अनुकूल विचार उसके हृदयमें इस समय पैठ गये वे अन्त तक वैसे ही कायम रहे। और साधारणतः उसका यह खयाल हो गया था कि मेरे विचार और आकांक्षा खुले दिलसे प्रकट करनेका स्थान यदि कोई है तो वह अँगरेजी मनुष्यका अन्तःकरण है। इसका फल यह हुआ कि जब जब किसी अँगरेजसे उसका साबका पड़ता तब तब वह उससे खुले दिलसे मिलता और व्यवहार करता था। उसकी यह धारणा हो गई थी कि तत्कालीन इटालियन स्वजनोंकी अपेक्षा मेरा मनोगत जाननेकी पात्रता अँगरेजोंमें अधिक है। कुछ अंशोंमें उसकी यह भावना ठीक भी थी। क्योंकि पीडमाण्टमें उसके दरजेके जितने भी लोग थे प्रायः सबके विचार अनुदार और अनियन्त्रित सत्ताके पोषक थे, तथा पीडमाण्टहीको अपना सारा संसार समझते थे। वे कूप-मण्डूक थे। वहाँके मध्यम दलमें प्रागतिक विचारवाले युवकोंका एक दल तैयार हो अवश्य गया था; परन्तु उसका उद्देश सिर्फ पीडमाण्टका ही सुधार करना था। सारे इटली देशमें एकता प्रस्थापित करनेकी बात उसको पसन्द न थी। यह बात उसे सम्भव भी न मालूम होती थी।* कावूरके विचार इससे भिन्न थे। उसके जिस पत्रका अनुवाद पहले दिया जा चुका है उससे यह बात सिद्ध होती है। स्वदेश-बन्धुओंके पूर्वोक्त विचारोंको

* इस युवक पुरोगामी (सुधारवादी) पक्षके अतिरिक्त क्रान्तिकारक आन्दोलन करनेवाला मेजिनीका पक्ष भी था। परन्तु उसके विचार और मार्ग कावूरको पसन्द न थे।

देखकर कावूरका अन्तःकरण बार बार उद्विग्न हो उठता था। इस उद्वि-ग्नताके सूचक उसके कुछ उद्गार उसके एक खानगी पत्रमें पाये जाते हैं। यह पत्र उसने १८३२ ईसवीमें, जब वह २२ सालका था, लिखा था। उसमें वह लिखता है—" एक समय ऐसा था जब यह विचार मेरे हृदयमें सहज ही पैदा होता था कि मेरे लिए किसी दिन इटली राज्यका पहला प्रधान मन्त्री होना बिलकुल स्वाभाविक है।" इससे पाठकोंको कावूरकी महत्त्वाकांक्षा और उसके उद्देशका अच्छा परिचय मिल सकता है। उसके भावी जीवनमें यह महत्त्वाकांक्षा पूर्ण भी हुई है।

कावूरको, यद्यपि उसके पिताकी इच्छाके अनुसार, सैनिक शिक्षा दी गई थी, तथापि स्वयं उसकी रुचि इस पेशेकी ओर न थी। उसका झुकाव तो राजनीतिकी ओर ही विशेष था। इस विषयका शास्त्रीय अध्ययन भी वह करने लगा था। जब परिस्थितिका पूरा निरीक्षण वह कर चुका, उसने अपने स्वीकृत कार्य्यकी पूर्व तैयारी—पेशबन्दी—करनेकी ठानी और तुरन्त अपनी जगहका इस्तीफा दे दिया। (नवम्बर १८३१ ईसवी।) तब उसका पिता डरा कि कावूर कोई आन्दोलन न खड़ा कर दे। इसके लिए उसने तजवीज सोची। उसकी कुछ पैतृक सम्पत्ति—जमीन—लेरीमें थी। उसीके पास कुछ और जायदाद उसने खरीद ली और उसके प्रबन्धका भार कावूर पर छोड़ दिया। इसपर कावूरकी माताने ऐतराज किया कि स्वतन्त्रता-पूर्वक जायदादका प्रबन्ध कावूरके सुपुर्द करनेसे वह आलसी, दीर्घसूत्री और फजूलखर्च हो जायगा। परन्तु उसके पिताने कहा कि—नहीं, पचीसीके आसपास अगर मनुष्यको भला-बुरा जाननेकी लियाकत न आई तो फिर कभी नहीं आ सकती। बात कावूरकी माताको पट गई। अस्तु। इन्हीं दिनों पीडमाण्टके

राजा चार्ल्स अल्बर्टने कावूरके पितासे अनुरोध, नहीं आग्रह, किया कि आप टयूरिनमें विकारिओ अर्थात् पोलिस विभागके प्रधान अधिकारीका पद स्वीकार कर लीजिए। उसने राजाकी बात मान ली। तब वह लेरीवाली अपनी जायदादका इन्तजाम और देख भाल करनेमें असमर्थ हो गया। इधर घरके और लोगोंने भी उस पर विशेष ध्यान न दिया। कुछ दिन इसी तरह अँधाधुन्धीमें बीते। इससे बड़ा नुकसान हुआ। तब कावूरने जायदाद अपने अधिकारमें लानेकी ठानी; क्योंकि कानूनके अनुसार इस सम्पत्तिका वारिस उसका जेठा भाई था। इसके लिए उसने उसकी तथा अपने पिताकी अनुमति प्राप्त की। लेरीवाली यह जायदाद बहुत बड़ी थी। उसे अपने अधीन करते ही वह बहुत बड़ा जमींदार बन गया। सैनिक विभागकी नौकरी छोड़नेके दिन तक खेतीके विषयमें उसे 'काला अक्षर भैंसके बराबर' था। परन्तु कामका भार उठाते ही उसने कृषि-शास्त्रके अध्ययनका सपाटा चलाया। थोड़े ही समयमें वह उस विषयका इतना ज्ञाता होगया कि जियादहसे जियादह पैदावार करने लगा। कृषि सुधारसे सम्बन्ध रखनेवाले नयेसे नये वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करनेकी उसने चेष्टा की। अपनी जमीनमें अपने प्राप्त ज्ञानका प्रयोग वह बार बार किया करता। इन प्रयोगोंके द्वारा वह स्थानीय अपढ़ और अज्ञान खेतिहरोंको भी कृषि-शास्त्रकी शिक्षा दिया करता। कावूरकी महत्त्वाकांक्षा क्या थी, यह पहले ही कहा जा चुका है। उसके सफल होने योग्य अनुकूल परिस्थिति अभी तक प्राप्त न हुई थी। मेजिनीके आन्दोलनके कारण देशमें एक ओर विद्रोह और विप्लव तथा दूसरी ओर अधिकारियोंकी धरपकड़ नीतिका युद्ध हो रहा था। मेजिनी-पक्षके लोगोंकी आकांक्षाओंके साथ कावूरकी सहानुभूति तो थी, पर

उनकी सफलताके लिए जिन उपायोंसे वे काम लिया चाहते थे वे उसे बिलकुल पसन्द न थे। दोनों पक्षोंके बलाबल पर विचार करके उसने यह निर्णय कर रक्खा था कि गुप्त मण्डलियोंके गुप्त षड्यंत्रों-द्वारा इटलीका पुनरुज्जीवन नहीं हो सकता। उसकी यह धारणा थी कि पीडमाण्टके सदृश स्वतन्त्र राज्यकी सहायतासे ही यह काम बन सकता है। परन्तु देशमें जो अनिष्ट गुप्त आन्दोलन हो रहा था, उसका डर दूर हुए बिना कावूरके साथ पीडमाण्टके अधिकारि-मण्डलकी सहानुभूति होना असम्भव था। इधर कावूरको भी यह अनुचित माळूम होता था कि जब तक अधिकारियोंकी धरपकड़ नीति कायम है, उनसे सम्बन्ध रक्खा जाय। ऐसे दुहेरी पेंचमें आजानेके कारण उसने निश्चय किया कि जब तक यह दशा दूर न होगी मैं राजनैतिक मामलोंमें प्रत्यक्षतः न पडूँगा; पर उसे भावी उत्कर्ष पर पूर्ण विश्वास अवश्य था। अस्तु। कोई १५ साल उसे अपनी लेरीवाली जायदाद पर बिताने पड़े। परन्तु ये १५ वर्ष उसने निकम्मे बनकर आलस्यमें, एशो आराममें, फजूल नहीं गँवाये। बल्कि इटलीको एक राष्ट्र बनाकर उसका पहला प्रधान मन्त्री होनेकी जो उसकी सात्विक महत्त्वाकांक्षा थी उसीको पूरा करनेके उद्योगमें उसने अपना समय लगाया। इसका सविस्तर वर्णन आगेके प्रकरणमें किया ही जायगा। यहाँ तो सिर्फ लेरीमें उसके जीवनक्रमका तथा तद्विषयक एक दो छोटी बड़ी बातोंका ही उल्लेख किया जायगा।

लेरीमें वह बहुत सादगीसे रहता था। भोर ही ४ बजे वह सोकर उठता। खुद ही अपने जानवरोंकी देख-रेख करता, फिर खेतों पर दौरा करता और मजदूरों तथा नौकरोंसे उनके जिम्मेका काम करवाता। कभी कभी खुद भी काम करता। निजका तहसील वसूल वह आप ही

करता। शामको अपने कितने ही यार दोस्तोंको साथ लेकर वह भोजन करता। फिर सर्व साधारणमें जाकर उनसे खुले दिलसे कुछ देर हँसी-मजाक और गपशप करता। हर किसी दरजेके लोगोंमें हिलमिल जाने-की कलामें वह खूब प्रवीण था। इस कारण वह लेरी तथा आसपासके गाँव-खेड़ोंके लोगोंका बड़ा स्नेह-पात्र बन गया था। अपने नौकरों-चाकरोंके साथ वह बड़ी दया और ममताका बरताब करता। इससे उसे विश्वासपात्र और ईमानदार नौकरोंकी कमी न पड़ती थी। वे तथा आस-पासके किसान उसे अपने मा-बापकी नाईं समझते थे। काबूरका स्वभाव बड़ा गम्भीर था। उसकी मनोरचना काव्य अथवा अद्भुत रस (Romance) में रमण करनेवाली न थी। वह आलोचना-गवेषणा-प्रिय थी। अर्थात् रसिकता और प्रेम (प्रणयि-प्रेम) इन भावोंका उसमें प्रायः अभाव था। काव्यग्रन्थोंमें अकेले शेक्सपिअरके ग्रन्थ उसे प्रिय थे। क्योंकि उनमें मानवचरितका तथा भिन्न भिन्न चित्तवृत्तिवाले मनुष्यों-के भिन्न भिन्न समय पर होनेवाले व्यवहारोंका सूक्ष्म ज्ञान प्रकट किया गया है। और विशेष करके, वही उसे चाहिए भी था। रसिकताके अभावके कारण लेरीके सृष्टि-सौन्दर्यके आनन्दका अनुभव उसके हिस्सेमें न आता था। तथापि सादी रहन-सहन, शान्ति, अकृत्रिमता और व्यवहार-चतुरताकी जो शिक्षा उससे मिलती थी उसे वह बड़े महत्त्व-की मानता था।

काबूरका जेठा भाई गस्टाव धर्म्मशास्त्र और तत्त्व-ज्ञानका बड़ा भारी पण्डित था। काबूरने अपने भावी जीवनके अधिकांश दिन इसीके घर पर बिताये। अखीर तक दोनों एक दूसरेको बहुत चाहते रहे। परन्तु युवावस्थामें एक बार, एक जरासी बातके लिए, दोनोंमें झगड़ा भी होगया था। तब गस्टावका मिजाज बड़ा तेज था। उसने काबूरके

सिर पर एक कुरसी फेंक मारी; परन्तु कावूरने उस मौके पर विलक्षण आत्मसंयमका परिचय दिया।

कावूर पहले पहल जिनोआमें सैनिक इंजिनियर विभागमें नियुक्त हुआ था। वहाँ रहते हुए स्थानीय स्वास्थ्य-रक्षा-विभागके अध्यक्ष-की पत्नीका उससे बड़ा स्नेह हो गया। उसके प्रेम और ममताकी सीमा न रही। वह बड़ी सुन्दरी और सुसंस्कृता थी। तिस पर भी वह कावूरकी पूर्ण भक्त बन गई थी। कावूरकी भावी उच्च योग्यताकी कल्पना करके या और किसी कारणसे, वह उसे इतना चाहती थी कि उसके लिए मन ही मन सूखने लगी। कोई १० वर्षों तक उसका वियोग–दुःख भोगकर अन्तमें वह मौतका शिकार बन गई। उसके राजनैतिक विचार लोकसत्ताक शासन प्रथाके अनुकूल थे। कावूर पूर्ण लोकसत्तावादी न था; वह प्रातिनिधिक और नियन्त्रित शासन-पद्धतिका प्रेमी था। तथापि शीघ्र ही उन दोनोंमें मैत्री हो गई थी। कावूर भी उसे चाहता था–उस पर अनुरक्त था; पर उसके साथ विवाह नहीं कर सकता था। अतएव उसकी दशा पर तरस खानेके सिवा कावूर और कुछ न कर सका। उसके सारे जीवनमें प्रेम-सम्बन्धिनी यही एक घटना हुई। इसके बाद तो वह स्त्रियोंसे बहुत बचकर चलता था, सँभल कर उनसे बरताव करता था। अविवाहित रहकर उसने अपनी सारी जिन्दगी इटलीके पुनरुद्धारके लिए खर्च करनेका निश्चय किया और मृत्युके दिन तक अपनी प्रतिज्ञा निभाई। पूर्वोक्त रमणीके सहवाससे उसके उत्तेजक विचारोंका प्रभाव कावूरके हृदय पर बहुत पड़ता था। और फ्रान्सके क्रान्ति-कारक आन्दोलनोंकी खबरें भी उसे बारबार सुनाई दिया करती थीं। इन कारणोंसे उसके भी मुँहसे एक बार राजनैतिक विषयमें कुछ

उच्छृंखल बातें निकल गई थीं। तबसे उसकी चाल-ढाल पर खुफिया पुलिसकी नजर रहने लगी। वह खुद भी इस बातको जान गया था, और इस कारण आगे वह फूँक फूँक कर पाँव रखता। उसके बादके व्यवहार तथा सम्भाषणमें बहुत ही सावधानी दिखाई देने लगी।

कावूर जब जिनोआमें था मेजिनी भी वहीं था। दोनोंके हृदयोंमें एक ही प्रकारके–इटलीके पुनरुज्जीवनके–विचार तरङ्गित हो रहे थे। परन्तु दोनोंकी मनोवृत्तियोंकी रचना एक दूसरेसे भिन्न थी। इस कारण दोनोंका परिचय होना तो दूर रहा, कभी भेट तक न हो पाई। एक इतिहासवेत्ताका अभिप्राय है कि यदि उनकी मुलाकात हो जाती तो एक दूसरेके कितने ही हेतु-विपर्य्यास (Misunderstandings) या गलतफहमियाँ, दूर हो जातीं और मेजिनीकी धींगा-धींगी भी कम हो जाती। परन्तु ऐसा अवसर उपस्थित न हुआ। इससे कावूरको अन्त तक मेजिनीकी नीतिका—कमसे कम सार्वजनिक व्याख्यानोंमें तो—निषेध ही करते रहना पड़ा। इससे लोग कभी कभी कावूर पर अप्रसन्न भी होजाते थे। परंतु विकारकी अपेक्षा विचारकी ओर उसकी प्रवृत्ति सदैव अधिक रहती थी। उसका उद्देश भी शुद्ध और निरपेक्ष था। अतएव वह लोक-प्रियताके सदृश कुछ अंशमें चञ्चल वस्तुकी अधिक कीमत न करता था। अपनी ही कार्यक्षमताके बल पर वह कार्य्य किया करता था और उसमें सफलता लाभ भी करता। उसका ध्येय निश्चित था। जिन उपायोंसे उसकी सिद्धि हो सकती थी, निडर होकर उनका उपयोग करनेमें वह कभी पीछे न हटता था।

३—यात्रा और पूर्व तैयारी।

लेरीकी अपनी जमीन जायदादकी देख-भाल इत्यादिमें कावूरको १५ साल बिताने पड़े, यह पहले ही कहा गया है। इस अवधिमें उसने राजनीतिका सूक्ष्म अध्ययन किया और फ्रान्स तथा इंग्लैंडमें बार बार जाकर वहाँकी समाज-स्थिति और राजनैतिक संस्थाओंका भी परिशीलन किया। इस विषय पर वह अपने एक खानगी पत्रमें लिखता है--"मेरे विचार मेरे शीलके एक भाग हैं; उनमें कभी परिवर्तन न होगा। मेरी समझमें भावी सन्मान्य कार्यकी तैयारीका उत्तम मार्ग यही है कि स्वदेशमें मैं जिन संस्थाओंकी स्थापना करना चाहता हूँ, अन्य देशोंमें स्थापित, उसी प्रकारकी संस्थाओंका अध्ययन, पहले मैं करूँ।" और इसी उद्देशसे वह फ्रान्स तथा इंग्लैंडको जाया आया करता था। इन दोनों देशोंकी तत्कालीन शासन-प्रणाली प्रागतिक ढँगकी अर्थात् उन्नतिशील थी। इससे उसका खयाल था कि उन देशोंकी राजनैतिक संस्थाओंका निरीक्षण करना विशेष लाभदायक होगा। उसका यह खयाल अन्तमें सच भी निकला। यह बात भी उसीके एक पत्रसे प्रकट होती है।

फ्रान्समें कावूरके कितने ही रिश्तेदार थे। इससे वहाँ उच्च श्रेणीके लोगोंसे उसकी जान-पहचान होते देर न लगी। इस समय फ्रान्समें तीसरा नेपोलियन, अध्यक्षकी हैसियतसे, शासन कर रहा था। उसके शासन-कालमें फ्रान्स-देशकी अच्छी उन्नति हुई। वह समय शान्ति-सम्पन्न था। विद्या, कला और शास्त्र अर्थात् विज्ञानका वहाँ फिरसे उदय हो रहा था। फलतः पेरिस नगर अनेक प्रकारके बौद्धिक अर्थात् मानसिक उन्नतिके आन्दोलनोंका केन्द्र होगया था। इस उच्च वाता-

वरणमें—इस सुपरिस्थितिमें—कावूरने अपना बहुत समय खर्च किया। पेरिसस्थ तत्कालीन बहुतसे विद्वानों और बड़े आदमियोंसे उसका परिचय होगया। उनकी सङ्गतिमें, उसके एक पत्रसे ज्ञात होता है, उसके दिन बड़े मजेमें कटते थे।*

यहाँ रहते हुए मेडम डी किकोर्ट नामकी एक कुलीन रूसी स्त्रीसे उसका विशेष परिचय हो गया। वह बड़ी चतुर, धीर और साहसी थी। कितने ही सङ्कटोंका सामना वह कर चुकी थी। मनुष्य-स्वभावकी परख करनेमें तो वह बड़ी ही पटु थी। कावूरका बरताव और उसके कितने ही सद्गुणोंको देखकर उसके मनमें कावूरके विषयमें बहुत ही आदर-बुद्धि उत्पन्न हो गई। अर्थात् वह कावूरको इज्जतकी निगाहसे देखने लगी। कावूरके विषयमें उसने यह भविष्यत्कथन किया था कि उचित अवसर मिलने पर यह बड़ा कार्य्यक्षम पुरुष होगा। कावूरके मुखसे पीडमाण्टकी शोचनीय दशाका वर्णन जब उसने सुना तब कावूरसे कहा—नहीं, आग्रह किया कि—ऐसे देशमें अपनी विद्याबुद्धिको व्यर्थ मलिन करनेकी अपेक्षा यदि तुम पेरिसमें सदाके लिए रहो, तो तुम्हारे मानसिक गुणोंकी कद्र होगी और तुम्हारा उत्कर्ष भी होगा। इस पर कावूरने उसे जो उत्तर दिया वह विपन्न देशोंके देशभक्तोंको अपने हृत्पटलपर अङ्कित करलेने योग्य है। उसने कहा—

"मेरे माँ-बापने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मैं अपना घरबार छोड़कर उनकी सेवासे वञ्चित रहूँ? बुढ़ापेमें उनका त्याग करनेकी अपेक्षा

* फ्रेञ्च लोगोंका जिक्र करते हुए कावूर कहता है—"फ्रेञ्च लोग सदा प्रसन्नवदन और उल्लसित देख पड़ते हैं। यह उनका विशेष गुण है। विज्ञान और साहित्य, गाम्भीर्य और प्रेम Substance and form, इनका हृदयङ्गम सङ्गम पेरिसके ही घरोंमें दिखाई देता है, और कहीं नहीं।"

उनके मृत्युदिन तक उनके पास रहना ही मेरा परम कर्तव्य है। पेरिसमें रहकर मैं क्या करूँगा ? इटलीके कितने ही लोग अपना देश छोड़कर आजकल अन्य देशोंमें जा बसे हैं। बताइए, उन्होंने कौनसा पुरुषार्थ कर दिखाया है ? हमारा देश दुर्दशाग्रस्त है। इसलिए वहाँसे भागकर अन्यत्र चले जानेसे कोई भी विभव-वैजयन्ती नहीं प्राप्त कर सकता। और चाहे यह सम्भव भी हो, पर मैं तो इसके लिए कदापि तैयार न हूँगा। मेरा देश चाहे सुखी हो अथवा दुखी, अपना सारा जीवन मैं उसीको अर्पण करूँगा। यह विश्वास हो जानेपर भी कि और कहीं जानेसे मेरा भाग्योदय होगा, स्वदेशके प्रति अकृतज्ञ न हूँगा—उसके साथ बेईमानी न करूँगा।" इस पत्रसे उसका निस्सीम स्वदेश-प्रेम तो प्रकट होता ही है; अपने मातापिता पर उसका पूज्य भाव भी स्पष्ट दर्शित होता है। अपने प्रागतिक अर्थात् उन्नति-शील विचारोंके कारण वह अपने मातापिताको प्रिय न था। कौटुम्बिक सुख उसे साधारण ही प्राप्त था। तिस पर भी अपने मातापिताको वह इतनी आदरकी दृष्टिसे देखता था, यह बात विशेष रूपसे याद रखने लायक है। अस्तु। कावूर जब पेरिसमें था तब टाकवेलकी 'डिमाक्रसी इन अमेरिका' नामकी प्रसिद्ध पुस्तक प्रकाशित हुई। इस पुस्तकके बदौलत लेखककी सारे योरपमें ख्याति हुई। कावूरने भी उसे पढ़ा। यद्यपि उससे उसने कोई नई बात न सीखी, तथापि उसने अपने कितने ही विचारोंका सुसम्बद्ध प्रतिपादन उसमें देखा। इससे उसे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। तत्कालीन मानव-समाजकी लोकसत्ताक शासनपद्धतिकी ओर झुकती हुई प्रवृत्ति तथा राजसत्ता और धर्म्म-सत्ताको एक दूसरेसे अलिप्त रखनेकी ओर उनका झुकाव—इन विषयोंके सिद्धान्त कावूरके मस्तिष्कमें निर्णीत हो रहे थे। पूर्वोक्त पुस्तकमें उन्हींका उद्घाटन उसे मिला। पेरिसकी विद्वन्मण्डलीमें सेंट

ब्युवे और कुसिनसे उसकी मित्रता हो गई थी। रूपर, कोलार्ड, बिक्जो, गुजो, जुल्स, सिमां, मिचिलेट, ओजानम, क्विनेट और पोलिश कवि अडेम मिकेविक्ज, इत्यादि पण्डिताग्रणियोंसे भी उसका परिचय हो गया था। वह उनके व्याख्यान सुनने भी जाया करता। रेचेल नामकी एक तत्कालीन प्रख्यात नटीको भी वह बहुत चाहने लगा था। कावूरकी चित्त-वृत्ति ऐसी न थी जो काव्य-नाटकादिमें रममाण हो। तथापि रेचेलके अत्युत्तम कला-कौशलको देखकर वह उस पर बहुत लुब्ध हो-गया था। किसी भी वस्तुके साधारण गुणको देखकर वह कभी सन्तुष्ट न होता था। उसका ध्यान उसके अलौकिक गुण—प्रतिभा—पर ही रहता था। यह उसे जहाँ मिल जाता वहीं वह बड़े समाधान-पूर्वक रम रहता। "रेचेलकी नाट्य-निपुणता पहले दरजेकी थी। इसीसे वह मेरा भी चित्त आकर्षित कर सकी।" स्वयं कावूरका ही यह कथन है। पेरिसमें रहते हुए कावूरको जूआ खेलने और सट्टा करनेका चस्का लग गया था। एक बार उसे इसमें बड़ा नुकसान उठाना पड़ा। उसकी पूर्तिके लिए उसे अपने पितासे द्रव्य-याचना भी करनी पड़ी। पिताने रुपया तो भेज दिया, पर साथ ही एक सौम्य शब्दोंमें पर सख्त पत्र लिख कर उसे डाँटा-डपटा भी। पत्र पहुँचनेके पहले ही कावूर अपने किये पर लजाने और पछताने लगा था। पिताके उपदेश-पूर्ण पत्रको पाकर तो उसने इस अनिष्ट आपत्तिसे सर्वदा दूर ही रहनेका और भी दृढ़ निश्चय कर लिया। और, भविष्यमें फिर वह कभी ऐसे फन्देमें नहीं पड़ा। *

---

* इसका वर्णन काउंटेस मार्टिनेंगो सिजारेस्को नामक उसकी इटालियन चरितकर्त्रीने, उसके खानगी रोज-नामचेके आधार पर किया है। इस रोज-नामचेमें पूर्वोक्त लेखिका कहती है कि, कावूरने अपने लिए बार बार इस दुर्व्यसनका निषेध किया है और भविष्यमें ऐसा न करनेकी प्रतिज्ञा की है।

इंग्लैंडमें कावूरका कोई सगा-सम्बन्धी न था। तथापि वहाँ भी उच्च श्रेणीके प्रधान प्रधान लोगोंसे उसका परिचय शीघ्र ही हो गया। वे भी उसे चाहते थे। विलियम ब्रोकडन् नामका एक चित्रकार उसका मित्र था। वह उसे एक बार रायल जाग्रफिकल सोसाइटीके भोजमें ले गया। वहाँ सोसाइटीके मन्त्रीने अचानक कावूरके आरोग्य-चिन्तनका एक प्रस्ताव पेश किया; तब लाचार होकर कृतज्ञता प्रकट करनेके लिए कावूरको एक भाषण करना पड़ा। उसका यह पहला ही सार्वजनिक भाषण था। इस व्याख्यानका प्रभाव वहाँके लोगों पर इतना पड़ा कि लार्ड रिपनने उठकर सस्मित कहा—"परमात्मा करें, *इस भाषणसे ही कावूरके कार्यक्षम दीर्घ-जीवन क्रमका आरम्भ हो।*" अर्थात् उसे अपने अङ्गीकृत कार्य्यके करनेका मौका मिले। जान मुरे, नामी गणितज्ञ बेबेज, हालेम, टाक्वहिल, बायरन और शेरिडनकी लड़कियोंसे उसकी अच्छी जान-पहचान हो गई थी। इनके अतिरिक्त ट्रिनिटी कालेजके लाइब्रेरियन एडवर्ड रोमिलोके द्वारा डेवन पोर्ट नामके एक अँगरेज जमींदारसे भी उसकी पहचान हो गई। उस जमींदारने अपनी प्रयोग-शाला और उसके आसपासकी जमीन कुछ दिनोंके लिए कावूरके सिपुर्द कर दी, जिससे कि वह अँगरेजी कृषि-पद्धतिका ज्ञान प्राप्त कर सके। कावूरने परिश्रम करके उस प्रणालीका सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर लिया। वहाँकी भूमिगत-नालियोंकी पद्धति (Subsoil drainage) को उसने बहुत पसन्द किया। अँगरेजोंके आदर्श-प्रयोग-क्षेत्रों (खेतों) को देखकर वह सन्तुष्ट हुआ, पर वे उसे जँचे नहीं। क्योंकि ऐसे खेतोंसे छोटे खेतिहरोंको कुछ लाभ नहीं। उनमें बड़ा खर्च पड़ता है। कावूर तो ऐसे खेतोंका मजाक उड़ाया करता। वह कहा करता—इस प्रकारके सुधारेच्छुकोंको चाहिए कि खेतीमें

किये जानेवाले सुधार किसानोंके लिए किफायतशीर होंगे या नहीं और अगर हों भी तो कितने और किस रीतिसे, इसका अनुभव वे करा दें। जबतक वे ऐसा न करें उनका कथन अनुमोदनीय नहीं।

सामाजिक और आर्थिक सुधारों पर भी उसका ध्यान था। अतएव उसने इंग्लैंडके तत्कालीन नये Poor Laws (बेकारोंके कानून) का अध्ययन किया। वहाँके धुएँके कारखानों, दवाखानों और कैदखानोंका भी निरीक्षण किया। वहाँके कैदखानोंमें बन्द कैदियोंके खानपानके प्रबन्धको उसने पसन्द किया। परंतु पिसाई-का काम उसे अच्छा न लगा। उसका कहना था कि इससे कैदियोंका नैतिक-चरित्र भ्रष्ट हो सकता है। वे सदाचारी नहीं रह सकते। उसकी रायमें उपयोगी और थोड़े बहुत फायदेका काम ही कैदियोंका सच्चा सुधार कर सकता है। इस यात्रामें उसने शेक्सपिअरकी प्रसिद्ध कब्र भी देखी। अँगरेजी शासन-शास्त्रका तो उसने बड़ी श्रद्धा-पूर्वक अध्ययन किया। कुछ फ्रेञ्च और स्विस मासिक पत्रोंमें उसने इस विषय पर महत्त्वपूर्ण लेख भी लिखे। (१८४३–४६ ईसवी) जिनो-आ निवासी अपने मित्रोंकी प्रेरणासे उसने ये लेख लिखे थे। इन लेखोंके दो गुण बड़े महत्त्वपूर्ण थे—(१) स्वतंत्र-विचार-पद्धति और (२) अचूक परिपूर्ण जानकारी। इससे इंग्लैंड और फ्रान्समें उसकी प्रसिद्धि भी हुई और वहाँके लोग उसकी गिनती 'विचारशील' (Thinkers) पुरुषोंमें करने लगे। इन लेखोंमें उसने पिट और पीलके शासन-विज्ञान और राजनीतिकी मार्मिक रीतिसे आलोचना की है। कुछ स्थानों पर तो उसने पीलकी नीतिका अनुवाद भी किया है। यही नहीं, बल्कि उसने पीलके एक महत्त्व-पूर्ण कामका भविष्य

औरोंके पहले ही कथन कर दिया था। *आयर्लैंड तथा तत्कालीन भावी स्थितिका जो विवेचन उसने किया था वह अपूर्व जाना गया। इस लेखमें की गई उसकी कितनी ही सूचनायें, आगे चलकर, कार्य-रूपमें परिणत हो गईं। इन एक दो उदाहरणोंसे उसके बुद्धिसामर्थ्यका-उसकी बुद्धिमत्ताका अनुमान हो सकता है। उसने आयर्लैंडकी समस्याका विचार साम्राज्यवादी मनुष्यकी दृष्टिसे किया था। परन्तु उस समय इंग्लैंडमें साम्राज्य-वादित्वको आजके इतना महत्त्व प्राप्त न था। तथापि उसने यह अनुमान करके कि भविष्यमें उसकी महत्त्व-वृद्धि होगी, उस स्थितिका ऐसा विवेचन किया है जो दोनों देशों (इंग्लैंड और आयर्लैंड) को हितकारक हो। यह उसकी दूरदर्शिताका प्रमाण है। उसके एक चरित-लेखकका तो यह कहना है कि जिस दृष्टिसे उसने इंग्लैंड और आयर्लैंडके पारस्परिक सम्बन्धका विचार किया है उस दृष्टिसे इस विषयका विचार उसके पहले और पश्चात् आज तक किसी भी विदेशी विद्वानने नहीं किया। कावूरकी कीर्ति, इस प्रकार, विदेशोंमें बढ़ रही थी। परन्तु उसके स्वदेश पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो वहाँकी दशा बिलकुल ही खराब थी। उसे देखकर उत्साह भङ्ग हुए बिना नहीं रह सकता था। भाषण-स्वातन्त्र्य और लेखनस्वातन्त्र्यको उस

---

* वह काम है–Peel's abolition of corn Laws. इस समय कावूरने जो लेख लिखे थे उनमें विशेष प्रसिद्ध लेख ये हैं:—

(1) Thoughts on the condition of Ireland and its future.

(2) The English corn Laws.

(3) Pauperism and the official Report of the commission on the Administration of the poor Law in England.

देशमें अर्द्धचन्द्र दे दिया गया था। अन्य देशोंके पत्र-पत्रिकायें मँगानेकी भी आजादी वहाँवालोंको न थी। पेरिसका एक मामूली समाचार-पत्र कावूरकी मौसीको दरकार था। उसे मंगानेके लिए उसे जमीन-आसमान एक करना पड़ा। फ्रेञ्चराजदूतके द्वारा पीडमाण्टकी सरकारसे लिखा पढ़ी करना पड़ी, तब जाकर बड़ी कोशिशों पर कहीं उसे इजाजत मिली। रेलवे, तार, इत्यादि परिचय-वृद्धिके नवीन उन्नत साधनों तकको अपनानेके लिए पीडमाण्टके सत्ताधारी और सरदार तैयार न थे। वहाँके अधिकांश लोगोंका, विशेष करके पोपका, खयाल था कि रेलवे, तार इत्यादिके स्वरूपमें प्रकट होनेवाली शक्ति शैतानोंकीशक्ति है—(Powers of darkness)। काउंट पेटिट नामके एक लेखकने उन्हीं दिनों रेलवे पर एक पुस्तक लिखी। पीडमाण्टकी अक्लमन्द सरकारने उसे अपनी हदमें आनेसे रोक दिया। तथापि, किसी न किसी तरह, उसकी कुछ प्रतियाँ वहाँ आ ही पहुँची। एक प्रति तो स्वयं पीडमाण्टके राजा चार्ल्स अलबर्टके हाथोंमें भी जा दाखिल हुई। मूल पुस्तकमें राजनैतिक बातोंकी बू तक न थी—जिक्र तक न था। हाँ, कावूरने अपनी समालोचनामें राजनैतिक दृष्टिसे रेलवेकी जो महिमा गाई थी, उसका वर्णन अलबत्ते उसमें था। कावूरने अपने लेखमें यह लिखा था कि रेलवेकी वृद्धिसे इटलीमें नैतिक-मानसिक-एकताका मार्ग सुलभ होगा और उसके आगेकी सीढ़ी राष्ट्रीय एकताके भावका, भी प्रचार होनेमें बड़ी सहायता मिलेगी। उसने लिखा था कि—

"रेलवेके प्रचारसे स्थानीय मत्सर और सङ्कुचित विचार दूर होंगे, लोगोंके आचार-विचार अधिक उन्नत होंगे; उनकी दृष्टि और उनके मस्तिष्कका विकास होगा। इससे उनके पुनरुद्धारका काम बड़ा सुलभ

हो जायगा। देशमें प्रचलित पारस्परिक और व्यक्ति-विषयक कलह तथा राजनैतिक मत-भेद भी इसके बदौलत नष्ट हो जायगा। उनके स्थान पर सब कहीं एक राष्ट्रीयताका भाव उदय हो जायगा। यदि ऐसा हो जाय तो फिर 'इटलीकी राष्ट्रीय स्वतन्त्रताका' कार्य जो हमारा अभीष्ट है, आसानीसे सिद्ध हो जायगा।" कावूरके राजनैतिक लेखोंमें अथवा बातचीतमें 'स्वदेश'के लिए 'इटली' शब्द ही व्यवहृत होता था। ऐसे लेखोंमें पीडमाण्ट, वेनिशिया, इत्यादि प्रान्तीय भागोंका उल्लेख वह भूलकर भी न करता था। 'इटलीको एक' करके 'इटलीका राज्य स्थापन करना' ही उसकी महत्त्वाकांक्षा थी। अतएव राष्ट्रीयताके विषयमें जब कभी वह लिखता अथवा बातचीत करता तब 'इटली' शब्दका ही प्रयोग किया करता। यह ठीक भी था। अस्तु। उस समयके कितने ही इटालियन देशभक्तोंने यह आक्षेप किया कि—इटलीमें सर्वत्र रेल-वेका प्रचार हो जानेसे इटलीके गलेमें पड़ी हुई आस्ट्रियन सत्ताकी फाँसी और भी दृढ़ हो जायगी। तब कावूरने उन्हें उत्तर दिया—रेलवेके प्रचारसे अन्तस्थ ऐक्य बुद्धिमें हमें बहुत सहायता मिलेगी। यह बल प्राप्त हो जानेपर हमें आस्ट्रियासे डरनेकी कोई आवश्यकता न रह जायगी। रेलवेके आगमनसे देशी उद्योग-धन्धोंको खूब उत्तेजना मिलेगी। जर्मनीके सदृश गम्भीर और चतुर राष्ट्रसे नाता जोड़ना आसान हो जायगा। इस बुद्धिवाद अर्थात् तर्कनाके द्वारा उसने पूर्वोक्त कट्टर देशभक्तोंकी अकारण भीति और विरोध निर्मूल करनेका प्रयत्न किया। पूर्वोक्त लेखमें उसने आल्प्स-पर्वतको काटकर रेलवे लानेका और जर्मनीसे मित्रता करनेका भी थोड़ा बहुत जिक्र प्रसङ्गवश कर दिया था। ये दोनों योजनायें उस समय अशक्य समझी जाती थीं। 'इटलीकी एकता' भी तो

कहाँ उस समय सम्भव मानी जाती थी ? एक इटालियन तत्त्ववेत्ताने तो उस समय ढिंढोरासा पीट दिया था कि आजसे एक सदी आगे तक तो यह कभी सम्भव नहीं, तथापि कावूरके मस्तिष्कमें ये तीनों बातें प्रत्यक्ष करा देनेका सामर्थ्य सञ्चित हो रहा था । हाँ, उसके प्रकट होनेका अवसर अभी दूर था; उसके अनुकूल परिस्थिति अभी तक निर्माण न हुई थी । पर उसकी उत्पत्तिके चिह्न अलबत्ते देख पड़ने लगे थे ।

४—पन्द्रह वर्षोंमें काया-पलट ।

राज-नीतिके क्षेत्रसे प्रत्यक्षतः अलिप्त रहकर कावूरने जो १५ वर्ष बिताये उतनी अवधिमें इटलीके अधिकांश प्रान्तोंमें कितने ही उत्साह-जनक उलट-फेर अर्थात् परिवर्तन हो गये । वे दिन शान्तिके थे । औद्योगिक-आर्थिक-उन्नति झपाटेसे हो रही थी । मेजिनीके क्रान्तिकारक तत्त्वज्ञानके सिद्धान्तोंके प्रचारके कारण होनेवाले बलवे और अशान्ति अब प्रायः निर्मूल हो गई थी । उनके उन्मूलनके लिए वहाँके अधि-कारियोंने जो उग्र स्वरूप धारण किया था अब वह बहुत सौम्य हो चुका था । वहाँके भिन्न भिन्न राज्योंके उच्चवर्गीय लोगोंके हृदयोंमें अपने अपने राज्योंके भौतिक सुधार करनेकी प्रवृत्ति भी उत्पन्न हो चली थी । राजनैतिक सुधारोंके पक्षपाती भी अब मेजिनीके विचारोंको और मार्गोंको पसन्द न करते थे । अब वे यह समझने लग गये थे कि गुप्त-मण्डलियों और षड्यन्त्रोंकी अपेक्षा खुल्लमखुल्ला विधि-विहित आन्दोलन करना अधिक श्रेयस्कर है । अधिकांश एक राष्ट्रीयता-वादियोंके विचार अब

ऐसे ही थे।* इस कारण उनमें और अधिकारि-वर्गमें जो बेढब बेबनाव हो गया था अब वह भी बहुत कम हो चला था। फलता रेलवेकी वृद्धि,

* मेजिनीके उत्तेजक और मनोविकारोंको उद्दीपित करनेवाले विचारोंने इटलीके देशभक्तोंमें बड़ी जागृति की, इसमें सन्देह नहीं; परन्तु उसका राजनैतिक लक्ष्य–ध्येय–और उसकी सिद्धिके लिए तजवीज किये गये उपाय उस देशके लोगोंकी पूर्वपरम्पराके अनुसार न थे। इस कारण उसके प्रयत्न सफल न हुए। और यह बिलकुल स्वाभाविक था। अनियन्त्रित राजसत्ताके अन्यायपूर्ण शासनमें जिस राष्ट्रकी कितनी ही सदियां बीत गई हों वहाँ, विदेशियोंका राजनैतिक प्रभुत्व होते हुए भी एक दम लोक-सत्ताक शासन-शैली स्थापन करनेका हौसला करना, काल्पनिक या विचारदृष्टिसे चाहे कितना ही श्रेष्ठ हो, परन्तु व्यवहारकी दृष्टिसे उस ध्येयका सिद्ध हो जाना प्रायः असम्भव है। इटलीके राष्ट्रोद्धारक पक्षने बहुसंख्यक जनधन स्वाहा करके यह असम्भावना सिद्ध कर दिखाई है। मेजिनीके उपाय जब स्वयं उसीके देशमें विफल हुए और उसका राजनैतिक ध्येय भी अव्यवहार्य्य सिद्ध हुआ, इटलीके पुनरुज्जीवनके समय भी वह सिद्ध न हो पाया, तब भारतीयोंके लिए उस पथका पथिक होना और उस ध्येयकी धारणा करना कितना निष्प्रयोजक और कितना हानिकर है, इसके बतानेकी आवश्यकता नहीं। किसी भी देशमें कोई भी सुधार, उस देशकी प्राचीन परम्पराके अनुसार ही करना चाहिए। अपनी परिस्थिति और परम्पराका विचार न करके नवीन मोहक विदेशी संस्थाओं और आन्दोलनोंका अनुकरण यदि यहाँके लोग करेंगे तो उनके सामर्थ्यकी अकारण हानि और समयका दुर्व्यय ही होगा। हिन्दुस्तानकी पूर्व-पीठिका अर्थात् प्राचीन परम्पराका यदि विचार किया जाय तो इटलीकी तरह, यहाँ भी, लोक-सत्ताक (Republic) शासन-प्रणाली स्थापन करनेकी आकांक्षा करना पागलपनके सिवा और कुछ नहीं। यहाँकी परिस्थिति और प्राचीन परम्पराके अनुसार तो यहाँ नियन्त्रित शासन–सत्ता (Constitutional Monarchy) अथवा अधिकसे अधिक, "बलाढ्य मध्यवर्ती–सत्ता" के तन्त्रसे काम करनेवाला अनेक भागोंका एक संघ स्थापन करना उचित और सम्भव है।

उद्योगधन्धोंकी उन्नति इत्यादि बातें बड़ी सुगमतासे हो रही थीं। १८४० ईसवीसे ४६ तक इटलीके अधिकांश बड़े बड़े प्रधान भागोंमें रेलवे लाईनें बन गई थीं; और स्वयं पीडमाण्टमें भी, सब कहीं, रेलवे जारी करनेका काम शुरू हो गया था। १८४६ ईसवीमें कावूरने " Nouvelte Revue " नामके एक मासिक पत्रमें, एक लेख छपाया। उसमें उसने यह दिखलाया था कि इस रेलवेके बदौलत कौन कौनसे महत्त्वके लाभ होंगे। वह कहता है—

"परिचय-वृद्धिका यह सुलभ साधन है। इसकी सिद्धिसे—प्राप्तिसे—हर तरहके आन्दोलनोंको विशेष उत्तेजना मिलेगी। आज तक एक भागके लोग दूसरे प्रान्तके लोगोंको विदेशी—गैर समझते हैं। अब वे उन्हें अपना समझने लगेंगे। वे परस्पर एक दूसरेसे बार बार हिल-मिल सकेंगे। उनके हृदयकी विकल्पना, पारस्परिक मत्सर, और क्षुद्र भाव नष्ट करनेमें ये लोहमार्ग खूब काम देंगे। * * * * हमारी यह उत्कट इच्छा है कि ऐसा हो। यह हो जाय तो मानों हमने इटालियन स्वतन्त्रताके लिए एक प्रकारका विजय प्राप्त किया।" इत्यादि।

इस तरह, रेलवे और औद्योगिक उन्नतिके कारण, मध्यम दलके लोगोंकी दशा बहुत सुधर गई। सम्पत्ति-वृद्धिके साथ ही साथ वहाँ विद्या और कलाकी भी अभिवृद्धि होने लगी। राजनैतिक चर्चा करनेकी सुविधा यद्यपि अभी न हुई थी तथापि अन्य विषयोंके साहित्यकी सृष्टिके लिए सरकार लोगोंको उत्साहित करने लगी थी। लोगोंकी भी पुस्तक-पाठकी लालसा तीव्र हो रही थी। कितने ही सुन्दर और सचित्र साहित्यिक मासिकपत्र भी निकलने लगे थे। मासिकपत्रोंमें प्रतिभा-सम्पन्न लेखक बीच बीचमें राष्ट्रीयताके भाव जागृत करनेवाले गम्भीर विचार प्रदर्शित किया करते थे। लोग भी

उनमेंसे इष्टार्थ ग्रहण करनेके आदी होते जाते थे। फलतः जनतामें राष्ट्रीय एकताके भाव धीरे धीरे वृद्धि पा रहे थे। १८४० ईसवीसे पोप-शासित राज्योंको छोड़कर अन्य सब राज्योंके प्रधान नगरोंमें हरसाल शास्त्रीय अर्थात् वैज्ञानिक और औद्योगिक सभायें होने लगीं। इससे राष्ट्रीय ऐक्यके संवर्द्धनमें बड़ी मदद मिलने लगी। इन परिषदोंके बदौलत देशके अधिकांश विद्वानों और कार्यक्षम पुरुषोंको सम्मिलन और विचार-विनिमयका अवसर मिला करता। १८४३—४६ ईसवीके लगभग सबके मस्तिष्कोंमें राजनैतिक सुधारके विचार उमड़ रहे थे। उस समय मेजिनीके ही सदृश एक प्रतिभा-पूर्ण लेखक उत्पन्न हो गया था। उसका नाम था—गोबर्टी। वह पीडमाण्ट-राज्यका निवासी था। १८३३ ईसवीमें भागकर वह ब्रुसेल्समें जा बसा। १८४३ ईसवीमें उसने एक पुस्तक "Il Primato morale ecivile degli Italiani" लिखी। उसमें उसने इटलीका राजनैतिक सुधार, वहाँकी पूर्व-परम्पराके अनुसार, किस तरह किया जा सकता है, इस विषयकी सविस्तर चर्चा की थी। उसने प्रधानतः यह प्रतिपादन किया था कि "पोपकी अधिसत्ताके अधीन इटलीके समस्त राज्योंका सङ्घ (Federation) निर्माण किया जाय। इससे यह देश राजनैतिक दृष्टिसे बलिष्ठ हो जायगा और राजनैतिक सुधारोंका मार्ग अधिक सुगम हो जायगा। इस पुस्तककी विचार-सरणि सौम्य (Moderate) थी। अतएव इटलीमें उसके प्रवेशका निषेध नहीं किया गया। उसे बहुतोंने पढ़ा। उन्हें उसके विचार पसन्द भी आये। इस पुस्तकमें पोपका प्रभुत्व स्वीकार करनेकी तथा अन्य समस्त राज्योंकी अन्तः-स्वतंत्रता कायम रखनेकी सलाह दी गई थी। अतएव वह किसी भी राज्यके अधिकारियोंके रोषकी पात्र न थी और इसी

लिए उसके प्रचारमें किसीने बाधा भी नहीं डाली। उसके विचारोंके अनुसार राजनैतिक उन्नति करनेकी इच्छासे शीघ्र ही वहाँ एक 'सौम्य राजनैतिक पक्ष' निर्माण हुआ। वह खुल्लमखुल्ला विधि-विहित राजनैतिक आन्दोलन करने लगा। राष्ट्रीय ऐक्यकी वृद्धिके लिए मेजिनी और गोबर्टी दोनों एकही से साचिन्त और एक ही से आतुर थे। परन्तु राजनैतिक सुधारके अन्तिम साध्य और उसे सिद्ध करनेके उपायोंमें दोनोंका तीव्र मतभेद था। गोबर्टी वर्तमान स्थितिको कायम रखकर भावी स्थितिकी रचना करना चाहता था। अतएव उसके विचार व्यवहार्य्य और सम्भवनीय थे। परन्तु, पक्षान्तरमें मेजिनी प्रचलित शासन-संस्थाओंका निर्मूलन करके उनके स्थान पर ऐसी नवीन शासन-संस्था स्थापन करना चाहता था जो देशकी पूर्व-परम्पराके अनुकूल न थी, जिसका अनुभव उस देशकी प्राचीन-परम्पराको न था। कहना नहीं होगा, मेजिनीका यह प्रयत्न अव्यवहार्य और अत्यन्त दुर्घट था। गोबर्टी प्रकट विधि-विहित आन्दोलनका पुरस्कर्ता था और मेजिनी गुप्त और क्रान्तिकारक आन्दोलनका पृष्ठपोषक था। इन दोनों विचार-शील तत्त्वज्ञोंमें यही बड़ा भारी भेद था। दोनों ही प्रतिभा-सम्पन्न लेखक थे। अतएव दोनोंके अनुयायियोंकी संख्या बहुत थी। तथापि अब लोगोंका झुकाव गोबर्टीके सौम्य दलकी ओर विशेष होता जा रहा था; क्योंकि अब लोग समझ गये थे कि मेजिनीके उपाय और साधन कितने अप्रयोजक और कितने निष्फल हैं। गोबर्टीके दलका उद्देश था—पोपकी अधिसत्ताके अधीन इटलीकी राष्ट्रीय एकता करना। अतएव उसका नाम पड़ा—"New Guelfs" "Guelf" के माने होते हैं सम्राट्के विरुद्ध पोप-पक्षकी पुष्टि करनेवाला सभासद।

गोबर्टीकी पूर्वोक्त पुस्तक प्रकाशित हो जानेके बाद, शीघ्र ही, बाल्बो नामके दूसरे एक पीडमाण्ट-वासी लेखकने इसी विषयपर एक

पुस्तक लिखी। उसमें उसने गोबर्टीके इस विचारका कि पोपकी अधिसत्ताके अधीन राष्ट्रीय एकता की जाय, अभिनन्दन किया। परन्तु एक बात पर उसने बड़ा ही जोर दिया। उसने लिखा कि इटलीमें यदि राष्ट्रीय एकता स्थापन करनी हो तो पहले आस्ट्रियाका प्रभुत्व उस परसे हटाइए। यह विचार भी लोगोंको पसन्द हुआ। गोबर्टीका यह विचार था तो उत्तम और कुछ अंशमें योग्य, परन्तु उस समय उसका व्यवहारमें लाया जाना बड़ा दुष्कर था। क्योंकि उस समय जो पुरुष पोपकी गद्दी पर विराजमान था वह अनियन्त्रित और एकाधीन सत्ताका कट्टर भक्त था। देशके भौतिक सुधारोंके विषयमें भी वह प्रतिगामी शासननीतिसे काम लेता था। राज्यका शासन-प्रबन्ध अच्छा न था और वह था भी अन्यायपूर्ण।* इस दशामें पुरोगामी पक्षकी इच्छाके अनुसार पोपकी अधिसत्ताके अधीन इटालियन राष्ट्रकी तैयारी-की बुनियाद डालना प्रायः असम्भव था। तथापि पुरोगामियोंने अपना प्रयत्न न छोड़ा, यह देखकर पोप उन्हें हर तरहसे सताने लगा। पर

---

* अँगरेज इतिहासलेखक, मेकालेने इस दशाका चित्र, अपने अनुभवसे इस प्रकार अङ्कित किया है--

"The states of the Pope are, I suppose, the worst governed in the civilized world and in the imbecility of the Police, the venality of the public servants, the desolation of the country, and the wretchedness of the people, farce themselves on the observation of the most heedless traveller —Macaulay's Letters from Rome." अर्थात् पोपके अधीन राज्योंकी शासन-व्यवस्था, मेरे खयालमें जितनी खराब है उतनी किसी भी सभ्य देशकी नहीं। पुलिसकी सिधाई और बेवकूफी, सरकारी नौकरोंकी घूस-खोरी, देशका ऊजड़पन और प्रजाकी हीन दशा, ये बातें सरसरी नजरसे देखनेवाले यात्रीके भी ध्यानमें आये विना नहीं रह सकतीं।

उन्होंने अपना व्रत न छोड़ा। उनके नेता, फारिनीने, अपने पक्षकी ओरसे एक विज्ञापन प्रकट किया, जिसमें उसने अपने पक्षकी माँगोंका उल्लेख किया था। उसका सारांश सुनिए—

(१) राजनैतिक कैदियोंको बिलकुल माफी दी जाय, अर्थात् वे छोड़ दिये जायँ।

(२) स्वदेशके दीवानी और फौजदारी कानून योरपके अन्य उन्नत देशोंके कानूनकी टक्करके बनाये जायँ।

(३) म्युनिसिपल कौन्सिलके सभासदोंका चुनाव लोकमतके द्वारा हो और पोप उसे पसन्द करें।

(४) म्युनिसिपल कौन्सिल जिन तीन सभासदोंकी सिफारिश करे उनमेंसे किसी एक सभासदकी नियुक्ति पोप प्रान्तीय विचार-समितिमें करें और प्रान्तीय विचार-समिति भी जिन तीन सभासदोंकी सिफारिश करे उनमेंसे एक सभासद उच्च विचार-समितिमें नियुक्त किया जाय।

(५) इन समस्त समितियोंका आयव्यय पर कुछ अधिकार न रहे। शेष सब विषयोंमें राय या सलाह देनेका उन्हें अधिकार होना चाहिए।

(६) हर किसी मनुष्यको सब तरहकी सरकारी नौकरी पानेका समान अधिकार होना चाहिए।

(७) लेखन और भाषणकी स्वतन्त्रताका गला घोटनेवाला कानून रद किया जाय।

(८) विदेशी सेना तोड़ दी जाय और उसकी जगह स्वदेशी सैन्य तैयार किया जाय।

(९) समय और परिस्थितिके अनुसार अन्य योरपीय राष्ट्रोंकी तरह यहाँ भी सब तरहके सामाजिक सुधार किये जायँ । इत्यादि ।

यह योजना ऐसी थी जो स्वभावतः ही पोपको स्वीकार न हो सकती थी । अतएव उसके अनुसार सुधार चाहनेवालोंके मुहँ बन्द करनेकी जबर्दस्त कोशिशें पोपकी तरफसे की गई । इसके लिए न्याय अन्याय कुछ न देखा-सोचा गया । इससे चिढ़कर पोप-राज्यके कुछ लोगोंने, १८४५ ईसवीमें, बलवा किया, जो डण्डोंके जोर पर दबा दिया गया । परन्तु इससे भी पुरोगामियोंकी हलचल बन्द न हुई । बल्कि लोग, जाहिरा तौर पर उनके विचारों और इच्छाओंका समर्थन करने लगे, एवं तरह तरहसे उनका उत्साह बढ़ाने लगे । इससे आन्दोलनने बहुत जोर पकड़ा । अन्तमें उसका असर, पीडमाण्टके राजा, चार्ल्स अलबर्ट, पर भी पड़ा । उसे अब अपनी युवावस्थाके उदार विचारोंकी याद आने लगी, जिससे उसका दिल पुरोगामियोंकी ओर झुकने लगा । १८४६ ईसवीमें, चुङ्गीके एक मामलेमें उसने आस्ट्रियाके साथ व्यवहार करनेमें स्वतन्त्र राष्ट्रोचित निर्भीकता प्रकट की और आष्ट्रियाके दबावसे अपने देशको मुक्त करनेकी इच्छा भी स्पष्ट रूपसे प्रकाश की । अलबर्टका यह काम, इटलीके अन्य राज्योंकी दशा देखते, पुरोगामियोंके उत्साह बढ़ानेमें, विशेष कारणीभूत हुआ । तब पुरोगामी उसे अपना नेता या नियन्ता मानने लगे ।

जून १८४६ ईसवीमें एक और घटना पुरोगामियोंके अनुकूल हुई । इस समय 'पायस दि टेन्थ' नामका नवीन पोप रोमकी गद्दी पर बैठा । वह बड़ा दयालु, उदारहृदय और मिलनसार था । पुरोगामियोंके आन्दोलनके साथ उसकी सहानुभूति थी । अतएव, गद्दी मिलते ही उसने उनकी पहली बात स्वीकार करके सारे राजनैतिक

कैदियोंको छोड़ दिया। उसके इस सत्कार्य्यके बदौलत लोगोंके हृदयमें, गोबर्टीके कथनके अनुसार, इस आशाका सञ्चार होने लगा कि यह पोप अवश्य इटलीमें राष्ट्रीय एकता स्थापित कर देगा। अतएव जब जब पोप राजमहलसे बाहर निकलता, लोग उसका जय जयकार करते—उसके नामकी जय बोलते। यह पोप तो चाहता था कि पुरोगामी पक्षका कार्य्यक्रम मंजूर कर ले, परन्तु रोमन क्युरिया प्रान्तके अधिकांश मुखिया इसका विरोध करते थे। वे पोपके इस विचारमें बराबर बाधा डाला करते। इससे विचार ही विचारमें उसका बहुत समय निकल गया। इस परिस्थितिसे लाभ उठा कर उसके राज्यके पुरोगामियोंने रोम और बोलोग्नासे, १८४७ ईसवीमें, दो समाचार-पत्र स्वतन्त्र रूपसे निकाले। उनके द्वारा वे अपने राजनैतिक विचारोंका प्रचार करने लगे। पत्रोंके चल निकलने पर, शीघ्र ही, उन्होंने एक समिति (Club) भी स्थापन की। लोक-मतकी बढ़ती हुई लहरको देखकर आखिर पोपने भी अपनी इच्छा प्रकट की कि लोक-नियुक्त शासन सभायें स्थापित करनेको मैं तैयार हूँ। क्यूरिया-प्रान्तके लोगोंने उसका बहुत विरोध किया, परन्तु उनकी दाल न गली और उसी साल, नवम्बरमें, इस सभाका पहला अधिवेशन हुआ। इसके पश्चात्, कोई डेढ़ वर्ष खाली गया। परन्तु इस अवधिमें अन्य राज्योंके लोग भी आन्दोलनके लिए उठ खड़े हुए। पोपका उदाहरण उनके सामने था ही। उनकी हलचल भी जोर पकड़ गई। सेक्सनीमें, पोपकी प्रणालीके अनुसार, राजनैतिक सुधार होने लग। पीडमाण्टके राजा चार्ल्स अलबर्टने तो "इटालियन स्वतन्त्रता हमारा ध्येय है," यह लोगोंके सामने साफ साफ प्रकट कर दिया। इस ध्येयकी सिद्धिके लिए जो लोग परिश्रम कर रहे थे

उनका वह उत्साह बढ़ाने और उत्तेजना भी देने लगा। १८४६ ईसवीमें जिनोआमें एक बड़ी वैज्ञानिक परिषद् हुई। उस समय उसने कितने ही देश-भक्तोंको जी भर बोलनेकी आज्ञा दे दी। परन्तु उसने अभीतक अपनी शासन-प्रणालीमें जरा भा सुधार न किया था। उसके विचार और आचारका यह विरोध देखकर वहाँके एक कविने उसको लक्ष्यकर एक व्याजोक्ति-पूर्ण काव्यकी रचना की। उसमें कविने उसकी बड़ी मीठी चुटकियाँ ली थीं। इन्हीं दिनों एकबार ब्रिटिश वकील लार्ड मिण्टो और चार्ल्स अलबर्टकी भेट हुई। उस समय अँगरेज-सरकारकी तरफसे लार्ड मिण्टोने उससे बड़े आग्रह-पूर्वक कहा कि आप अपने राज्यमें राजनैतिक सुधार कीजिए। चार्ल्स अल-बर्टका स्वभाव जरा अनिश्चय-प्रधान था। अर्थात् विचारके अनुसार काम करनेका निश्चय वह बहुत कम करता था। अतएव उसके विचार कार्य्यके रूपमें बहुत जल्दी परिणत न होते थे। वह प्रायः "करूँ कि न करूँ" इसी दुविधामें लटकता रहता था। परन्तु पूर्वोक्त काव्य और मिण्टो-मुलाक़ातकी बदौलत आखिर उसे निश्चय करना ही पड़ा और अक्टूबर १८४७ ईसवीमें उसने अपना खरीता प्रकाशित किया। खरीतेमें उसने अभीष्ट सुधारोंके करनेकी प्रतिज्ञा की थी। उसके अनुसार लोगोंको स्थानिक और प्रान्तिक सभाओंके लिए सभासद चुननेका अधिकार मिला। पुलिस और न्याय-विभागमें भी आवश्यक सुधार किये गये और लेखन-स्वातन्त्र्यमें भी बहुत सुभीते कर दिये गये। टस्कनीके राजाने भी, पीडमाण्टके राजाकी देखादेखी, इसी नीतिका अनुसरण किया। सारांश यह कि कावूर जिस अनुकूल परिस्थिति अथवा समयकी राह देख रहा था, वह, इस प्रकार तैयार हो रही थी। एक ओर तो यह परिस्थिति तैयार हो रही थी, दूसरी

ओर, कावूर, बड़े बड़े औद्योगिक कारखानोंकी उधेड़बुनमें निमग्न था। उस कार्यमें दत्तचित्त होते हुए भी वह ऐसी ही परिस्थितिकी ताक झाँकमें विशेषरूपसे था। बस, पीडमाण्टके राजाके द्वारा राजनैतिक सुधारोंका पूर्वोक्त खरीता प्रकट होते ही उसने प्रत्यक्ष रूपसे राजनैतिक-क्षेत्रमें पदार्पण करनेकी तैयारी की। इसके लिए उसने किस साधनका अवलम्बन किया और उसके द्वारा उसने कौनसा महत्कार्य्य किया, इसका वृत्तान्त अगले प्रकरणमें देखिए।

५—पत्र-सञ्चालन।
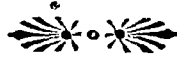
पीडमाण्टके राजाने ज्योंही लेखन-स्वतन्त्रताकी रुकावट हटा ली, कावूरने ट्यूरिनसे एक समाचार-पत्र निकालनेका निश्चय किया। पत्र-प्रकाशनके प्रबन्धके लिए वह १८४७ ईसवीमें, ट्यूरिन नगरको आया। काउंट फेसरे बाल्बो नामके एक विद्वानने उसे सहायता देना स्वीकार किया। कावूरको पत्र-सञ्चालनका कुछ भी ज्ञान न था। अतएव वह पत्र-सञ्चालन-कलाके सीखनेका निश्चय करके पूर्वोक्त विद्वानकी सहायतासे "It Risorgimento" नामका एक छोटासा समाचार-पत्र निकालने लगा। इस पत्रके जन्म लेते ही रोमसे और टस्कनी प्रान्तसे भी नये नये राजनैतिक पत्र निकलने लगे।

कावूरने जब अपना पत्र निकाला तब इटलीमें उसकी ख्याति अधिक न थी। फ्रेञ्च और स्विस मासिक-पत्रोंमें, इससे पहले, जो लेख उसने लिखे थे वे पीडमाण्टके लोगोंके देखनेमें न आये थे। इसके सिवा वह सरदार-जादा था और उसका पिता था—पुलिसका प्रधान

अफसर। अतएव लोग उसे सन्देहकी दृष्टिसे देखते थे। पीडमाण्टमें इस समय स्थापित सत्तावादी (Conservative), उदार मतवादी (Liberal), और मूलगामी (Radical) ये तीन राजनैतिक दल थे। इन तीनों दलोंके लोगोंके विचार उसके खिलाफ थे। पहले दलके लोग जानते थे कि कावूर सुधारवादी है। इसलिए वे उसका विरोध करते थे। उसकी सामाजिक श्रेष्ठता और उसके पिताके बरतावके कारण उदार मतवादी लोगोंका उस पर विश्वास न था और मूलगामी दलके लोग उसके विचारोंको 'बहुत सौम्य' मानते थे और उसका मार्ग उन्हें पसन्द न था। अतएव वे भी उसके विषयमें उदासीन रहते थे। ऐसे समयमें कावूरने अपना पत्र शुरू किया। परन्तु उसने इस विषम अवस्थाकी परवा न की। उसका राजनैतिक ध्येय और उसकी सिद्धिके उपाय निश्चित थे, एवं उसे दृढविश्वास था कि निष्ठापूर्वक उन उपायोंका अवलम्बन करने पर कुछ दिनोंमें लोक-मत मेरी ओर झुक जायगा। अतएव लोकाराधन—लोकरञ्जन—के झगड़ेमें न पड़कर वह अपने निश्चित कर्तव्यका ही पालन करनेमें सोत्साह दत्तचित्त रहा।

जिन दिनों कावूरने पत्र निकाला, इटलीके अधिकांश राज्योंमें नवीन राजनैतिक आन्दोलन प्रचार पा चुका था। यह देखकर आस्ट्रियाने उसके रोकनेकी कोशिश की। लाम्बर्डी और वेनिशिया ये दो प्रान्त तो आस्ट्रियाके अधीन थे ही। इनके अतिरिक्त और जो राज्य उसके आधिपत्यमें थे उनमें भी सेना भेजकर उसने इटालियन लोगोंका आन्दोलन निर्मूल करना प्रारम्भ किया। इसका फल यह हुआ कि कितने ही राज्योंके लोगोंने, और लोगोंके आग्रहवश वहाँके राजाओंने आस्ट्रियाके प्रभुत्वको जलाञ्जलि देकर प्रातिनिधिक शासन-पद्धति जारी कर दी। इस सुअवसरसे लाभ उठाकर जिनोआ-तहसीलकी प्रजाने

एक प्रार्थना-पत्र तैयार किया। उसमें उसने नवीन राजनैतिक सुधारों-की चर्चा की थी और पीडमाण्टके राजा चार्ल्स अलबर्टसे प्रार्थना की थी कि शासनमें इतने सुधार और कर दीजिए। यह प्रार्थना-पत्र उसने अपने कुछ प्रतिनिधियों (Deputation) द्वारा टयूरिन, पीडमाण्ट-नरेशको भेजा। यह १८४८ ईसवीके जनवरी महीनेकी बात है। उन सुधारोंकी चर्चा करनेके लिए उस समय एक सभा की गई जिसमें इटलीके प्रधान प्रधान समाचार-पत्रोंके सभासद निमन्त्रित किये गये थे। कावूरके पास भी निमन्त्रण गया था। इसी सभामें पहले-पहल कावूरने अपने राजनैतिक मत स्पष्ट रूपसे प्रकट किये। जिनोआ-निवासियोंकी माँग प्रधानतः यह थी कि जेजूईट लोग-देशसे निकाल दिये जाँय और हमारे नगरमें संरक्षक सेना (Civil Guard) रक्खी जाय। इस विषय पर जब सभामें वाद-विवाद छिड़ा तब कावूरने कहा—"जिनोआ-निवासियोंकी माँग बिलकुल थोड़ी है। वर्तमान समयमें इतनेसे काम नहीं चल सकता। हमें अपने राजनैतिक ध्येय-की सिद्धिके लिए ऐसी ही शासन-व्यवस्था (Constitution) करानी चाहिए जिससे आगे चलकर नियमबद्ध प्रातिनिधिक शासन-पद्धति स्थापन हो जाय। इसके सिवा दूसरी गति नहीं।" कावूरने मुँहसे ये शब्द निकलते ही उपस्थित लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि उस समय पीडमाण्टमें प्रातिनिधिक शासन-पद्धति (Constitution) का नाम लेना बड़े साहसका काम समझा जाता था। कावूरका कथन सुनकर कितने लोग तो उसके उद्देश्य पर सन्देह करने लगे और कितने उसकी माँगको निष्प्रयोजक कहने लगे। अतएव इसका अन्तिम निर्णय दूसरे दिन पर रक्खा गया। इसी बीच पीडमाण्टके राजाने जिनोआ-निवासी प्रतिनिधियोंसे मुलाकात करनेसे इंकार कर

दिया। दूसरे दिनकी समाचार-पत्र-सम्पादकोंकी सभामें भी "Concardia" पत्रके सम्पादक और पुरोगामी नेता, बेलिरियोने प्रातिनिधिक शासन-पद्धति (Constitution) की माँगका तीव्र विरोध किया। अतएव जो थोड़े पत्र-सम्पादक कावूरसे सहमत थे उन्होंने प्रातिनिधिक शासन-प्रणाली (Constitution) की प्राप्तिके लिए प्रार्थना-पत्र लिखकर चार्ल्स अलबर्टको डाक द्वारा भेजा। कुछ दिनोंके बाद उस प्रार्थना-पत्रके सम्बन्धमें अपने एक मित्रसे बातचीत करते हुए चार्ल्स अलबर्टने कहा "इटलीके पुनरुज्जीवनके लिए सिपाही दरकार हैं, कानूनदाँ नहीं। मेरी राय तो यह है कि इटलीकी राष्ट्रीय स्वतन्त्रताके ही हितके लिए प्रातिनिधिक शासन-पद्धति प्रचलित करना अभीष्ट नहीं।" जब चार्ल्स अलबर्ट गद्दी पर बैठा तब उसने वादा किया था कि प्रचलित शासन-व्यवस्थाका भङ्ग न करूँगा। इस प्रतिज्ञाके उल्लङ्घनके लिए सहसा तैयार हो जाना उसे बहुत खलता था। इस कारण वह पूर्वोक्त प्रार्थना-पत्र स्वीकार करनेको राजी न था। परन्तु अब हवाका रुख झपाटेसे बदल रहा था। सिसली और नेपल्समें बलवे शुरू हो गये थे। वहाँकी प्रजाने अपने राजाओंसे फ्रान्समें, १८३० ईसवीमें प्रचलित शासन-प्रणालीके ढँगपर नवीन शासन-पद्धति प्रचलित करनेकी मँजूरी प्राप्त कर ली थी। यह देखकर अन्य स्थानोंकी प्रजा भी वैसी ही शासन-प्रथा प्रचलित करानेका प्रयत्न धड़ाकेसे करने लगी। इस दशामें चार्ल्स अलबर्ट अपनी हठधर्मी अधिक दिन तक कायम न रख सकता था। अतएव वह अपने परिवारके खास खास आदमियोंको बुलाकर उनसे इस विषयमें सलाह-मशवरा करने लगा। उसने कहा —"यदि नियमबद्ध शासन-पद्धतिकी राय आप देंगे तो मैं इस्तीफा देकर देशका शासन युवराजको सौंप दूँगा।" उसकी यह बात

सुनकर उसकी रानी तो डरसे काठ हो गई। जिनोआका ड्यूक, जो उसका रिश्तेदार था, राजाको समझाने लगा कि नियमबद्ध शासन-प्रणाली कोई भयङ्कर वस्तु नहीं। युवराज विक्टर इमेन्युअलने तो उसके इस्तीफेकी बातको उड़ा हीं दिया। तब राजाने अपने धर्मगुरुकी राय ली और जब उसने राजाकी दिलजमई कर दी कि ऐन वक्त पर लोगोंको छोड़ जानेका पाप उस वचनभङ्गके पापसे जिसका पालन करना प्रायः असम्भव है, कहीं अधिक है, तब कहीं उसने डरते डरते कम्पित हस्तसे भावी नियन्त्रित शासन-प्रणालीके (Constitution) कानून पर दुःखित हृदयसे दस्तखत किये। इस कानूनकी धारायें १८३० ईसवीके फ्रान्स देशीय कानूनके आधार पर तैयार की गई थीं। इसके अनुसार पीडमाण्ट और जिनोआ-प्रान्तोंके समस्त लोक-प्रतिनिधियोंकी दो सभायें (चेम्बर और सेनेट) निर्माण की गईं। उनमेंसे एक तो थी बड़े आदमियोंके प्रतिनिधियोंकी और दूसरी, सर्व-साधारण अर्थात् मध्यम श्रेणीके लोगोंकी। एक ओर तो इटलीके कुछ राज्योंमें इस तरहके राजनैतिक सुधार हो रहे थे कि दूसरी ओर पोपने भी खुल्लम खुल्ला आशीर्वाद दिया—"इटलीका कल्याण हो, उसका विजय हो।" तब तो लोगोंका उत्साह बहुत ही बढ़ गया। इतनेहीमें फिर राज्यक्रान्ति हुई। योरपके प्रत्येक देश पर उसका थोड़ा बहुत प्रभाव हुआ। स्वयं विएन्ना नगरके लोगोंने भी आष्ट्रियाके सम्राटसे प्रातिनिधिक शासन-प्रणाली (Constitution) जारी करनेकी इच्छा प्रकट की। यह देखकर लाम्बर्डी और वेनिशियाकी प्रजाने भी आस्ट्रियाके विरुद्ध उपद्रव मचाया और अपने देशमें अस्थायी स्वतन्त्र शासन संस्थायें (Provincial Government) स्थापित कर लीं। उनकी देखादेखी इटलीके अन्य राज्योंमें भी लोकसत्ताक अथवा प्रातिनिधिक

शासन-पद्धतियाँ प्रचलित होने लगीं। यही नहीं, वहाँके लोग लाम्बर्डी और वेनिशिया प्रान्तोंके लोगोंको भी, आस्ट्रियाको इटलीसे निकाल देनेके काममें सहायता देने लगे। लाम्बर्डीकी राजधानी, मिलान, की नई सरकारने पीडमाण्टकी सहायता इस विषयमें चाही, परन्तु चार्ल्स अलबर्ट तो इस समय दुबिधा-सागरमें गोते मार रहा था। अतएव, उसे सहायता मिलनेका कोई चिह्न न देख पड़ा। तब कावूरने अपने वर्तमान-पत्रमें इस विषय पर एक लेख प्रकाशित किया। (२३ मार्च १८४८ ईसवी।) उसमें उसने पीडमाण्ट-सरकारको यह उपदेश किया था—

"सेवायके राजघरानेको यह बड़ा अच्छा मौका मिला है। इस समय दृढ निश्चय करनेकी जरूरत है। इसी समय पर साम्राज्य और जन-समाजकी भवितव्यता अवलम्बित है। लाम्बर्डी और वेनिशियामें हुई घटनाओं पर ध्यान देनेसे दुबिधावृत्ति, संशय और विलम्बको स्थान या आश्रय देना अब सम्भव नहीं। ऐसी नीति सबके लिए अत्यन्त हानि-कारिणी होगी। हम शान्त स्वभाव हैं। हम, हमेशा विकारके वश न होकर विवेकका ही अनुसरण करते हैं। तथापि हम अपनी मनो-देवताको स्मरण करके और अपने प्रत्येक शब्दका साधक-बाधक विचार करके यह कहे बिना नहीं रह सकते कि राष्ट्र, मन्त्रि-मण्डल और राजा, इन सबके लिए सिर्फ एक ही मार्ग खुला है। वह यह एक क्षण भी विलम्ब न करके युद्ध छेड़ दिया जाय।"

कावूरके इन वाक्योंसे यह अनुमान हो सकता है कि उसकी विचार-सरणि कितनी गम्भीर, कितनी प्रौढ़ और कितनी कुशाग्र थी। जिस दिन उसका यह लेख प्रकाशित हुआ उस दिन रातको चार्ल्स अलबर्टने इस विषयका निर्णय करनेके लिए अपने परामर्शदाताओंको

बुलाया और उनसे सलाह की। अन्तमें यह तय हुआ कि आस्ट्रियाके साथ युद्ध छेड़ देनेकी घोषणा कर दी जाय। चार्ल्स अलबर्टने उस समय यह भी प्रकट किया कि पीडमाण्टने इटलीका ऐक्य-दर्शक तिरङ्गी राष्ट्रीय झण्डा स्वीकार किया है।* इस युद्धके सञ्चालनके लिए चार्ल्स अलबर्ट स्वयं युद्ध-क्षेत्रमें गया। पहले तो उसीकी जीत होती गई, परन्तु कुछ महीनोंके बाद, आस्ट्रियन सेनाको ज्यों ज्यों नवीन सेनाकी सहायता मिलती गई त्यों त्यों चार्ल्स अलबर्टकी सेनाको पीछे हटता आना पड़ा। एक दो जगह तो उसे हार भी खानी पड़ी। तब दोनों पक्षोंकी रजा-मन्दीसे कुछ दिनके लिए लड़ाई रोक दी गई। इस बीच आस्ट्रियाने अपने नष्ट प्रभुत्वको फिरसे उन प्रान्तोंपर स्थापित करनेका प्रयत्न किया। यह देखकर देशके गरम दलवालोंसे न रहा गया। उसकी यह कारवाई उन्हें सहन न हुई। वे जोर-शोरसे उसके विरुद्ध आन्दोलन करने लगे। यहाँ तक कि स्वयं पीडमाण्टमें भी उनका रङ्ग बहुत जमने लगा। तब उनकी स्वेच्छाचारिता दबानेके लिए कावूरको अपने पत्रमें उनके विरुद्ध कितने ही लेख लिखने पड़े। पार्लियामेंटमें भी उनका विरोध उसीको करना पड़ा। यह अप्रिय और कटु परन्तु हितकर काम करते हुए पार्लियामेण्टमें प्रतिपक्षियोंकी ओरसे उसके भाषणमें बहुत विघ्न-बाधायें उपस्थित की जाती थीं। परन्तु इससे वह कभी निराश न हुआ। उलटे वह कहता—"इन खुराफातोंसे डरनेवाला मैं नहीं। मुझे जो सच जान पड़ता है उसे कहनेंमे मैं जरा न दबूँगा। गौगा करके जो लोग बाधा डालना चाहते हैं वे मेरा नहीं बल्कि इस सभाका अपमान करते हैं।"

* तिरङ्गी झण्डा इटलीके क्रान्ति-कारक दलका झण्डा था। वही चार्ल्स अलबर्टने अपने देशके लिए स्वीकार किया। उसमें हरा, सफेद और लाल, ये तीन रङ्ग थे।

इस समय पीडमाण्टकी दशा बड़ी शोचनीय हो गई थी । पराजयके कारण उसकी सेनाका अब वह मान नहीं रह गया था । जब सेना पीछे हट रही थी, मिलानमें स्वयं चार्ल्स अलबर्टका कितनी ही बार निरादर किया गया था । सरकारी खजाना खाली हो चला था । इस दशामें कावूरका मत था कि शासन-कार्य बड़ी सावधानीसे करना चाहिए । परन्तु आस्ट्रियाके अन्याय-पूर्ण व्यवहारके कारण वहाँका राजनैतिक वातावरण (atmosphere) इतना क्षुब्ध हो गया था कि विचारवानोंकी अपेक्षा विकारवश लोगोंका ही प्राबल्य शासन-कार्यमें बढ़ रहा था । अन्तमें चार्ल्स अलबर्टको भी शासनकी बागडोर गोबर्टीको, जो पुरोगामी दलका नेता था और जिसे वे लोग बहुत चाहते थे, सौंप देनी पड़ी । परन्तु थोड़े ही दिनोंमें गोबर्टीके सहकारि-मण्डलमें तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया और उसे इस्तीफा देना पड़ा । तब रेटेजी नामका उसका एक सहायक मन्त्री प्रधान मन्त्री बनाया गया । उसके शासन-कालमें फिर आस्ट्रियासे लड़ाई छिड़ी । यह युद्ध चार्ल्स अलबर्टने केवल लोकमतको शान्त करनेके लिए जारी किया था । इस बार उसने लोगोंके आग्रहसे सेना-पतित्व स्वयं न स्वीकार करके ट्सानोंस्कि नामके एक पुलिस सेनानी अर्थात् सेनापतिको सौंप दिया । परन्तु स्थिति थी बड़ी नाजुक; ट्सोर्नोस्कि शत्रुको पराजित न कर सका । आस्ट्रियन सेनापति रेडेट्जी स्वयं पीडमाण्टकी सीमामें घुस गया और नोवेरामें उसने पीडमाण्टकी सेनाको हटा दिया । लड़ाई सवेरेसे शामतक होती रही । चार्ल्स अलबर्टने स्वयं युद्ध-कार्य्यमें योग देनेकी बहुत कोशिश की; पर दुर्दैववश वह सफल न हो सका । युद्धका निर्णय हो जाने पर उसने आस्ट्रियन सेनापतिसे अनुरोध किया कि लड़ाई मुलतबी रक्खी जाय । तब उसने बड़ी बड़ी कड़ी शर्तें पेश

कीं । यह देखकर चार्ल्स अलबर्ट निराश होगया । उसने सोचा, मेरे गद्दी छोड़ देनेसे शायद युवराजके लिए यह शर्तें ढीली कर दे और राज्यका इस्तीफा दे दिया तथा उसी दिन रातको पोर्टुगालको चला भी गया । परन्तु यह शोकावेग उसे सहन न हुआ और २८ जुलाई १८४९ ईसवीको वह संसारसे चल बसा ।

चार्ल्स अलबर्टके निकल जानेके बाद उसका पुत्र, द्वितीय विक्टर इमेन्युअल, पीडमाण्टकी गद्दी पर बैठा । परन्तु जिस स्थितिमें उसने गद्दी सँभाली वह अत्यन्त शोचनीय थी । सिंहासनारूढ होते ही उसे ऐसी शर्तों पर युद्ध स्थगित कराना पड़ा जो उसके लिए अपमान-कारक थीं । विक्टर इमेन्युअलका स्वभाव उसके पिताकी अपेक्षा अधिक निश्चयी और अधिक साहसी था । शासन-शास्त्र और राजनीतिमें भी उसकी अच्छी गति थी । अतएव उसने परिस्थिति पर ध्यान देकर आस्ट्रियन सेनापतिकी शर्तें कुछ समयके लिए मंजूर कर लीं । परन्तु उसने उसकी यह शर्त स्वीकार न की कि देशमें फिरसे आस्ट्रियन अनियन्त्रित शासनकी धूम मचे । वह जान चुका था कि पीडमाण्टका सामर्थ्य प्रातिनिधिक शासन-पद्धति पर ही अवलम्बित है । अस्तु । उस समय वह बिल्कुल युवा—२९ वर्षका—था ।* वह बड़ा सुस्वभाव था ।

* इसका जन्म २४ मार्च, १८२० ईसवी, को टयूरिनके कनिग्नानो नामके राजप्रासादमें हुआ । आगे चलकर इसी राजमहलमें पार्लियामेण्टके अधिवेशन होने लगे । इसके जन्मसमय, इसका बाप चार्ल्स अलबर्ट, चार्ल्स फेलिक्सकी नाराजीके कारण, अपनी ससुराल टस्कनीके ड्यूकके यहाँ सपत्नीक रहता था । वहाँ रहते हुए सितम्बर १८८२ ईसवीमें एक दिन शामके वक्त विक्टर इमेन्युअलके बिछौनेके सामनेके परदेमें आग लग गई । वह गहरी नींदमें सो रहाथा । अकेली उसकी धाय ही वहाँ थी । उसने बड़ी हिम्मत करके धधकती हुई आगमें कूदकर उसकी रक्षा की । राजकुमार तो बच गया; परन्तु

उसे भविष्य आशा-पूर्ण दिखाई देता था । उसे आशा थी कि विवश होकर आज मैं जो कुछ खो रहा हूँ शीघ्र ही फिरसे प्राप्त कर लूँगा और आस्ट्रियाको इसका खूब मजा चखाऊँगा । वह स्वयं तो बड़ी आशा बाँधे बैठा था पर देशकी दशा कुछ और ही थी । नोवेरामें पीडमाण्टकी सेनाका पराजय जबसे हुआ तबसे आस्ट्रियाके लोगोंका उत्साह बढ़ने लगा और स्थान स्थान पर इटलीके शासन-कार्य्यमें शोचनीय प्रतिक्रिया शुरू हो गई । इससे पीडमाण्टकी प्रजा अधीर और विचलित हो उठी । यहाँ तक कि वह अपने राजाको भी—उसके उद्देशको भी—सन्देहकी दृष्टिसे देखने लगी । उसे यह शङ्का होने लगी कि जिस तरह अन्य राज्य आस्ट्रियाके दबावके कारण बिखर गये—तितर-बितर हो गये—उसी तरह कहीं इस राज्यकी भी दशा न हो । इस कारण प्रजाका विश्वास उस पर न होता था । अतएव, जब वह पार्लियामेण्टमें शपथ करने आया तब लोगोंने उसका स्वागत विशेष नहीं किया और उसी दिन, अर्थात् २९ मार्च १८४९ को, जिनोआमें लोकसत्ता-वादियोंने बलवा कर दिया । ऐसी पेचीदा हालतमें अगर कोई दूसरा राजा होता तो घबड़ा जाता, अथवा चिढ़कर उसने प्रातिनिधिक शासन-पद्धति ही बन्द कर दी होती । परन्तु विक्टर इमेन्युअल तो था मजबूत-दिल और विचारवान् । उसने बड़ी धीरता और शान्तिके साथ इस

घायके कपड़ोंमें आग लग गई । उसका सारा शरीर जल गया । थोड़े दिनोंके बाद वह मर भी गई । विक्टर इमेन्युअल भी कुछ झुलस गया था; पर बच गया । जिस समय उसका पिता तख्तनशीन हुआ, वह ११ वर्षका था । लड़कपनमें फौजी खेलोंसे वह बड़ा अनुराग रखता था । वह आनन्दवृत्ति, उदार-हृदय और मिलनसार था । उसका स्वभाव भी बड़ा अच्छा था । नौकर-चाकर सिपाही और मामूली लोगोंका सहवास उसे बहुत पसन्द था । बड़े होने पर भी कुछ समय तक उसकी यही टेव रही ।

दशाको दूर करनेका सङ्कल्प किया। सुदैवसे उसने अपने प्रधान मन्त्री-के पद पर एक बड़े नामी देशभक्त और राजभक्त पुरुषकी नियुक्ति कर दी। इससे उसके सङ्कल्पकी सिद्धिके लक्षण भी दिखाई देने लगे। उस महान् पुरुषका नाम था—मासिमो डी आजेग्लिओ। उसका जन्म सरदार-कुलमें हुआ था। यह विद्या और कलाका बड़ा प्रेमी था। उसकी यह इच्छा थी कि इटली-देश स्वतन्त्र हो। अपनी इस इच्छा, इस भावनाको प्रगट करनेके लिए उसने कितने ही उपन्यास लिखे और चित्र बनाये थे। वह विधि-विहित आन्दोलनका पक्षपाती था। अतएव वह अपने प्रागतिक विचार जाहिरा तौर पर साफ साफ प्रकट किया करता। इससे वह बड़ा ही लोकप्रिय हो गया था। आस्ट्रियासे युद्ध छिड़ते ही वह स्वयं-सेवक (वालंटियर) बन कर समर-क्षेत्रमें गया था और एक बार खूब घायल भी हुआ था। वह नहीं चाहता था कि प्रधान मन्त्रीका पद स्वीकार करे। परन्तु राजाके आग्रहसे उसे स्वीकार करना पड़ा। इस पदको ग्रहण करके उसने सचमुच अपने राज्यका बड़ा भारी हित-साधन किया। उसके प्रधान मन्त्री होते ही प्रजाका सन्देह राजा परसे दूर हो गया। इसका फल यह हुआ कि विक्टर इमेन्युअलको अपनी नीतिके अनुसार काम करनेमें सुभीता हो गया। पीडमाण्टकी दशा उस समय ऐसी विलक्षण थी कि यदि राजा और प्रजामें परस्पर विश्वास न होता तो राज्यकी दुर्दशा हुए बिना न रहती। इस विश्वासका एक-मात्र कारण डी आजेग्लिओ था। उसके शील और कर्तव्य-क्षमताका लोग आदर करते थे। अतएव पीडमाण्टके शासन-की बागडोर उसके हाथमें जाते ही लोगोंकी शङ्का दूर हो गई। डि आजेग्लिओके प्रधान-मन्त्री होने पर शीघ्र ही, अर्थात् १५ जुलाई

१८४९ ईसवीको पुरानी पार्लियामेंट तोड़ दी गई और नया चुनाव किया गया। उस चुनावमें ट्यूरिनके कालेजकी ओरसे कावूर प्रतिनिधि चुना गया। पीडमाण्टकी पार्लियामेंटमें इससे पहले दो दफा उसका चुनाव हो चुका था। पर अबकी बारके निर्वाचनसे मृत्यु-दिन तक वह पार्लियामेंटका सभासद रहा। उसके भावी राष्ट्र कार्यकी सच्ची शुरूआत इसी समय हुई। इसका निरूपण अगले प्रकरणमें पढ़िए।

६—कार्य्यारम्भ।

नई पार्लियामेण्टके अधिवेशन शुरू होने पर उसमें जो पहला ही महत्त्वपूर्ण विषय उपस्थित हुआ उसका सम्बन्ध था आस्ट्रियासे की गई नई सुलहसे। इस सन्धिके अनुसार आस्ट्रियाको पीडमाण्टका कुछ भाग तथा साथ ७ करोड़ ५० लाख फ्रेंक्स नुकसानके देना तय हुआ था। नवीन पार्लियामेण्टमें मूलगामी (Radical) दलके लोगोंका खूब जोर था। पार्लियामेण्टका सभापति,* पेरेटो भी इसी पक्षका था। अतएव इस विषय पर जब बहस शुरू हुई तब मूलगामियोंने सन्धिकी इन शर्तोंका विरोध किया। सरकार-पक्षका कथन था कि वह

* किसी समय यह चार्ल्स अलबर्टका मन्त्री था। थोड़े ही दिन पहले जिनोआमें जो बलवा हुआ उसमें यही नेता बना था। इसलिए आस्ट्रियाने उसे सख्त सजा देनेकी तजवीज की थी; परन्तु, विक्टर इमेन्युअलने बीचमें पड़कर माफी दिलवा दी। क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसके पिताके मन्त्रीकी दुर्दशा हो।

परिस्थिति ही विलक्षण थी। ऐसा किये बिना दूसरी गति ही न थी। अतएव बहुत खींचातानी न करके जो कुछ हुआ उसे मंजूर कीजिए। परन्तु ऐसा होनेका कोई चिह्न न दिखाई देता था। यदि शर्तें पार्लियामेण्टमें स्वीकृत न हुई तो फिरसे आस्ट्रियासे युद्ध शुरू होनेकी सम्भावना थी और अधिकारि-मण्डल तो युद्धको टालना चाहता था। इस दशामें पूर्वोक्त पार्लियामेण्टको रद करके दूसरा नवीन चुनाव करनेके सिवा दूसरा उपाय न था। मासिमो डी आजेग्लिओने भी यही सलाह दी। तब विक्टर इमेन्युअलने नवीन निर्वाचनकी स्वीकृति दे दी और एक घोषणा-पत्र प्रकट किया जिसमें उसने उस परिस्थितिका खाका खींचा था। इस घोषणा-पत्रका आश्चर्य-जनक प्रभाव जनता पर हुआ। उससे लोगोंका इतमीनान होगया कि राजा सचमुच ऐसा शासन करना चाहता है जिससे वह प्रजाका विश्वास-पात्र हो। और इसका नतीजा भी सबके लिए अच्छा ही हुआ। नवीन चुनाव होने पर अधिकारियोंको, सहजहीमें, अभीष्ट बहुमत मिल गया। फलतः ९ जनवरी, १८५० ईसवी, को पहली ही बैठकमें सन्धिका प्रस्ताव, बिना बहुत वाद-विवादके, धड़ाकेसे पास हो गया। यह जटिल समस्या इस प्रकार हल होते ही एक और जटिल प्रश्न उठ खड़ा हुआ। उसका सम्बन्ध था पादरियों या धर्मोपदेशकोंसे। बात यह थी कि राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक विषयोंमें पीडमाण्टकी सरकार व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और समताके सिद्धान्तोंका अनुसरण करने लगी थी और एक ऐसा बिल, अर्थात् कानूनका मसविदा, तैयार किया गया था जिसके अनुसार धर्मोपदेशकोंके कुछ विशेष अधिकार* मारे जाते थे। धार्मिक सत्ताको नियमबद्ध करनेवाला यह पहला ही

* वे विशेष अधिकार ये थेः—

कानून पीडमाण्टके राज्यमें जारी होनेवाला था। इसके पहले राजाको यह अधिकार न था। और यह बात स्वभावतः ही वहाँके धर्मोपदेशकों और उनके अन्धभक्तोंको पसन्द होनेवाली न थी। अतएव उन्होंने उसका तीव्र विरोध किया। देशके प्रतिगामियोंकी बात जाने दीजिए। पार्लियामेण्टके उदार (Liberal) दलके कुछ सभासदोंने भी उसका विरोध किया इस आन-बानके समयमें कावूरने सरकारके पक्षका समर्थन बड़ी उत्कृष्टतासे किया। सात दिनों तक यह वाद-विवाद होता रहा। अपने भाषणोंमें उसने सरकार और उसके प्रतिपक्षी दोनोंके हितकी बातें कहीं। उसने मन्त्रिमण्डलके प्रतिपक्षके लोगोंसे कहा—भाइयो! पीडमाण्टकी नियन्त्रित शासन-सत्ताकी पुष्टि करके उसे सबल और कार्य्यक्षम करनेके लिए देशके सब हितेच्छुओंको तैयार हो जाना चाहिए। इसीमें उनका भला है—यही उनका तरणोपाय है। पक्षान्तरमें उसने मन्त्रिमण्डलको भी इंग्लैंडके प्रख्यात राजनीतिज्ञ वेलिंग्टन, ग्रे और पीलकी उन्नतिशील नीतिका अनुकरण करनेकी सलाह दी। कावूरकी यह वक्तृता पार्लियामेण्टके अधिकांश सभासदों और दर्शकोंको बहुत पसन्द हुई। अन्तिम भाषण समाप्त होने पर तो गैलरीके लोगोंने, घर जाते समय उसका खूब जय-जयकार किया। पार्लियामेण्टमें सफलता प्राप्त करनेका यह पहला ही अवसर कावूरके लिए था। इसके पहले उसके व्याख्यान विशेष अनुराग

---

(१) धर्मोपदेशक अपराधीके मुकद्दमेका फैसला करनेके लिए अलग न्यायालय स्थापित किये गये थे।

(२) देवालय अथवा अन्य किसी पवित्र स्थानमें जब वे होते थे तब उनपर कानूनका व्यवहार नहीं किया जाता था।

(३) कुछ ऐसे उत्सव और पर्व निश्चित किये गये थे जिनपर लोग दान करने पर बाध्य थे। इस आमदनीसे पादरियोंकी पेट-पूजा होती थी।

और ध्यानसे न सुने जाते थे; क्योंकि वह प्राय: सभी पक्षोंको अप्रिय था। इस कारण उसे अपने विचार प्रधानत: अपने पत्रके ही द्वारा प्रकट करने पड़ते थे। परन्तु अब जमाना पलट चला था। पूर्वोक्त वाद-विवादके बाद पार्लियामेण्टमें किये उसके भाषण बड़े महत्त्वकी दृष्टिसे देखेजाने लगे और सभासद भी उसका कथन ध्यानसे सुनने लगे। इस वादविवादके पश्चात् पूर्वोक्त बिल, जो मन्त्रिमण्डलके द्वारा पेश किया गया था, बहुमतसे पास हो गया। सेनेटमें * थोड़ासा विरोध उसका हुआ अवश्य; पर वहाँ भी शीघ्र ही बहुमतसे स्वीकृत हो गया। ८ अप्रेल, १८५० ईसवीकी यह बात है। इस बिलके पास होजानेपर पादरी-पुञ्जमें बड़ा असन्तोष फैला। कितनी ही जगहोंके पादरियोंने तो लोगोंको उकसाया कि इस कानूनको मत मानो। तब उन पर मुकदमे चलाये गये। इन्हीं दिनों सेंटा रोजा नामक कृषि-विभागका मन्त्री अत्यन्त बीमार हो गया। पादरियोंने उसका मृत्युसमयका धर्म-संस्कार करना अस्वीकृत कर दिया। टयूरिनके एक प्रधान धर्म-गुरुने कहा कि वह यदि पूर्वोक्त कानूनकी स्वीकृति पर अपना पश्चात्ताप प्रकट करे तो हम धर्म-संस्कार करनेको तैयार हैं। सेंटा रोजाने यह शर्त मंजूर नहीं की। अतएव उसे बिना ही धर्म-संस्कारके मरना पड़ा। सेंटा रोजा कावूरका मित्र था। इस घटनाकी खबर लगते ही उसने अपने पत्रमें धर्मगुरुओंके इस

* पीडमाण्टकी पार्लियामेण्टकी दो शाखायें अर्थात् उपसभायें थीं—सेनेट और चेम्बर। पहली थी बड़े आदमियोंकी और दूसरी थी साधारण लोगोंकी। साधारणोंकी सभामें कांजरवेटिव, लिबरल कांजरवेटिव, लिबरल्स और रेडिकल्स—ये चार मुख्य पक्ष थे। रेडिकल दलमें पीछेसे फूट हो गई। उसके दो दल बन गये—माडरेट रेडिकल्स और रेडिकल्स।

व्यवहारकी कड़ी आलोचना की । टयरिनकी जनता पर उसका इतना प्रभाव पड़ा कि यदि उस समय कोई ऐसी घटना हो गई होती तो पादरियोंकी जान बचना मुश्किल था । सेंटा रोजाकी मृत्युके बाद पूर्वोक्त कानूनका विरोध करनेवाले दो तीन मुख्य पादरियोंको कड़ी सजायें दी गई । जो कुछ भले आदमी पहले पादरियोंसे सहानुभूति रखते थे वे भी, सेंटा रोजाकी घटनाके बाद, और विशेष करके कावूरके लेखोंकी तीव्र वर्षाके कारण, उनसे असन्तुष्ट हो गये । अतएव पादरियोंका पक्ष पङ्गु हो गया और जिस कानूनका वे निष्कारण विरोध करते थे उसका व्यवहार निष्कण्टक शुरू हो गया । इस सफलताकी यादगारके लिए टयूरिनवासियोंने चन्दा करके एक स्मारक बनाया । पूर्वोक्त कानून वहाँ कितना लोकप्रिय हो गया था, इसके अनुमानके लिए यह एक ही उदाहरण बस है ।

धर्मगुरुओंका यह तूफान शान्त होने पर कावूरने जुलाई, १८५० ईसवीमें, पार्लियामेण्टमें भाषण करते हुए मन्त्रि-मण्डलसे कहा कि इंग्लैंडके पूर्वोक्त तीन राजनीतिज्ञोंका अनुसरण करके पीडमाण्टमें धड़ाकेसे उन सुधारोंका प्रवेश कराया जाय जिनसे राज्यकी दशा सुधर जाय और वह बलिष्ठ हो जाय । उसने यह भी साफ कह दिया कि यदि आप ऐसा न करेंगे तो मैं आपके कामोंका समर्थन न करूँगा । अब कावूरका महत्त्व पार्लियामेण्टमें बहुत बढ़ गया था । उसके मतोंका भी अनुसरण करनेवाला एकदल वहाँ तैयार हो रहा था, नहीं, हो गया था । इस दशामें उसके कथन पर ध्यान न देना मन्त्रिमण्डलके लिए असम्भव था । अतएव युद्ध-मन्त्री, ला मार्मोराने, जो कावूरका मित्र भी था, प्रधान मन्त्रीसे कहा कि कावूरको मन्त्रिमण्डलमें ले लीजिए । प्रधान मन्त्री, मासिमो डी आजेग्लिओ, बहुत प्रौढ़, समझदार, हो-

श्री कृष्ण लिथो प्रेस गायवाडी गिरगांव मुंबई-मि-बाबुराव नारायण-

शियार और शान्तिप्रिय था। उसकी राय थी कि कावूर महत्त्वाकाँक्षी और बड़ा लौट-फेर करनेवाला आदमी है। उसे मन्त्रिमण्डलमें दाखिल करते ही नये नये प्रपञ्च उपस्थित कर देगा। सो उसने पहले तो ला मार्मोराके कथन पर विचार नहीं किया। परन्तु जब ला मार्मोराने उसे यह चिता कर कह दिया कि कावूरको बाहर रख कर उसे अपना प्रतिपक्षी बनानेके बजाय मन्त्रिमण्डलमें लेलेनेसे वह अधिक विचार-पूर्वक काम करेगा और यही अधिक अभीष्ट भी है, तब प्रधान मन्त्रीने कावूरको कृषि और व्यापार-मन्त्रीकी खाली जगह देना कबूल किया। कावूरने वह पद स्वीकार कर लिया, परन्तु उसी समय उसने यह शर्त करा ली कि शिक्षा-विभागके मन्त्रीको अलग करके उसकी जगह मेरी पसन्दका आदमी रक्खा जाय। यह बात प्रधान मन्त्रीको कुछ अखरी तो, पर उसने मंजूर कर ली और उसकी नियुक्तिकी स्वीकृति राजासे माँगी। विक्टर इमेन्युअल साधारण राजा न था। वह बड़ा चालाक और राजनीति-पटु था। वह मनुष्यको पहचानता भी खूब था। कावूरकी नियुक्तिका प्रस्ताव देखकर उसने डी आजेग्लिओ और ला मार्मोरासे कहा—"सज्जनो, यह आदमी बेढब है। यह आप सबको निकाल कर बाहर कर देगा। क्या आप यह नहीं जानते?" तथापि उसने बिना कुछ ऐतराज किये उसकी नियुक्ति मंजूर कर ली।* (११ अक्टूबर १८५० ईसवी।) इस घटनासे इतना अवश्य जाना जाता है कि प्रधान मन्त्री और राजा ये दोनों कावूरको चाहते तो न थे; पर उसकी कार्य्यक्षमता और कर्तव्यतत्परताके कारण उन्हें
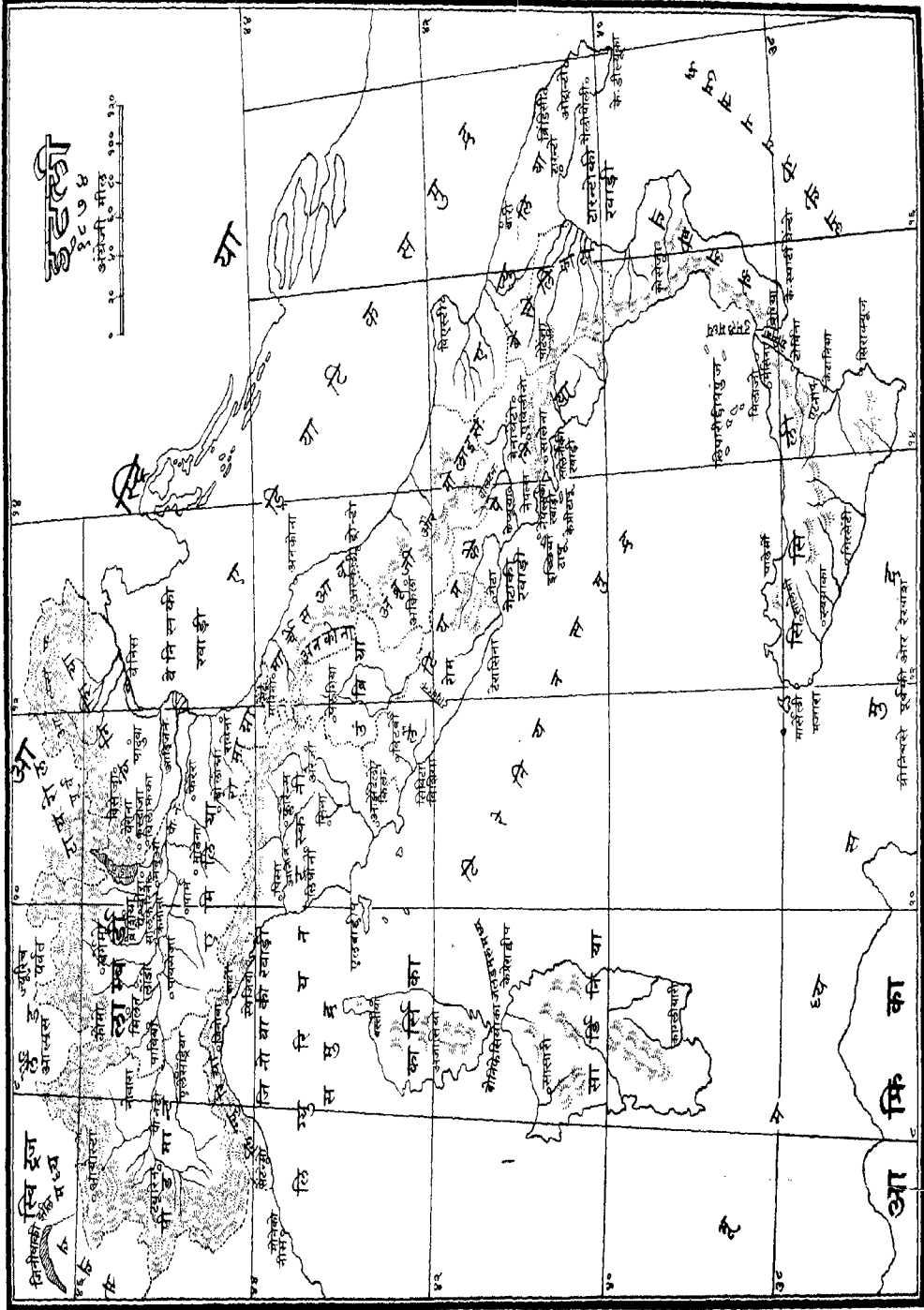
---

* इसी वर्ष कावूरके पिताका देहान्त हुआ। उसकी माता चार वर्ष पहले ही प्राण त्याग कर चुकी थीं। वह स्वयं था अविवाहित। अतएव वह अपने बड़े भाईके ही घर रहा करता था।

उसे अपनाना पड़ा। काबूरकी उच्च योग्यताका इससे उत्कृष्ट प्रमाण और क्या चाहिए ? और यदि चाहिए भी तो वह आगेके प्रकरणोंमें मौजूद ही है। अस्तु। यह अधिकार प्राप्त हो जाने पर काबूरने अपनी खेती-बारी, रोजगार-धन्धा और समाचार-पत्र सब बन्द कर दिये। वह अपना सारा समय इसी अङ्गीकृत कार्य्यकी सिद्धिमें लगाने लगा। इतने दिनों तक तो व्यापार और कृषि-विभागके मन्त्रीकी जगह दूसरे दरजेकी मानी जाती थी, परन्तु जबसे काबूर उस पर नियुक्त हुआ उसकी प्रतिष्ठा बढ़ती चली। कृषि और व्यापारका अनुभव तो उसे अच्छा था ही। वह रोज कोई न कोई नवीन योजना सोचा और तैयार किया करता। वह खुली व्यापार-पद्धतिको पसन्द करता था। उसका खयाल था कि पीडमाण्टकी वर्तमानदशामें यही प्रणाली लाभ-दायक होगी। अतएव उसने इस नीतिके अनुसार कितने ही कानून बनाये और फ्रान्स इंग्लैंड और बेलजियम इन राष्ट्रोंसे उसने व्यापारिक सन्धियाँ कीं। थोड़े ही दिनोंमें वह सामुद्रिक विभागका भी मन्त्री बन गया। एक, दो, तीन, मन्त्रियोंके पदोंका काम वह अकेला कर सकता था। इस कारण मन्त्रि-मण्डलमें उसका महत्त्व और प्रभुत्व झपाटेसे बढ़ता गया। यहाँ तक कि थोड़े ही दिनोंमें मन्त्रिमण्डलका प्रायः सारा काम वह अकेला ही करने लगा। उसका यह साहस देखकर प्रधान मन्त्री कभी कभी असन्तुष्ट हो जाता। परन्तु एक तो उसका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया था और दूसरे काबूरकी कार्य्यक्षमता पर उसे विश्वास भी हो गया था। अतएव वह इस बात पर ध्यान न दिया करता। १८५१ ईसवीमें काबूरने राजस्व और कर-विभागके मन्त्री निग्रासे इस्तीफा दिलवाया और स्वयं उसका काम करने लगा। शिक्षा-विभागका मन्त्रित्व उसके कथनके अनुसार उसके मित्र, एल.

फारिनी, को दिया गया। वह बड़ा विद्वान् और उन्नतिशील विचार-का था। उसने अपने विभागकी जो उत्कृष्ट उन्नति की उसकी प्रशंसा इंग्लैंडके नामी राजनीतिज्ञ ग्लैडस्टन साहब तकने की। इससे यह ज्ञात हो सकता है कि कावूर मनुष्यको कैसा पहचान लेता था और उसकी निर्णय-शक्ति कितनी बढ़ी चढ़ी थी।

कावूरने अन्य राष्ट्रोंसे—देशोंसे जो व्यापारिक सन्धियाँ कीं उनसे उसने इटलीके अन्य राज्योंको भी कम जियादह लाभ उठाने दिया। इससे चुङ्गी-विभागके सुधारमें उसे बड़ी सुगमता हुई। कावूरका उद्देश यह था—"राजसत्ताको कायम रखकर जनताको यथासम्भव शासनाधिकार देना और उसकी सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति करके पूँजी और मजदूरीकी विषमता दूर कर देना, तथा नीचे दरजेके लोगोंकी दशाका सुधार करना।" उसकी महत्त्वाकाँक्षा थी कि पीडमाण्टको समर्थ राष्ट्र बना कर उसकी सहायतासे सारे इटलीको एक राष्ट्र बनाया जाय। उसीके अनुसार उसने अपना कार्य्यक्रम तैयार किया था। पीडमाण्टको सब तरहसे सामर्थ्यशाली बनानेके लिए यह आवश्यक था कि उसके सैनिक और आर्थिक अङ्ग सुपुष्ट हों। अतएव उसने राजस्व और कर-विभागका मन्त्रित्व अपने ऊपर लिया। आस्ट्रियाका कर, सुधारोंके निमित्त होने-वाला बढ़ता हुआ खर्च, अकालका दौरा इन कारणोंसे पीडमाण्टका खजाना खाली हो चला था। उसे भरा-पूरा रखनेके लिए नये कर लगानेकी आवश्यकता थी। परन्तु तत्कालीन लोकस्थितिका विचार करनेसे इस नीतिका अनुसरण करना उचित-लाभ-प्रद न मालूम होता था। तथापि कावूरने हिम्मत करके उस काममें हाथ डाल ही दिया और जोड़ तोड़ लगाकर उसे पूरा भी कर डाला। कावूर लोक-

प्रियताकी अपेक्षा कर्तव्यपर विशेष ध्यान रखता था । उसके चरित्रकी यह बड़ी विशेषता थी । जहाँ कहीं कर्तव्य-पालन और लोकप्रियतामें विरोध आपड़ता वहाँ वह लोक-प्रियताका त्याग करके कर्तव्य-तत्परताका ही अङ्गीकार करता । स्वार्थका तो नामोनिशान उसके पास न था । उसके समस्त कार्य्य एक ही उद्देश—इटलीका एक राष्ट्रीकरण—से प्रेरित थे । इस एक ही विषयकी सिद्धिमें वह किसी सनकी या धुन-बाज आदमीकी तरह निमग्न और दत्तचित्त रहता था । उसके भावी जीवन-क्रमका विचार करनेपर तो ज्ञात होता है कि मानों इसी कामके लिए उसका जन्म हुआ था । अस्तु । कावूरकी साहसयुक्त कार्य्य-क्षमता और डि आजेग्लिओकी शान्त और उदार-नीति, इन दोनोंके संयोगके कारण विक्टर इमेन्युअलका शासन उन्नतिशील और लोक-प्रिय होता चला । विक्टर इमेन्युअलके गद्दीनशीन होते ही जो लोग उसके उद्देशको सन्देहकी दृष्टिसे देखते थे उनका सारा संशय धुल गया और वे अपने राजापर पूरा विश्वास रखने लगे । इन्हीं दिनों मेजिनीके साथी गोबर्टीने पेरिसमें "The Civil Regeneration of Italy." नामकी एक और पुस्तक प्रकाशित की । उसमें उसने अपनी पहली पुस्तकमें प्रतिपादित यह विचार कि "पोपकी अधिसत्ताके अधीन इटलीका पुनरुज्जीवन किस प्रकार हो सकता है" छोड़ दिया था और "पीडमाण्ट-राज्यकी सहायतासे यह काम किस तरह किया जा सकता है" इसका कल्पित चित्र खींचा था । उसमें उसने कहा था कि पोपकी राजकीय सत्ता नष्ट करके रोमनगर स्वतन्त्र राजकीय सत्ताका केन्द्र बनाया जाय । उसने यह भी ध्वनित किया था कि इस कार्य्यकी सिद्धिमें कावूरसे बहुत काम निकलेगा । कावूरके विषयमें उसकी राय थी कि " उसकी महत्त्वाकांक्षा, उद्योगलालसा, उत्साह

आर मानसिक सामर्थ्य बहुत बढ़ा चढ़ा है । अतएव पूर्वोक्त कार्य्यकी सिद्धिके लिए वह बहुत योग्य है।" आगे चलकर उसका अन्दाज बहुत सही निकला भी । अस्तु । एक ओर जब तक कावूर और डि आजेग्लिओ पीडमाण्टकी सुस्थिति और स्थिरताकी कोशिशमें लगे थे तब तक दूसरी ओर आस्ट्रियाकी उत्तेजनाके कारण, अन्य राज्योंमें फिरसे राजनैतिक विषयोंमें प्रतिगामी (Reactionary) नीति जारी हो गई और दिसम्बर १८५१ ईसवीमें, फ्रान्सके राजा लुई नेपोलियनने जब 'सम्राट्' उपाधि धारण की, तब तो इटलीमें प्रतिगामी नीतिके पृष्ठ-पोषकोंको बड़ा जोश चढ़ आया । क्योंकि उन्हें आशा हो गई थी कि काम पड़ने पर हमारे आन्दोलनकी सहायता फ्रान्स भी करेगा। इस अनिष्ट स्थितिका प्रभाव स्वयं पीडमाण्टकी पार्लियामेण्ट पर भी होने लगा । पीडमाण्टकी पार्लियामेण्टके चेम्बर अर्थात् साधारण लोगोंकी सभामें इस समय ४ पक्ष थे—(१) राईट सेंटर, (२) एक्स्ट्रीम राईट, (३) लेफ्ट सेंटर और (४) एक्स्ट्रीम लेफ्ट । इनमेंसे पहले दो दल सामान्यतः कांजरवेटिव अर्थात् अनुदार विचारके स्थापित सत्तावादी थे । परन्तु उनमेंसे एक्स्ट्रीम राईट दलके लोग अब पूरे प्रतिगामी हो चले थे । दूसरे दो दलोंमें एक पुरोगामी सुधारवादी और दूसरा मूलगामी अर्थात् क्रान्तिकारक (पूर्ण लोकसत्तावादी) था । कुछ दिन पहले यह क्रान्तिकारक दल बहुत बढ़ चढ़ गया था । उस समय उसका सामना करके कावूरने सरकारकी सत्ता अबाध रक्खी । पर अबकी प्रतिगामी पक्षके लोगोंका जोर बढ़ रहा था और उनसे उसे मुकाबला करना था । उनके आघातोंसे लोगोंकी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनी थी । इसके लिए उसने एक उपाय सोचा । उसने पूर्वोक्त दोनों 'सेंटर' दलोंमें एकता करनेकी

कोशिश छुपे छुपे आरम्भ की। राईट सेंटर और लेफ्ट सेंटर ये दोनों दल परस्परविरोधी थे। उनमें एकता करनेकी योजना प्रधान मन्त्री, डी आजेग्लिओको पसन्द होनेवाली न थी। परन्तु तत्कालीन परिस्थिति-को देखकर कावूरको इतमीनान हो गया था कि उनमें ऐक्य हो जाने पर प्रधान मन्त्री प्रकट रूपसे उसका विरोध न करेंगे। अतएव उसने उनसे पूछा तक नहीं और अपनी ही जवाबदेही पर लेफ्ट सेंटरके अगुआ, राटेजी, से बातचीत शुरू कर दी। राटेजी और उसके दल-वाले पहले कितने ही विषयोंमें एक्स्ट्रीम लेफ्ट अर्थात् मूलगामी पक्षकी सहायता करते थे। परन्तु अब वह उस पक्षसे सम्बन्ध-विच्छेद करनेके इरादेमें था; क्योंकि मूलगामी तो लोक-स्वतन्त्रताके पक्षपाती थे और कावूरने ही राजनैतिक सुधार उनके अनुकूल कर भी दिये। इस कारण कावूरकी इच्छा सफल होनेका सुअवसर अना-यास ही प्राप्त हो गया था। तब कावूर और उन्होंने एक गुप्त योजना की। परन्तु, इस समय भी, राटेजीकी राजनिष्ठा पर कावूरको कुछ सन्देह था। केस्टिकी नामका एक सज्जन इन दोनोंका मित्र था। वह कावूरके समाचार-पत्रका सहकारी सम्पादक था। उसने मध्यस्थ हो कर उस संशयको दूर कर दिया। तब दोनों दलोंने एक दूसरेकी सहायता करनेकी गुप्त प्रतिज्ञा की। तथापि यह बात पार्लि-यामेण्टकी अगली बैठक—जो फरवरी १८५२ ईसवीमें हुई,—के वाद-विवादमें फूट गई। उस समय एक्स्ट्रीम राईटके एक सभासदने कावू-रका उपहास करते हुए ताना दिया था—"कावूरने सभाके एक भागको तिलाक देकर दूसरे भागसे शादी कर ली है।"*

---

* इस घटनाका नाम कन्यूबिओ (शादी) पड़ गया। इतिहासमें भी यह इसी नामसे प्रसिद्ध है।

यही नहीं उसने उसके कार्य्यकी आलोचना भी ऐसे ढँगसे की कि लोगोंको उसकी नीति पर सन्देह उत्पन्न हो जाय। इन कटाक्षोंका उत्तर देते हुए कावूरने अपनी सफाई इस तरह पेश की थी—
" मन्त्रिमण्डल अभी स्वतंत्रता, दूरदर्शिता, सौम्यता (moderation) विचारपूर्वक उन्नति, इन्हीं सिद्धान्तों पर स्थित है। इस सभाके जिन माननीय सभासदोंने इन सिद्धान्तोंको स्वीकार किया है उन्हें मन्त्रिमण्डलने अपनाया है और उनसे मित्रता करनेमें उसे हर्ष होगा। तथापि तीन वर्षोंसे वे जिन तत्त्वोंका पृष्ठपोषण कर रहे हैं उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। एक प्रतिनिधि महाशयने कहा है कि मन्त्रिमण्डलने अपने जहाजका रुख बदल दिया है। यह सच नहीं। उसने अपनी नीति नहीं बदली है। यही नहीं; बल्कि उसने आगे ही कदम रक्खा है, पीछे नहीं।" कावूरके कन्यूबिओंने उस समय अच्छा समझौता कर दिया। तत्कालीन परिस्थितिके लिए वह बहुत योग्य उपाय था। इसके बदौलत पीडमाण्टमें बढ़नेवाला प्रतिगामियोंका प्रभुत्व वह शीघ्र ही नष्ट कर सका। और इसी कारण डी आजेग्लिओने भी उसके इस साहसका विरोध नहीं किया। यही नहीं, पहले तो कुछ दिनों तक उसे कावूरका यह काम अभीष्ट ही ज्ञात हुआ। पार्लियामेण्टके मतैक्यके कारण कावूरका सामर्थ्य ज्यों ज्यों बढ़ने लगा त्यों त्यों वह झपाटेसे नये नये सुधारोंका प्रस्ताव करने लगा। तब तो डी आजेग्लिओका और उसका मत-भेद दिन दिन तीव्र होने लगा। अन्तमें राटेजीको सन्तुष्ट करनेके लिए जब कावूरने डी आजेग्लिओसे न पूछ कर उसे चेम्बरका सभापति बनाना प्रकट किया तब तो आजेग्लिओसे न रहा गया। अन्तमें कावूर और उसके मित्र फारिनी, शिक्षा-विभागके मन्त्री, को इस्तीफा दे देना पड़ा। (जून १८५२।) तथापि,

इस घटनाके कारण, डी आजेग्लिओका और उसका खानगी नाता नहीं टूटा । डी आजेग्लिओ इतना क्षुद्र-हृदय नहीं था, जो सार्वजानिक मतभेदके कारण खानगी मित्रताका विनाश कर बैठता । फिर कावूरके तो कितने ही गुणोंपर वह लट्टू था । अतएव कमसे कम कावूरके विषयमें तो उसके हृदयमें कटुभाव पैदा होना सम्भव न था । यही क्यों, यह उसीके सुहृद् भावका कारण है जो कावूरको शीघ्र ही प्रधान-मन्त्री बननेका सुअवसर मिला ।

७—प्रधान मन्त्री होना ।
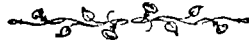
इस्तीफा दे चुकने पर कावूर फ्रान्स और इंलैंडकी यात्राको बिदा हो गया । जानेके पहले शिष्टाचारके अनुसार, वह विक्टर इमेन्युअलसे मिलने गया । तब बिदा करते समय विक्टर इमेन्युअलने मुसकराते हुए कहा—"आपको फिरसे मन्त्रिमण्डलमें बुलानेमें अभी बहुत देर है ।" सुनकर कावूर मन-ही-मन मुसकराया और बिदा हो गया ।

इस बार इंलैंडमें उसका खूब आदर हुआ—जयजयकार हुई । पीडमाण्टकी पार्लियामेंटकी कन्यूबिओवाली घटना इंग्लैंडके प्रख्यात राजनीतिज्ञोंको बहुत पसन्द हुई । इंग्लैंडके प्रधान-मन्त्री लार्ड पाल्मर्स्टनने तो कावूरके साथ उस विषयमें खूब ही सहानुभूति दिखलाई और कहा कि "इस काममें आपको इंग्लैंड नैतिक सहायता देगा । पीडमाण्टमें आपने जो लोक-नियन्त्रित शासन-प्रणाली प्रचलित की है उसे देखकर हमें बड़ा हर्ष होता है ।" फिर सर जेम्स हडसन नामके एक उदार-मत-वादी पुरुषको ट्यूरिनके अँगरेज वकीलके स्थान पर

नियुक्त किया जिससे पीडमाण्टके अधिकारिवर्गको यथा-सम्भव सहायता मिले और कावूरका पूर्वोक्त प्रयोग सफल हो। इस प्रकार इटालियन राष्ट्रीयताके काममें लन्दनके राजनीतिज्ञ और अधिकारि-मण्डलकी सहानुभूति प्राप्त करके कावूर पेरिस आया। वहाँ रहकर उसने वहाँके समस्त दलोंके राजनैतिक नेताओंका पारस्पारिक द्वेष नष्ट करके उनमें एकता करवा दी। वहाँकी राज्य-क्रान्तिका उल्लेख करके उसने उनसे कहा—"जो बातें हो गईं सो हो गईं; उनके पिष्ट-पेषणसे अब कोई लाभ नहीं। अब तो आप सब राजनीतिज्ञोंका यही कर्तव्य है कि आप इस बात पर विचार करें कि उन बीती हुई बातोंसे अब हम देशको किस प्रकार लाभ पहुँचा सकते हैं।" सम्राट् नेपोलियन* से भी कावूरने भेट की और अपने मित्र राटेजीकी भी भेट कराई। इस समय उसने फ्रान्स आनेके लिए राटेजीको जो पत्र लिखा था उसमें वह कहता है कि—"हमें पसन्द हो चाहे न हो; पीडमाण्टका भविष्य अनेक अशोंमें फ्रान्स पर ही अवलम्बित है। अतएव फ्रान्सकी भावी शासन-नीतिमें हमें अवश्य भाग लेना चाहिए।" कावूरका चेहरा, उसकी बातचीत करनेका ढंग और रौब ऐसा था कि उससे बातचीत करनेवाले पर उसकी बातोंका असर एकबारगी होता था। अतएव पहली ही मुलाकातमें उसने नेपोलियनको पिघलाकर मुग्ध—वशीभूत—कर लिया। नेपोलियनका बरताव यों तो कठोर मालूम होता था पर वास्तवमें उसका हृदय था कोमल (Emotional)। कावूरकी फुरती और कार्य्यतत्परता

* १८५१ में फ्रान्समें राज्यक्रान्ति हुई। तब नेपोलियन लोकमतके सहारे वहाँका सम्राट् बना और तभीसे वह तीसरे नेपोलियनके नामसे प्रसिद्ध हुआ। इसके पहले वह फ्रेंच शासन-संस्थाका अध्यक्ष था और उसे 'प्रिन्स प्रेसिडेंट' कहते थे।

राजनीति-चतुरता और निस्सङ्कोच व्यवहार देखकर वह उस पर बहुत खुश हुआ। उसने कावूरसे कितने ही राजनैतिक विषयों पर बातचीत की और जब तक वह पेरिसमें रहा, कितने ही बार उससे मुलाकात की। कितने ही इटालियन देशभक्तोंको इटली सरकारने देश-निकाला दे दिया था। वे पेरिसमें आकर बस गये थे। कावूरने इस यात्रामें उनसे जान-पहचान कर ली और उनके साथ अपनी सहानुभूति भी प्रकट की। उन लोगोंमें वेनिसके नेता डानियल मेनिनकी विचारशैली और उसका व्यवहार उसे बहुत भाया। 'इटलीका पुनरुद्धार' (The civil regeneration of Italy) नामकी पुस्तकके लेखक गोबर्टीने भी कावूरसे भेट की। दोनों बड़े प्रेम-पूर्वक मिले। इस तरह विदेशमें सफलता और कीर्ति प्राप्त करके तथा बड़े बड़े आदमियोंसे नई जान-पहचान करके कावूर शीघ्र ही स्वदेशको लौटा। तब तक यहाँ फिरसे पार्लियामेंट और पादरी-पुञ्जमें झगड़ा उपस्थित हो गया था। * प्रधान-मन्त्री डी आजेग्लिओ बीमार था। उसके पाँव-का घाव फिरसे भर आया था। इधर विक्टर इमेन्युअल पर उसके मातापिता जोर डाल रहे थे कि पादरियोंका साथ दो। ऐसे समय सरकारके पक्षकी दृढ़ताके लिए प्रधान मन्त्रीको बड़ी दूरदर्शिता और समयसूचकतासे काम लेना चाहिए था। परन्तु अस्वास्थ्यके कारण डी आजेग्लिओ इस तरह बुद्धिमानीसे काम करनेमें असमर्थ था—वह क्षमता ही उसमें न रह गई थी। अतएव उसने इस्तीफा पेश कर

---

* यह झगड़ा सिविल मेरेज बिल (विवाहकी रजिस्ट्रीका कानून) के कारण खड़ा हुआ था। चेम्बरने बिल पास कर दिया, परन्तु सेनेट ने, जिसमें पादरियोंकी ही तूती बोलती थी, उसे नामंजूर किया और पोप तो उसके विरुद्ध था ही।

दिया और विक्टर इमेन्युअलको सलाह दी कि कावूरको प्रधान मन्त्री बना दीजिए। तब राजाने कावूरको बुलाकर राय ली और बताया कि प्रधान मन्त्री होनेपर पोपसे निपटारा किस तरह किया जाय। कावूर उससे सहमत न हुआ। तब उसने राजाको राय दी कि काउंट बालबो (यह कावूरका पुराना मित्र था) को यह पद दे देना चाहिए। राजाने मंजूरी दे दी। परन्तु काउंट बाळबोने स्वीकार नहीं किया। तब राजाने अधिक नीच-ऊँच न सोचकर बेशर्त कावूरको ही मन्त्रिपद दे दिया (नवम्बर १८५२) और कावूरने भी उसे स्वीकार कर लिया। प्रधान मन्त्री होते ही कावूरने पुराने मन्त्रिमण्डलमेंसे ही बहुतसे मन्त्री चुन लिये और अपने राजनैतिक मित्र राटेजीको भी शीघ्र ही मन्त्रिमण्डलमें ले लेनेकी आशा दिलाई। इससे वह भी सन्तुष्ट हो गया। प्रधान मन्त्रीके पदके अतिरिक्त राजस्व और कर-विभागके मन्त्रिपदका भी भार उसने अपने ही ऊपर रक्खा। इस प्रकार सङ्गठित यह मन्त्रिमण्डल इतिहासमें 'Gran minisero' अर्थात् महत्-मन्त्रिमण्डलके नामसे प्रसिद्ध है। यही मन्त्रिमण्डल, आगे चलकर, इटालियन राष्ट्रके निर्माणमें सफल हुआ। अस्तु। अपना राजनैतिक उद्देश सफल करनेके लिए कावूरको जिस अवसर और जिस सत्ताकी आवश्यकता थी वह तो उसे मिल चुकी। परन्तु यह न समझिए कि इतनेसे उसका मार्ग निष्कण्टक हो गया था। पीडमाण्ट राज्यकी लोकसंख्या ५० लाख थी। परन्तु नोवेराके पराजयके कारण वह हतवीर्य हो गया था। न तो उसकी आर्थिक दशा ही सन्तोषजनक थी और न उसे किसी बलशाली मित्रका ही आश्रय था। इस दशामें कावूरको यह बिकट प्रश्न हल करना था कि ऐसे छोटेसे देशके द्वारा ४ करोड जन-संख्यावाले आस्ट्रियाका प्रभुत्व नष्ट

करके (क्योंकि इसके बिना इटलीको स्वतन्त्रता मिलना और उसका एक राष्ट्र बनना असम्भव था) इटालियन राष्ट्रका एकीकरण कैसे करना चाहिए। इसके लिए उसे सबसे पहले ये तीन काम करने थे—(१) पीडमाण्टका सैनिक बल बढ़ाना, (२) देशकी आर्थिक उन्नति करके राजकोषको पुष्ट रखना और (३) किसी एक अथवा एकाधिक बलाढ्य राष्ट्रसे मित्रता करना और ऐसी मित्रताके लिए अपने देशको उसकी टक्करका बनाना। इन तीन बातोंके किये बिना इटालियन राष्ट्रका एकीकरण करना असम्भव है, कावूरकी यह पक्की धारणा थी और वह थी भी उचित। क्योंकि उस समय तक मेजिनीकी क्रान्ति-कारिणी गुप्त संस्थाओंने इटलीकी भिन्न भिन्न शासन-संस्थाओंको नष्ट करके उन सबके बजाय एक ही लोकसत्ताक शासन-संस्था स्थापन करनेके उद्देशसे कितने ही गुप्त और प्रकट प्रयत्न किये; परन्तु आस्ट्रियाके सामर्थ्यके आगे वे सब विफल हुए। अतएव इटलीके अधिकांश नरम-गरम पुरोगामियोंको यह यकीन हो चला था कि ऐसे उपायोंसे अभीष्ट-सिद्धि होनेकी नहीं। कावूर तो आरम्भहीसे इस मार्गके विरुद्ध था। उसके धैर्य्य या साहस कम था सो बात नहीं। परन्तु उसका यह विश्वास था कि राजनैतिक उथल पुथल—उलट-फेर—सदा अपने प्रतिपक्षके बलाबलका विचार करके युक्तिसे ही चलनेसे होता है। इसी लिए वह क्रान्तिकारक आन्दोलनोंसे दूर रहता था। उसका खयाल था कि इटलीपरसे आस्ट्रियाका प्रभुत्व तभी नष्ट हो सकता है जब बराबर धीरतासे उसके पीछे पड़े रहें। उसकी रायमें इसके लिए, योरपके शक्तिशाली राष्ट्रोंकी सहानुभूति, नहीं सहायता, प्राप्त करना एवं पीडमाण्टको इतना सामर्थ्य-वान् बनाना कि वह उनकी सहायतासे लाभ उठा सके—उसका उपयोग कर सके—बड़ा

ही आवश्यक था। अतएव पीडमाण्टके शासनसूत्र उसके हाथोंमें आते ही वह पहले इसी तैयारीमें लगा। सबसे पहले उसने पीडमाण्टकी भौतिक उन्नतिके काममें हाथ डाला। पहला काम उसने यह किया कि सैनिक विभागके मन्त्री ला मार्मोराको सेना-सुधारकी पूरी अजादी दे दी। तब सरकारी खजानेकी पूर्तिके लिए उसने कर लगानेका अप्रिय काम फिरसे शुरू किया। साथ ही रेलवे, आब़-पाशीके लिए नहरें और अन्य सुधार तथा परिचय-वृद्धिके सार्वजनिक मार्गोंकी उन्नति और वृद्धिमें भी वह अविलम्ब प्रवृत्त हुआ। इन सब सुधारोंके लिए बहुत धनकी आवश्यकता थी। उसकी प्राप्तिके लिए कावूरने कितने ही नये कर लगाये। प्रधानतः मध्यम और उच्च श्रेणीके लोगों पर करोंका भार विशेष रूपसे रक्खा गया। इस बात पर उसने बहुत ध्यान दिया था कि गरीब लोग करके बोझसे न दब जायँ। परन्तु मध्यम श्रेणीके कुछ लोग उसकी इस नीतिके विरुद्ध थे। वे कावूरके विषयमें लोगोंका खयाल बिगाड़ने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि लोग चिढ़ गये और कावूरका प्राण तक लेने पर उतारू हो गये। अक्टूबर १८५३ में लोगोंने एकबार उसकी हत्याका प्रयत्न भी किया; पर वह निष्फल हुआ। उसकी जान बच गई। तथापि उन दिनों उसके लिए रास्तोंमें अकेला फिरना कठिन हो गया था। अस्तु। इसी समय न्याय-विभागके मन्त्रीका पद खाली हुआ। वह जगह उसने जान बूझकर नरम-गरम पक्षके नेता राटेजीको दी। तब लोग आप ही शान्त हो गये। लोगोंको कावूरके खिलाफ उकसानेके लिए जो प्रयत्न किये वे भी अब असफल होने लगे। इसके पश्चात् कावूरने शीघ्र ही राटेजीको होम-मिनिस्टर (Home Minister) की जगह दे दी। अपने पहले मन्त्रित्वके समयमें कावूरने राटेजी और

उसके दलसे जो मित्रता (कन्यूबिओ) की थी, वह पाठकोंको याद ही होगी । राटेजीको मन्त्रिमण्डलमें सम्मिलित करके उसने इस मित्रताको और भी दृढ़ कर लिया । फलतः राष्ट्रीय कार्य्यके लिए राजा और प्रजा पर अपनी इच्छा-शक्तिका प्रभाव डालना कावूरके लिए सुलभ—सुकर—हो गया । "शक्तिके बिना मस्ती और कुश्ती व्यर्थ है," कावूर इस सिद्धान्तसे भलीभाँति परिचित था । अतएव पीडमाण्टके राज्यके पुनः सङ्गठन होने तक उसने आस्ट्रियासे अत्यन्त स्नेह और आदरका व्यवहार रक्खा । सो भी ऐसा कि उसे देखकर प्रख्यात आस्ट्रियन राजनीतिवेत्ता मेहर्निच भी दङ्ग रह गया । परन्तु उसका यह चिकना चुपड़ा बरताव अधिक दिनों तक न टिक सका । १८५३ ईसवीमें मेजिनीके उकसानेसे लाम्बर्डी-प्रान्तके लोगोंने फिर बलवा किया । पिछले बलवोंके अनुसार आस्ट्रियाने इसे भी शान्त कर दिया । इस प्रान्तके कुछ निवासी पहलेहीसे पीडमाण्टके राज्यमें आ बसे थे । वे उस राज्यके निवासी—नागरिक—हो गये थे । उनकी जमीन-जायदाद लाम्बर्डी प्रान्तमें थी । आस्ट्रियन सरकारका खयाल था कि इस बलवेमें ये भी शामिल हैं; अतएव उसने उन लोगोंकी जमीन जब्त करनेका निश्चय प्रकट किया । अब तो पीडमाण्टकी प्रतिष्ठाके हकमें बड़ी बेढब बात पैदा हो गई । क्योंकि राष्ट्रीय कानूनके अनुसार जब तक यह प्रत्यक्ष साबित न हो जाय कि वे विद्रोहमें शामिल थे तब तक उनकी जमीन-जायदादका जब्त होने देना पीडमाण्टके लिए अपमान-जनक था । अतएव कावूर खामोश नहीं बैठ सकता था । वह बड़ा समझदार, विचारवान्, दूरदर्शी और सचेत था, परन्तु जहाँ सारासार-विचार (Prudence) डरपोकपन माना जानेका डर होता वहाँ वह राष्ट्रीय प्रतिष्ठा और गौरवके काममें विशेष साहस दिख-

लाता था। वह यह जानता था कि इस छोटेसे देशके लिए आस्ट्रियाके इस कार्यका प्रतिकार करना असम्भव है। पर यह खयाल भी उसे व्याकुल कर रहा था कि ऐसे समयमें डर जानेसे अपने देशकी उन्नतिमें बाधा पड़ेगी। अतएव उसने पहले योरोपियन राष्ट्रोंसे आस्ट्रियाके कार्यकी शिकायत करनेकी ठानी। फ्रान्स और इंग्लैंड इन देशोंमें कावूरके कितने ही मित्र और गुप्त परामर्शदाता थे। उनके द्वारा कावूरको यह खबर नित्य लगा करती थी कि किस राष्ट्रके विचार पीडमाण्टके विषयमें कैसे हैं, अर्थात् कौन देश पीडमाण्टको किस निगाहसे देखता है। अन्य बड़े बड़े राष्ट्रोंसे भी ऐसी खबरें मँगानेकी तजवीज, उसने गुप्त वा प्रकट रूपसे, कर रक्खी थी। इस दक्षताके कारण उसे अपनी नीति कायम रखनेमें बड़ी सुगमता होती थी। सच पूछिए तो एक राजकाजी आदमीके लिए आवश्यक उत्कृष्ट कलानैपुण्य, समष्टिरूपसे, उसमें कूट कूट कर भरा हुआ था। अस्तु। उसे ज्ञात हुआ कि पूर्वोक्त घटनाके विषयमें इंग्लैंड और फ्रान्सका मत उसके अनुकूल ही होनेकी सम्भावना है। और इधर ला मार्मोराने भी उसे खबर दी कि हमारी सेना तैयार है। तब उसने आस्ट्रियाके पूर्वोक्त निश्चयकी शिकायत बलाढ्य योरोपियन राष्ट्रोंसे की और स्वयं आस्ट्रियासे भी उसका जवाब माँगा। यही नहीं, दोनों राष्ट्रोंने अपने अपने वकीलोंको भी वापस बुला लिया। उधर, उन्नतिशील योरोपियन राष्ट्रोंको कावूरकी शिकायत उचित जँची। अतएव उन्होंने कावूरके कथनका समर्थन करके आस्ट्रियाके कार्य्यका विरोध किया। तब पीडमाण्टसे युद्ध ठाननेकी हिम्मत आस्ट्रियाको न हुई। परन्तु कावूर जानता था कि आस्ट्रिया आगे पीछे उसकी कसर जरूर निकालेगा। वह यह भी जानता था कि इटलीके एकीकरणके लिए उसे, एक न एक दिन, आस्ट्रियासे

अवश्य जूझना पड़ेगा। अतएव वह इस विचारमें डूबा हुआ था कि किस तरह शक्तिशाली राष्ट्रोंकी सहायता प्राप्त करके आस्ट्रियाको अकेला लड़ने पर बाध्य किया जाय। इतनेहीमें फ्रान्स और इंग्लैंडने रूसके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की। १८५५ ईसवीका 'क्रिमियन वार' इसीको कहते हैं। यह युद्ध रूसने तुर्कस्तानसे क्रिमिया प्रान्त लेनेके लिए शुरू किया था। फ्रान्स और इंग्लैंडने तुर्कस्तानका पक्ष ग्रहण किया था। परन्तु उसमें उनके लिए कितनी ही अड़चनें—रुकावटें—पैदा हो गई थीं। अतएव वे आस्ट्रियाको अपनी तरफ करनेकी कोशिश कर रहे थे। परन्तु आस्ट्रियाका सम्राट् जारके विरुद्ध शस्त्र उठानेको तैयार न था। तथापि उन्होंने उसे अपने पक्षमें मिला लेनेकी कोशिशें जारी ही रक्खीं। ज्यों ही उन्होंने देखा कि उनके सफल होनेकी सम्भावना नहीं देख पड़ती, त्योंही पीडमाण्टको अपनी सहायताके लिए बुलाया। कावूर तो ऐसे अवसरकी टोहमें ही था। बल्कि उसे उपस्थित करनेके लिए बान्दशें भी बाँध रहा था। उसने तुरन्त पूर्वोक्त राष्ट्रों-को सहायता देना स्वीकार कर लिया। परन्तु सहायताकी शर्तें तय करना अभी बाकी था। यह कठिन काम कावूरके पर-राष्ट्रीय-विभागके मन्त्री डेबोरमिडाको सौंपा गया। उसने शर्तोंकी एक सूची तैयार की। उसमें उसने यह आश्वासन चाहा था कि युद्धके पश्चात् इटलीकी आवश्यकता पर विचार किया जाय और तब तक आस्ट्रियाको लाम्बर्डी प्रान्तके जमींदारोंकी जायदादकी जब्ती मुलतबी करनेपर मजबूर किया जाय। परन्तु इंग्लैंड और फ्रान्सको आस्ट्रियाको तङ्ग करना स्वीकार न था। अतएव उन्होंने ऐसा लेखी आश्वासन देनेसे इन्कार कर दिया। तथापि कावूर इस सुअवसरको खो देनेवाला आदमी न था। उसने डेबोरमिडासे कहा कि आप इस्तीफा दे दीजिए। उसने वैसा ही किया

भी। तब वह स्वयं परराष्ट्रीय-विभागका मन्त्री हुआ। और उसी दिन, १० जनवरी १८५५ ईसवीको, सन्ध्या-समय उसने दोनों राष्ट्रोंके जबानी आश्वासन पर ही भरोसा करके उनसे सन्धि की, इस बिना पर कि जो हमारे मित्र-शत्रु हैं उन्हें आप भी अपना मित्र-शत्रु मानें। विक्टर इमेन्युअल भी इससे पूर्ण सहमत था। यह सुलह इस तरह हुई तो; परन्तु पार्लियामेंटकी दोनों सभाओंमें उसका पास करा लेना बहुत कठिन काम था। चेम्बरके मूलगामी-पक्षीय सभासदोंकी ओरसे उसका तीव्र विरोध हो रहा था। वे लोग कहते थे कि "तुर्कस्तानके सदृश जङ्गली राष्ट्रकी सहायता करके राजनैतिक स्वतन्त्रताकी वृद्धिका यह बहुत अच्छा उपाय है! आस्ट्रिया जिस पक्षको ग्रहण करेगा उस पक्षको सहायता देकर राष्ट्रकार्य्यकी सिद्धिकी यह अच्छी तरकीब है।" कहना नहीं होगा कि उनकी यह राय कितनी हास्यास्पद थी। ब्रोफेरियो नामके एक मूलगामी नेताने तो साफ साफ कह दिया कि "अर्थ-शास्त्रकी दृष्टिसे यह सन्धि फजूल-खर्चीकी—रुपया बहानेकी है; सैनिक दृष्टिसे मूर्खता-पूर्ण है और राजनैतिक दृष्टिसे अपराधके सदृश है!" अतएव इस सन्धिके सम्बन्धमें पार्लियामेंटके चेम्बरमें जोर-शोरकी बहस छिड़ी। इस वादविवादमें कावूरने बड़ी गम्भीरता और शान्तिसे अपने प्रति-पक्षियोंका समाधान किया। उसने चेम्बरके सभासदोंके दिलपर यह बात अच्छी तरह जमा दी कि इस सुलहके करते समय पीडमाण्टकी अपेक्षा सारी इटलीकी भावी स्थितिका प्रश्न मेरी दृष्टिके सामने विशेष करके था और उसके हल करनेमें इस सन्धिका बड़ा उपयोग होगा। * तब अन्तमें ९५ अनुकूल और ६४ विरुद्ध मतसे यह

* इस समय कावूरने जो भाषण किया उसका यह भाग मननीय है—

"यह सवाल किया जायगा कि इस सन्धिसे क्या इटलीको कभी लाभ या उपयोग होगा? और यदि हो भी तो किस तरह? इसका उत्तर यह है कि

सन्धिप्रस्ताव चेम्बरमें स्वीकृत हुआ। सेनेटमें भी उसपर खूब बहस ठनी। पर अखिर वहाँ भी बहुमतसे पास हो गया। तब तुरन्त कावूरने, ला मार्मोराके साथ, पीडमाण्टकी सेना इंग्लैंड और फ्रान्सकी सहायताके लिए भेज दी। यह 'सन्धि-काण्ड' समाप्त हुआ न हुआ होगा कि एक दूसरा जटिल प्रश्न उपस्थित हो गया। इटलीमें पोपका प्रभुत्व बहुत प्राचीन समयसे चला आता था। उसकी सत्ता बहुतसे क्रिश्चियन राज्योंपर भी थी। इटलीके भिन्न भिन्न संस्थानों पर तो वह विशेष रूपसे थी। उसे आस्ट्रियाने भी स्वीकार किया था। परन्तु पीडमाण्टमें राजसत्ता और धर्मसत्ताको एक दूसरेसे अलग रखनेका तथा राजनैतिक दृष्टिसे धर्मोपदेशकोंका पद अन्य प्रजाके समान ही रखनेका

योरपखण्डकी वर्तमान दशामें हमारे तथा और किसीके लिए भी, इटलीके उद्धारका जो मार्ग खुला है, सिर्फ उसी मार्गमें इस सन्धिका उपयोग होगा। इटलीके सुधारके लिए अत्यन्त आवश्यक और महत्त्वकी बात यह है कि उसकी मान-प्रतिष्ठा, फिरसे प्राप्त की जाय। इसमें संसारके सभी लोक-समाज—शासक और शासित दोनों—उसके गुणोंका गौरव करेंगे। इसके लिए दो बातें जरूरी हैं—(१) *योरपको यह दिखलाना कि इटली इतना राजनैतिक चातुर्य रखता है* कि योग्य व्यवहार और स्वतन्त्रता-पूर्वक अपना राज-काज कर सके और जो शासनपद्धतियाँ आज कल उत्तम गिनी जाती हैं उनका प्रचार करनेकी योग्यता उसमें है, (२) यह सिद्ध करके दिखा देना कि हमारा युद्ध-सामर्थ्य हमारे पूर्वजोंकी ही टक्करका है। पिछले जमानेमें यह काम तुमने कर दिखाया है। उससे अधिक नहीं, तो उतना ही तुम्हारे हाथों भविष्यमें होना चाहिए। हमारे देशको योरपको यह दिखा देना चाहिए कि इटलीके पुत्र समर-क्षेत्रमें शूर योद्धाओंको शोभा देने योग्य ही रण-कौशल दिखला सकते हैं। और, सज्जनो, मुझे विश्वास है कि, पूर्वी प्रदेशमें (क्रिमिया) हमारे जो सैनिक विजय प्राप्त करेंगे वह इटलीके भावी उत्कर्षका—जिन लोगोंका यह खयाल है कि वक्तृत्व और लेखोंसे हम इटलीका पुनरुद्धार कर रहे हैं, उनके हाथों जो कुछ काम बन पड़ा है उसकी अपेक्षा—अधिक सहायक होगा।"

प्रयत्न जारी था। अर्थात् पीडमाण्टकी पार्लियामेंटमें ऐसे कानून पास किये जानेवाले थे जिनके अनुसार धर्मोपदेशक वर्गकी कुछ खास रियायतें नष्ट होनेको थीं। उनमेंसे कुछ कानून तो पहले ही पास हो चुके थे और कुछ अब पास होनेवाले थे। इस समय चेम्बरके सामने सरकारी खर्चसे चलनेवाली कुछ धर्म-संस्थायें बन्द करनेके कानूनका मसविदा पेश किया गया था। यह बात तो निश्चित ही थी कि पादरी-पुञ्ज इस बिलका तीव्र विरोध करेगा। अतएव उसका विचार कावूरने पहलेहीसे कर रक्खा था, परन्तु दुर्दैवसे उस समय विक्टर इमेन्युअलकी पत्नी, माता, और भाई, तीनों, कोई एक ही महीनेके भीतर कालकवलित हो गये। इस कारण उसका चित्त खिन्न और उदासीन हो गया था। यह मौका देखकर पादरी-पुञ्जके सहायकोंने उसके मनोदौर्बल्यसे खूब लाभ उठाया। उन्होंने उसके दिलमें यह बात बिठा दी कि पादरी-पुञ्जके विरुद्ध जो उसने ये कानून पास कराये हैं, उसीका फल स्वरूप यह ईश्वरीय कोप उस पर हुआ है। साथ ही उन्होंने एक ऐसी योजना भी चेम्बरमें पेश की कि चेम्बरमें उपस्थित किये कानूनके मसविदेको वापस ले लेने पर जो कुछ आर्थिक हानि होगी वह हम पूरी कर देंगे। परन्तु यह सब होनेके पहले ही कावूरने, जलदी करके, उसे चेम्बरमें पास करा लिया। अतएव, अब, उस विषयमें लौट-फेर करना मन्त्रिमण्डलके लिए सम्भव न था। विक्टर इमेन्युअलकी मनःस्थिति तो विचित्र ही हो गई थी। वह पादरी-पुञ्जके नेताओंके जालमें फँस गया। उनकी पूर्वोक्त योजना उसने पसन्द कर ली। परन्तु एक तो इस विषयमें लोकमत पूर्णतः कावूरकी ओर था, दूसरे, पीडमाण्टमें प्रातिनिधिक शासन-पद्धतिके भले प्रकार चलनेके लिए पादरी-पुञ्जके व्यर्थ और शासन-यन्त्रके लिए

घातक प्रभुत्वको कम करना अत्यन्त आवश्यक था। अतएव विक्टर इमेन्युअलका किया रद्दोबदल स्वीकार करना कावूरके लिए सम्भव न था। परन्तु जब राजा हठसी ठान बैठा तब निरुपाय होकर क़ावूरने अपना इस्तीफा पेश कर दिया! क्योंकि इसके सिवा उसके लिए दूसरा मार्ग ही न था।

८—इसके बाद।

कावूरका इस्तीफा मंजूर कर लेनेके बाद विक्टर इमेन्युअलने दूसरा मन्त्रिमण्डल सङ्गठित करना चाहा। परन्तु स्थिति थी बड़ी नाजुक, अतः उसकी इच्छाके अनुसार मन्त्रिमण्डलका सङ्गठन करके शासन-कार्य्यका उत्तर-दायित्व अपने सिर पर लेनेवाला कोई आदमी आगे न बढ़ता था। भूतपूर्व मन्त्री, मासिमो डी आजेग्लिओके भी विचार कावूरसे मिलते जुलते थे। अतएव फिरसे उस पर कामका भार डालना राजाको अभीष्ट न था। यही नहीं विक्टर इमेन्युअलको विश्वास था कि वह भी कावूरकी हाँमें हाँ मिलावेगा और उसीकी बात माननेकी सलाह देगा। अतएव वह उससे मिलना न चाहता था। परन्तु डी आजेग्लिओ ऐसे समय खामोश रहनेवाला आदमी न था। उसका पक्का विश्वास था कि राजा साहब इस समय बड़ी गलती कर रहे हैं, जिससे देशका अहित होना सम्भव है। अतएव उसने उनकी आँखें खोलनेके लिए एक हृदय-द्रावक पत्र लिखा। उसमें उसने राजासाहबको समझाया कि धर्मगुरुओंके फेरमें पड़कर आप मन्त्रिमण्डलके निर्धारित कार्य्य-क्रममें बाधा न डालिए। *इस पत्रकी बात विक्टर

---

* इस पत्रका नीचे लिखा भाग विशेष ध्यान देने योग्य है—

इमेन्युअलको नागवार हुई। परन्तु उसका प्रभाव उसपर पड़ा खूब। तुरन्त उसने कावूरको बुलवाया और अपना काम पूर्ववत् करनेका अनुरोध किया। कावूरने भी उसकी बात मान ली। तब जिस बिलके लिए ये सब कार्रवाईयाँ हुई वह फिर सेनेटमें स्वीकृतिके लिए पेश हुआ। लेकिन इस बार बिलके जनक राटेजीने राजाके इच्छानुसार धर्मोपदेशकोंकी एक विशेष संस्थाका नाम उसमेंसे निकाल डाला। कावूरने तो इसका भी विरोध किया था; परन्तु अन्तमें, वह भी सहमत हो गया। जब बिलपर सेनेटमें चर्चा हो रही थी, पादरियोंकी ओरसे सभामें तथा बाहर कावूर पर तीक्ष्ण वाग्बाणोंकी अविराम वर्षा हो रही थी। परन्तु उससे न डरकर कावूरने इन संस्थाओंको जो आलस्यको बढ़ानेवाली और रियासतके लिए निरर्थक भार-रूप थीं,

" महाराज, आपके जिस पुराने और एकनिष्ठ सेवकने आपकी सेवा-करनेमें अपने राजाके हित और गौरव पर ही एकमात्र ध्यान रक्खा है उसकी बातोंपर विश्वास रखिए। आपके चरणों पर मस्तक झुकाकर मैं आपसे सानुनय निवेदन करता हूँ कि आप अपने पहले मार्गकी ओर ही मुँह फेरिए। पादरियोंके गुप्त षड्यन्त्रने आपके राजत्व-कालकी सारी उत्तमता एक दिनमें नष्ट कर दी है; देशमें धाँधली मचा दी है; शासन-प्रणालीको डाँवाडोल कर दिया है और आपकी सत्यवचनशीलताके यश पर कारिख पोत दी है। अब एक पल भी देर करना उचित नहीं। पीडमाण्टने सब कुछ सहन किया है; परन्तु पादरियोंकी अधीनतामें फिरसे जाना—छिः यह कल्पनातक अभीष्ट नहीं। ऐसे गुप्त षड्यन्त्रोंको बदौलत इंग्लैंडके राजा जेम्स स्टुअर्ट, दसवें चार्ल्स तथा और भी कितनोंहीका नाम मिट चुका है। पादरियोंने जो हुल्लड़ मचाया है उसका सम्बन्ध धर्मसे नहीं, उनके स्वार्थसे है। मेरे इस कथनपर विश्वास रखिए। महाराज! आप निश्चय रखिए, इससे आप भी इन पर विजय-लाभ करेंगे। आप मुझ पर क्रोध न कीजिएगा। मेरी यह सलाह एक सज्जनकी सलाह है, राजनिष्ठ प्रजाकी सलाह है और महाराजके एक मित्रकी सलाह है।"

बन्द करनेकी आवश्यकता शान्तिपूर्वक, स्पष्ट शब्दोंमें, दिखलाई तब सेनेटमें भी वह बिल बहुमतसे पास हो गया। उसकी स्वीकृति होने तक काबूरको बड़ी मिहनत और परेशानी * उठानी पड़ी। इससे उसका स्वास्थ्य कुछ खराब हो गया। अतएव बिल पास होते ही विश्राम करनेके लिए वह लेरी चला गया। एक महीना वहाँ आराम करके टयूरिन लौट आया। उस समय पूर्वोक्त तूफान शान्त हो चला था। जनताका ध्यान पूर्वकी ओर भेजी गई सेनाकी तरफ लगा हुआ था। उसे समरक्षेत्रमें गये बहुत दिन हो गये थे; परन्तु उसके हाल-चालका पता लोगोंको न लगा था। यह देख काबूरका चित्त भी चिन्तित होने लगा। इसी समय उसे खबर लगी कि वहाँ महा-मारी शुरू हो गई है और सेनाके बहुतसे आदमी उसके शिकार हो रहे हैं। तब तो उसके चित्तकी अशान्ति बहुत ही बढ़ गई। उसे आशङ्का होने लगी कि कहीं ऐसा न हो कि लड़ाई छिड़नेका मौका आनेके पहले ही सेना यों व्यर्थ ही न नष्ट हो जाय। अतएव उसने ला मार्मोरा को लगातार चिट्ठियाँ लिखीं कि अपनी सेनाको युद्ध करनेका अवसर दिलाओ। फ्रान्सके तत्कालीन सम्राट् तीसरे नेपोलियनकी इच्छा थी कि वह सेना पीछे ही रक्खी जाय, लड़ाईका मौका उसे न दिया जाय; परन्तु जब काबूरका बहुत ही तकाजा देखा तो उसने अपना मनसूबा बदल दिया और १७ अगस्तके लगभग पीडमाण्टकी सेनाको फ्रेञ्च और इंग्लिश सेनाके साथ शत्रुसे लड़नेका अवसर दिया गया। सुदैवसे

* इस समय काबूरको कितनी परेशानी हुई इसकी कल्पना उसके एक पत्रके नीचे लिखे अंशसे हो सकती है,—

“यह झगड़ा पार्लिआमेण्टमें ही नहीं दीवानके दफ्तरमें, दरबारमें और यहाँ तक कि रास्तेमें भी जारी था। अनेक क्लेशकारक बातोंके बदौलत तो वह बहुत ही कष्टप्रद हो गया था।”

उस सेनाने अपनी शूरताकी पराकाष्ठा करके विजय प्राप्त किया* और अँगरेज सेनापति सिम्सनने उसकी वीरताकी प्रशंसा की। यह खबर उसी दिन तारके द्वारा कावूरको दी गई। उसने उसी दम यह शुभ वार्ता लोगों पर प्रकट कर दी। फिर क्या पूछना था? उनके आनन्दका पारावार न रहा। जो लोग इस सेनाको वहाँ भेजनेके लिए कावूरको कोसते थे वे भी इस शुभ संवादको सुन कर गद्गद हो गये और अन्तःकरणपूर्वक कावूरकी प्रशंसा करने लगे। इस विजयके बदौलत कावूर और पीडमाण्टकी प्रतिष्ठा योरपमें एक बार बढ़ गई और वर्षके अन्तमें (१८५५ ईसवी) जब विक्टर इमेन्युअल इंग्लैंड और फ्रान्स गया तब वहाँ उसका बड़ा जयजयकार हुआ। इस यात्रामें उसके साथ मासिमो डी आजेग्लिओ और कावूर दोनों ही गये थे। मासिमो डी आजेग्लिओ नरम पुरोगामी था। योरोपीय राजनीतिवेत्ताओंमें उसका बड़ा आतङ्क था। कावूरके विचारोंको वे गरम (Firebrand) समझते थे। अतएव यह दिखलानेके लिए कि हम केवल कावूरकी ही सलाहसे नहीं चलते हैं, विक्टर इमेन्युअल डी आजेग्लिओको, विशेष रूपसे, साथ ले गया था। पहले तो कावूर उसके साथ जाना न चाहता था, परन्तु डी आजेग्लिओके सङ्केतपर उसने जाना स्वीकार कर लिया। लन्दन पहुँचने पर वहाँके लोगोंने सार्वजनिक रूपसे विक्टर इमेन्युअलका खूब सत्कार किया। रानी विक्टोरिया और प्रिन्स अलबर्टने भी उसका स्वागत बड़े प्रेमपूर्वक किया। कावूरसे बातचीतकर वे दोनों बड़े प्रसन्न हुए और

---

* उसने अपनी सरकारी रिपोर्टमें इसका जो उल्लेख किया है, वह यह है—
"इस लड़ाईमें सार्डिनियन सेनाने यह दिखला दिया कि हम यूरोपके बड़े बड़े सैनिक राष्ट्रोंके कन्धेसे कन्धा मिला कर लड़नेके योग्य हैं।"

पीडमाण्टके साथ उन्होंने अपनी सहानुभूति भी प्रकट की। लन्दन-नगरके मेअर (नगराध्यक्ष) ने तो विक्टर इमेन्युअलका स्वागत बड़े ही उत्साहसे किया और उसके सन्मानार्थ एक सार्वजनिक भोज भी उन्हें दिया। उस समय विक्टर इमेन्युअलने एक भाषण किया। उसका आशय यह है—"लन्दन नगरके अध्यक्ष और सज्जनो, मैं आपकी रानी साहिबा और आपके देशसे भेट करने आया हूँ। यह देखकर आपने मेरा जो अभिनन्दन और स्वागत किया उसके लिए मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। आपके किये इस स्वागतसे यह प्रकट होता है कि मैंने अपने राज्यमें जो नवीन शासनपद्धति जारी की है और आगे भी जिसे प्रचलित रखनेकी मेरी इच्छा है उसके साथ आपकी पूर्ण सहानुभूति है।

"संसारके दो अत्यन्त बलाढ्य देशोंमें—इंग्लैंड और फ्रान्समें—मैं यात्रा कर रहा हूँ। उनमें जो मित्रताका सम्बन्ध हुआ है वह दोनों देशोंके शासन-कर्ताओंकी विचारशीलता—चतुरता—के योग्य और सन्माननीय है। यह स्नेह-सम्बन्ध क्या है, सभ्यताका विजय ही है। मेरे शासन-कालके पहले कुछ वर्ष यद्यपि सङ्कटमें बीते तथापि स्वतन्त्रता और न्यायकी रक्षाके लिए तलवार खींचना अपना कर्तव्य समझकर मैं भी इस मित्रत्व-सम्बन्धका अंशभागी हुआ हूँ। मेरे मित्रोंकी सहायताके लिए जो सेना मैंने भेजी वह यद्यपि कम है तथापि है वह अत्यन्त एकनिष्ट और कार्यतत्पर। अपने राजाके झण्डेके नीचे वह कहीं भी भिड़ जानेको—प्राण समर्पण करनेको—तैयार है। जब तक हमारी प्रतिष्टा और मर्य्यादाके योग्य स्थायी सन्धि न हो जाय, हमें हथियार नीचे न रखना चाहिए। प्रत्येक राष्ट्रकी न्याय्य आकांक्षा और वास्तविक स्वत्व एक मतसे प्राप्त करके हम, परमेश्वरकी कृपासे, अपना यह उद्देश सिद्ध करेंगे।"

इसके बाद उसने और एक बार इंग्लैंडकी रानी और जनताको धन्यवाद देकर अपना भाषग समाप्त किया।

पेरिसमें भी इन पाहुनोंका ऐसा ही सत्कार किया गया। परन्तु नेपोलियनको उचित समयके पहले ही युद्ध बन्द करके सन्धि करनेमें प्रवृत्त देखकर विक्टर इमेन्युलका दिल जरा कड़वा हो गया—उसे खेद हुआ। तथापि नेपोलियनने कावूरसे कहा कि पीडमाण्टको सहायता देनेकी मेरी बड़ी इच्छा है। आप तत्सम्बन्धी सूचनाओंकी एक सूची मुझे भेज दीजिए। कावूर इस अवसरको व्यर्थ खोनेवाला न था। उसने तुरन्त ही एक सुधार-योजना (Scheme) उसके सामने पेश की, जिसके अनुसार आस्ट्रिया और पोपकी प्रभुता इटलीपर कम होती थी। नेपोलियनने आश्वासन दिया कि मैं इनपर विचार करूँगा। इन दिनों इटलीके अन्य राज्योंका लोकमत भी पीडमाण्टकी शासन-शैलीके अनुकूल हो रहा था। कितने ही राज्योंके नेता तो इस शासन-पद्धतिकी सहायता करके पीडमाण्टके राज्य-छत्रकी छायामें जानेको उत्सुक थे। लोकसत्तावादियोंके नेता और वेनिसके भूतपूर्व अध्यक्ष डेनियल मेनिनने पेरिसमें एक लेख प्रकाशित किया। वह इस प्रवृत्तिका सूचक है। उसका सारांश यह है—

“ दमन-नीतिसे त्रस्त लोकसत्तावादियोंका दल देशकार्य्यके लिए और भी कसर खाकर—तरह देकर—स्वार्थ त्याग करनेको तैयार है। उसको यह पूर्ण निश्चय हो गया है कि सब बातोंके पहले इटलीकी एकता—और वर्तमान समयमें यही अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है—हो जानी चाहिए। अतएव यह दल पीडमाण्टके राजासे निवेदन करता है कि ‘ आप इटलीका एकीकरण कीजिए; फिर हमें आपसे मिला हुआ ही समझिए। ’ और नियन्त्रित-राजसत्तावादियोंसे हमारा कहना है

कि ‘ इटलीको एक राष्ट्र बनानेकी ओर आप ध्यान दीजिए। केवल पीडमाण्टकी कीर्ति बढ़ानेमें निमग्न न हो जाइए। आप इटालियन होइए; प्रान्तीय दृष्टि त्याग दीजिए। यदि आप ऐसा करें तो हम आपकी सेवाके लिए प्रस्तुत हैं।’ क्षुद्र पक्ष-भेदों और जरा जरासी बातोंके लिए उनमें होनेवाली लड़ाईयोंको भूल जानेका समय अब आगया है। इस समय एक ही विषय महत्त्वपूर्ण है। वह है इटालियन राष्ट्रका एकीकरण। सम्प्रति इटलीमें दो ही पक्ष प्रधान हैं—एक ऐक्यवादी और दूसरा पार्थक्यवादी। लोकसत्तावादियोंकी ओरसे मैं एकताका झण्डा खड़ा करता हूँ। जिनकी यह इच्छा हो कि इटली एक राष्ट्र हो जाय, इसके नीचे उनका एकत्र होना आवश्यक है।”

पूर्वोक्त विचार प्रकट करनेवाला डेनियल मेनिन, वेनिसमें आस्ट्रिया-का प्रभुत्व पुनः स्थापित हो जानेके कारण, देश त्याग करके पेरिसमें जा बसा था। विक्टर इमेन्युअलसे भेट करते समय जब उसने फ्रान्सके झण्डेके पास इटालियन राष्ट्रकी ऐक्य-वृद्धिका सूचक तिरङ्गी (हरा, सफेद और लाल) झण्डा देखा, तब उसे बड़ा आनन्द और सन्तोष हुआ। तबसे उसे निश्चय सा हो गया कि भविष्यतमें मेरी राजनैतिक भावना और आकांक्षा अवश्य सफल होगी। इससे उसके जीवनके अन्तिम दिन शान्ति-पूर्वक बीते।

इटलीके दूसरे महान् पुरुष, जोसेफ गैरीबाल्डीके विचार भी अब वे न रहे थे। डेनियल मेनिनके विचारसे उसके विचारोंका बहुत कुछ साम्य हो चला था। इसके पहले वह मेजिनीके विचारोंका कायल था। उसने, बहुत समय तक, भिन्न भिन्न राज्योंके क्रान्तिकारक आन्दोल-नोंमें हाथ बटाया था। गैरीबाल्डी बड़ा साहसी, संयोजक और शूर सेनापति था। उसके पास कोई १००० स्वयं-सेवक सदा तैयार

रहते थे। उन्हें उसने उत्तम सैनिक शिक्षा दी थी। अतएव इस छोटीसी ही सेनाके बल पर वह बड़े बड़े साहसके कार्य्य कर डालता था। १८४८ ईसवीसे इटलीके राज्योंमें जो क्रान्तिकारक आन्दोलन जारी हुआ था उसमें समय समय पर गैरीबाल्डीने बहुत योग दिया था। परन्तु उस समय उसकी कुछ चली नहीं—उसे सफलता न मिली। तबसे वह अमेरिका, इंग्लैंड, आफ्रिका, चीन इत्यादि देशोंमें तरह तरहके उद्योग करके, कालक्रमण कर रहा था। मई १८५४ ईसवीमें वह जिनोआ आया और वहाँसे अपनी जन्मभूमि नीसको चला गया। यहीं उसके बालबच्चे थे। घर पहुँचने पर उसके भाईकी सम्पत्तिमेंसे कुछ रकम उसे मिली। तब उसने केपेरेरा नामके टापूमें कुछ जमीन-जायदाद खरीद ली और वहीं कायम-मुकाम हो गया। इस टापूमें रहते हुए उसका ध्यान, फिर अपने देशके आन्दोलनकी ओर आकार्षित हुआ। अब वह इस फिकरमें रहने लगा कि कब फिरसे युद्धक्षेत्रमें जानेका अवसर हाथ लगे। पीडमाण्टकी राजनैतिक स्थिति और सुधारोंका विचार करने पर उसका चित्त उस राज्यकी सैनिक सेवा करनेको लालायित हो उठा। परन्तु कावूरकी ओरसे उसको ऐसा अवसर मिलनेमें अभी विलम्ब था।

विक्टर इमेन्युअलके पेरिससे इटली लौटने पर कावूर अपनी नीति अधिक धीरता और अधिक दृढ़तासे काममें लाने लगा। सेनाकी उन्नति और कोशकी वृद्धि पर वह विशेष ध्यान देने लगा। उसकी पर-राष्ट्रीय-नीति अधिक बलवती होने लगी, अर्थात् पर-राष्ट्रोंके साथ व्यवहार करनेमें भी अब वह विशेष साहस और निर्भीकतासे काम लेने लगा। लोकमत भी अब उसकी नीतिके बहुत अनुकूल होगया था। उसकी नीतिके जो विरोधी थे वे भी अब खामोश हो रहे। फिर

क्या था, पीडमाण्टके राजनैतिक पट पर कावूरको मनमाना खेल खेलनेकी आजादी होगई। उसके कुछ कामोंको कुछ लोग यद्यपि दिलसे नापसन्द करते थे, तथापि अब उसके विरोध करनेका साहस उनमें न रह गया था। उसके प्रतिपक्षी भी अब उसे कुछ अंशमें विश्वासकी दृष्टिसे देखने लग गये थे। उन्हें विश्वाससा होगया था कि कावूरको आजाद रहने देने पर वह जो करेगा अच्छा ही करेगा। क्योंकि अब लोगोंको अच्छी तरह ज्ञात होगया था कि इटालियन राष्ट्रका एकीकरण ही उसके शासनका प्रधान कार्य है। परन्तु इस ढँगकी कोई अधिकारयुक्त अर्थात् बाजाब्ता बात अभी तक कावूर अथवा उसके मन्त्रिमण्डलने प्रकट न की थी। पर उसके प्रतिपक्षी चाहते थे कि वह ऐसा कर दे; बल्कि मन्त्रिमण्डलसे यह कहलवानेके लिए पार्लियामेण्टमें भी ऊधम मचाया गया। उसके एक प्रतिपक्षीने पार्लियामेण्टमें बड़े जोर शोरसे कहा कि "कावूरकी यह नीति बेवकूफीसे भरी हुई है। इसके अनुसार आपको सफलता नहीं मिल सकती!" परन्तु कावूर तो था राज-नीति-पटुताका अर्क। उसके आगे उस प्रतिपक्षीकी दाल न गली। उस समय यदि कोई मामूली आदमी होता तो तीव्र वाग्वाणोंके प्रहारसे चिढ़ उठा होता और अपनी नीतिका स्पष्टीकरण करके या तो उसने उसका समर्थन किया होता या अपने आरोपको मिथ्या बतलाया होता। परन्तु कावूरने ये दोनों मार्ग छोड़ दिये। अपने क्षुब्ध प्रतिपक्षीको उसने शान्तिपूर्वक इतना ही कहा कि "पीडमाण्टका मन्त्री इटालियन राष्ट्रीयताके सदृश महत्त्वपूर्ण विषयसे ध्यान खींच ही नहीं सकता—उसकी उपेक्षा कर ही नहीं सकता। मन्त्रिमडलकी इच्छा और नीति इस विषयमें क्या है—यह प्रकट करनेका समय अभी नहीं आया है। अतएव आज ही इस विषयका निर्णयात्मक उत्तर नहीं

दिया जा सकता। यह विषय अभी गर्भावस्थामें है। अतएव जब तक वह पूर्ण दशाको प्राप्त न हो तब तक, मुझे बलवती आशा है, कि आप धैर्य्य धारण किये रहेंगे और उसके विषयमें अपना निश्चित मत न प्रकट करनेका जो अधिकार प्रातिनिधिक शासन-संस्थाके मन्त्रीको प्राप्त है उसका पूर्ण उपयोग उसे करने देंगे।" कावूरके गम्भीरता-पूर्वक उच्चारित इन वचनोंको सुनते ही उसके प्रतिपक्षीके मुँहमें मानों ताला पड़ गया!

९—पेरिसकी परिषद्।

विक्टर इमेन्युअल और कावूरका ध्यान इस समय क्रिमियाके युद्ध-की ओर विशेष रूपसे लगा हुआ था। उन्हें आशा थी कि यह युद्ध अभी बहुत दिनों तक जारी रहेगा और उसमें पीडमाण्टकी सेनाको अपना जोर दिखानेका एकाध बार अवसर और भी मिलेगा। परन्तु इसी बीच आस्ट्रिया ऐसी चेष्टा करने लगा जिससे उनकी यह आशा सफल न हो। वह बीचमें पड़कर रूससे सन्धि करनेका आग्रह करने लगा और फ्रान्स तथा इंग्लैंडकी भी बिचवाई करनेकी कोशिशमें लगा। अन्तमें फ्रान्स और रूसने उसकी मध्यस्थी स्वीकार करके सन्धि-की इच्छा प्रकट की। इंग्लैंड इस तजबीजसे अधिक सहमत न था। फ्रान्सकी उत्सुकता देखकर उसे यह योजना स्वीकार करना पड़ी। परन्तु फिर, सबकी सलाहसे, सन्धिकी शर्तोंका निर्णय करनेके लिए निश्चय हुआ कि पेरिसमें एक परिषद की जाय। इस परिषदमें आस्ट्रियाका प्रतिनिधि मध्यस्थके नातेसे विशेष रूपसे सम्मिलित होनेवाला था। इससे कावूर यह जान चुका था कि इस

परिषदमें पीडमाण्टके विशेष हितकी कोई बात न होगी । उसे यह भी पता लग गया था कि पीडमाण्टके प्रतिनिधिके साथ समानताका व्यवहार करनेके लिए अन्य राष्ट्र तैयार नही हैं। अतएव बड़े ही दुःखित हृदयसे उसने इस परिषदमें जाना स्वीकार किया । इसके बाद वह पेरिस चला गया। फिर थोड़े ही दिनोंमें, इंग्लैंडकी राय लेकर, नेपोलियनने प्रकट किया कि हम चाहते हैं कि पीडमाण्टका प्रतिनिधि अन्य प्रतिनिधियोंके बराबर समझा जाय—उससे बराबरीका व्यवहार किया जाय। तब लाचार होकर अन्य राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंको भी यह बात स्वीकार करना पड़ी। यह मुख्यतः कावूरके व्यक्तित्वका (Personality) —उसकी व्यक्तिगत विशेषताओंका—ही परिणाम था। इस घटनासे यह बात अच्छी तरह ज्ञात होती है कि योरपके राजनीति-विशारदोंमें कावूरका प्रभाव किस प्रकार बढ़ता जा रहा था । इस तरह उसे समानताका रिश्ता तो मिल गया, परन्तु इससे यह नहीं माना जा सकता था कि पीडमाण्टका प्रश्न परिषदके सामने, प्रधान रूपसे, पेश किया जा सकेगा। अतएव कावूरने इस परिषदमें बड़े ही मितभाषणसे काम लिया। इस बैठकमें यद्यपि उसे सङ्कुचित वृत्ति स्वीकार करना पड़ी तथापि, खानगी तौर पर उसने अपना बहुत काम बना लिया। वह परिषदके प्रतिनिधियों तथा अन्य प्रधान राज-काजियोंसे मिला और उनसे बातचीत करके उसने इटलीके राष्ट्रीय ध्येयके विषयमें उनकी सहानुभूति प्राप्त कर ली। तब जिन साधनों अर्थात गुप्त योजनाओं अथवा ऐसे परिचय इत्यादि जिनसे उसका काम अंशतः बन जानेकी सम्भावना उसे देख पड़ी उन सबसे काम लेनेका सिलसिला उसने जोर शोरसे जारी किया। नेपोलियनकी रानी साहिबाकी भी सहानुभूति प्राप्त करनेका

विचार उसने किया । इस कामके लिए उसने पहले रानीकी प्राणप्रिया सखी, मार्शनेस आव् एले, से बड़े ढँगसे स्नेह जोड़ा; फिर उसके द्वारा रानी साहिबासे अपनी अभीष्ट-सिद्धि कर ली । प्रिन्स नेपोलियन नामके एक राजवंशीय पुरुषने फ्रेञ्च दरबारमें उसका काम साधनेकी हामी भरी । इसी प्रकार तीसरे नेपोलियनको अपनी ओर करनेके लिए उसने उसके विश्वास-पात्र मनुष्य डाक्टर कान्यू (यह नेपोलियनका गृह-वैद्य था) से मेल-जोल पैदा किया । यह मैत्री उनकी अन्त तक गुप्त रही । अनेक महत्त्वपूर्ण राज-नैतिक विषयोंमें कावूरका इस मैत्रीसे बड़ा काम निकला । * अँगरेज-प्रतिनिधि लार्ड क्लेरेंडनको भी उसने अपनी ओर झुका लिया । हाँ, स्वयं परिषदकी बैठकमें अलबत्ते वह कुछ कार्य्य न कर पाया । तब उसने सोचा कि कोई काम ऐसा करना चाहिए जिससे कि परिषदको इटलीकी आवश्यकताकी चर्चा करने पर मजबूर होना पड़े । इसके लिए उसने नेपोलियनके सङ्केतके अनुसार, अँगरेज और फ्रेञ्च प्रतिनिधियोंके नाम एक सूची तैयार की । उसमें उसने पार्मा और मोडेना ये राज्य पीडमाण्टको मिलें और रोमाग्नामें विद्यमान् आस्ट्रियन सेना वापस बुला ली जाय, इन दो शर्तोंका उल्लेख प्रधानरूपसे किया था । फ्रेञ्च प्रतिनिधि और परिषदके अध्यक्ष, वेल्वेस्कीने परिषदके अन्तिम दिन उन शर्तोंपर विचार करनेकी सिफारिश की । इस पर आस्ट्रियन प्रतिनिधिने आपत्ति की कि इस सूचीकी शर्तोंका विचार करना इस परिषदके निश्चित कार्य-क्रमके बाहर है इसके सिवा इस विषयपर निश्चित मत देनेका अधिकार भी मुझे अपनी सरकारसे प्राप्त नहीं है । आस्ट्रियन प्रतिनिधिकी यह आपत्ति

* इन सब अवसरोंपर कावूर और नेपोलियनके बीचमें सलाह-सूत देनेका काम डाक्टर कान्यूने किया है ।

नियमानुकूल अर्थात् उचित थी । अतएव काबूरके प्रस्तावके साथ मौखिक सहानुभूति प्रकट करनेके सिवा पूर्वोक्त परिषद अधिक कुछ न कर सकती थी । काबूर यह पहलेहीसे जानता था । परन्तु तिसपर भी उसने यह विषय परिषदमें पेश करनेके लिए जो इतने जोड़-तोड़ लगाये उसका अभिप्राय यह था कि योरपके प्रधान राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंके सन्मुख आस्ट्रियाकी अन्याय-मूलक नीति और उसके बदौलत हुई इटलीकी दुर्दशाकी कहानी कहकर उनके हृदयमें इटलीके विषयमें सहानुभूति और आस्ट्रियाके विषयमें घृणा उत्पन्न की जाय । उसका यह हेतु अधिकांशमें सफल हुआ भी । अँगरेज-प्रतिनिधि, लार्ड क्लेरेंडन, ने इस विषय पर जो भाषण किया उसमें उसने आस्ट्रिया और पोपकी इटली-विषयक शासन-पद्धतिकी कड़ी आलोचना की और कहा कि इन दोनोंकी प्रतिगामी नीतिके कारण इटली, और विशेष करके पीडमाण्ट, की उन्नतिमें बड़ी बाधा पहुँच रही है । अतएव योरपके प्रत्येक प्रधान राष्ट्रका कर्तव्य है कि वह इटलीकी यह कठिनाई, यह रुकावट, दूर करनेका प्रयत्न करे । उसने तो यह भी कह डाला कि इटलीके उपकारके खयालसे ही नहीं, बल्कि अपने निजके हितकी दृष्टिसे भी, इस कर्तव्यके पालन करनेकी आवश्यकता उन्हें किसी दिन होगी । फ्रेञ्च प्रतिनिधिने भी आस्ट्रियाके व्यवहारको ऐसे ही प्रतिकूल शब्दोंमें याद किया । पर उसके शब्द कुछ सौम्य थे । इस प्रकार नैतिक विजय प्राप्त करके काबूरने अपना काम, अप्रत्यक्ष रीतिसे, खूब बना लिया । परिषद समाप्त होने पर वह लार्ड क्लेरेंडन और सम्राट् नेपोलियनसे खानगी तौर पर मिला । उसने यह बात उनके हृदयपर अङ्कित कर दी कि आस्ट्रियासे युद्ध किये बिना

इटलीका तरणोपाय नहीं। उन्होंने भी उसे आश्वासन दिया कि अच्छा, अवसर उपस्थित होने पर हम आपकी सहायता करेंगे। लार्ड क्लेरेंडनकी तत्कालीन मनोवृत्तिसे अर्थात् उसकी अनुकूलतासे, लाभ उठाकर सम्राट् नेपोलियनके सङ्केतके अनुसार, कावूर इंग्लैंडके लिए रवाना हुआ—यह जाननेके लिए कि ऐसा प्रसङ्ग आने पर इंग्लैंडसे कहाँतक सहायता मिल सकती है। इंग्लैंड पहुँचने पर वहाँके राज-काजियोंने उसके उद्देशसे अपनी सहानुभूति दिखलाई। परन्तु लार्ड क्लेरेंडनने जितना उत्साह दिखलाया था, उतना लार्ड पाल्मर्स्टन इत्यादि राजनीतिज्ञोंने प्रकट नहीं किया। यही नहीं बल्कि उनके संसर्गसे लार्ड क्लेरेंडनका उत्साह भी कुछ शिथिल हो गया। कावूरको इंग्लैंडसे प्रत्यक्ष सहायता लेनेकी विशेष आवश्यकता न थी। उसे तो उसका नैतिक पृष्ट-पोषण दरकार था। और यह मिलनेकी सम्भावना भी थी। क्योंकि उसने अपने मित्रोंके द्वारा इंग्लैंडमें ऐसा ही जोड़-तोड़ लगा रक्खा था। उसकी नींव सुदृढ़ रखनेकी भी व्यवस्था उसने की थी। इंग्लैंडकी रानी पहले-हीसे उसके बहुत पक्षमें थी। इस बार उससे भेट करके कावूरने उसे और भी अपने अनुकूल कर लिया। अस्तु। इतना काम करके वह ट्यूरिन लौट आया। लौटने पर उसने पार्लियामेंटके चेम्बरके सामने जो भाषण किया उसमें उसने इस विषयका जिक्र इस प्रकार किया है—

"बड़े बड़े विषयोंका फैसला कलमकी रगड़से नहीं होता। उसी प्रकार केवल राजनीतिज्ञताके बल पर लोगोंकी सारी परिस्थिति एक क्षणमें नहीं बदली जा सकती। यह सच है कि पूर्वोक्त परिषदमें इटली राष्ट्रके हितका कोई काम प्रत्यक्ष रूपसे न हुआ; तथापि मेरी रायमें उससे दो लाभ हुए हैं। एक तो यह कि उस परिषदके बदौलत इटलीकी दुरवस्था संसारके प्रधान राष्ट्रोंके विचारशील

राजनीतिज्ञोंके सामने पेश की जा सकी । यह बात हमारी वर्तमान स्थितिमें हमारे बड़े कामकी हुई । कमसे कम मेरा तो यही विश्वास है । दूसरा लाभ यह कि इटलीकी दुःख-कथा सुनकर अन्य राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने हमारे साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की । केवल इटलीके ही नहीं, बल्कि योरपके हितके लिए भी इस स्थितिका सुधार करनेकी आवश्यकता उन्होंने स्वीकार की । इन बातोंका परिणाम हमारे हकमें बहुत ही लाभकारक हो सकता है । इंग्लैंड और फ्रान्सके सदृश शक्तिशाली राष्ट्रोंके प्रकट किये हुए विचार और उनकी सम्मति व्यर्थ जायगी, यह बात बुद्धि कुबूल नहीं करती । अस्तु । इस सुपरिणामके लिए हमें अपना अभिनन्दन करना चाहिए । पर, साथ ही, हमें यह न भूल जाना चाहिए कि इसमें अनिष्टकी भी थोड़ी बहुत आशङ्का है । पूर्वोक्त परिषदके निमित्तसे आस्ट्रियन प्रतिनिधिके साथ बराबरीके नाते दो महीने तक मेरा निरन्तर सहवास रहा । उससे उसके सौजन्य और शिष्टताका मुझे उत्कृष्ट अनुभव हो गया । मुझे यह ज्ञात हो गया कि उनमें—आस्ट्रियनोंमें—और हममें समझौता होनेकी तिल मात्र सम्भावना नहीं । दोनोंकी इच्छा और दोनोंके मार्ग एक दूसरेके इतने विरुद्ध हैं कि उनमें समझौता कभी नहीं हो सकता। ”

इस भाषणका अन्तिम अंश तत्कालीन परिस्थितिके लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था । कावूरने इन शब्दोंका उच्चार क्या किया मानो राष्ट्रीयताकी कल्पनाका प्रकट रूपसे समर्थन ही किया । अतएव आस्ट्रियाने उसके इस भाषण पर आपत्ति की । उसने कहा—“ पीडमाण्टके प्रधान-मन्त्रीको समस्त इटलीके राज्य-व्यवहारके सम्बन्धमें ऐसे विचार प्रकाश्यरूपसे प्रगट करनेका अधिकार नहीं । ऐसी बात मुँहसे निकालना आस्ट्रियाके अधीन प्रान्तस्थ लोगोंको बलवेके लिए उभाड़ना है।”

परन्तु उस समय उसकी आपत्ति पर किसीने विशेष ध्यान न दिया। कावूरने ये बातें उस समय जान-बूझ कर कही थीं। क्योंकि अब उसे जो चाल चलनी थी—जो दाँव खेलना था—उसमें जीतनेके लिए इटलीके अन्य राज्योंके निवासियोंकी सहानुभूति और सहायता की आवश्यकता थी। यह कहाँ तक सम्भव है, इसीकी जाँचके लिए उसने पूर्वोक्त साहसपूर्ण उद्गार प्रकट किये थे। उसका परिणाम वैसा ही हुआ जैसा कि वह चाहता था। अर्थात् कावूरके पूर्वोक्त भाषण-के पश्चात् इटलीके कुछ राज्योंके पुरोगामी लोग—सत्ताधारी और असत्ता-धारी—आस्ट्रियाकी अधीनतासे अपना पिण्ड छुड़ानेके लिए अधीर हो उठे। इसके लिए वे दीनतापूर्वक पीडमाण्टका मुँह निहारने लगे। वे चाहने लगे—उनके हृदयमें यह भावना स्थान पाने लगी—कि पीडमाण्ट-के नेतृत्वमें इटलीका एक राष्ट्र बनाया जाय। वे पीडमाण्ट पर अपनी श्रद्धा-भक्ति प्रकट भी करने लगे। कावूरकी नीतिका अनुमोदन करनेके लिए टस्कनी राज्यके लोगोंने उसे उसकी अर्द्धमूर्ति (Bust) सादर भेंट की।* पोपकी राज्यकी ओरसे उसे एक सोनेका पदक अर्पण किया गया। इसके सिवा टयूरिनमें पीडमाण्टकी सेनाका विजय-स्मारक स्थापन करनेके लिए लांबर्डी राज्यके निवासियोंने चन्दा जमा किया। इटा-लियन राज्योंके लोकमतका यह रुख देख कर कावूरका उत्साह और भी बढ़ गया। अब उसने आस्ट्रियाकी धमकियोंकी परवा न करके अपनी नीतिके अनुसार काम करनेका निश्चय कर लिया। वह बड़ा कार्य्यकर्त्ता और चतुर पुरुष था। किसी एक ही पक्ष अथवा मनुष्य-विशेषसे चिपक रहनेवाला वह न था। उसके कार्य्यके लिए उपयोगी

---

* इस पर “Colui che la difese a viso aperto” (धीरता-पूर्वक अपने देशकी रक्षा करनेवाला मनुष्य) ये शब्द खोदे गये थे।

शक्ति जहाँ कहीं उसे मिलती वहाँसे वह उसे बड़े कौशलसे प्राप्त करता। परन्तु ऐसा करनेमें वह स्वयं उस शक्तिके अधीन न हो जाता था; बल्कि उसकी बागडोर अपने हाथमें रखनेकी क्षमता रखता था। उसके इस व्यवहारके कारण भिन्न भिन्न विचारों और सम्प्रदायोंके लोगोंसे उसका साबका पड़ा करता और उनकी ग्रहणीय बातोंको वह बड़े आनन्दसे ग्रहण करता था। परन्तु यह काम वह खानगी तौरपर करता था, राज-कर्म्मचारीके नातेसे नहीं। कभी कभी तो वह ऐसे काम गुप्तरूपसे किया करता था। ऐसी एक गुप्त बात प्रकट हो गई। वह यों है—कावूरके पेरिसपरिषदसे लौटनेके कुछ दिनों बाद कुछ इटालियन देशभक्तोंने टयूरिनमें राष्ट्रीय सभा (National Society) नामकी एक नई संस्था स्थापित की। उसका उद्देश यह था कि समस्त इटालियन राज्य पीडमाण्टमें सम्मिलित करके इटलीका स्वतन्त्र राष्ट्र निर्म्माण किया जाय। इस उद्देशकी सिद्धिके लिए काम करनेवाले दूत और प्रतिनिधि प्रत्येक राज्यमें फैले हुए थे। इस संस्थाका प्रधान सूत्रधार ला-फारिना नामका एक चतुर देशभक्त था। वह सिसिलीका रहनेवाला था। उसकी आन्तरिक इच्छा थी कि इस संस्थाको कावूरका आश्रय मिले। एतदर्थ उसने अपने एक मित्रके द्वारा कावूरसे भेंट की और उसपर अपनी इच्छा प्रकट की। उसकी संस्थाके कार्य्यक्रमसे कावूरकी उद्देश-पूर्तिमें अनायास बहुत सहायता होनेकी सम्भावना थी। अतएव कावूरने उससे अपना सम्बन्ध करना स्वीकार किया। परन्तु दोनोंमें यह बात तय पाई थी कि अरुणोदयके अर्थात् पौ फटनेके पहले ही छिपे छिपे आकर ला-फारिना कावूरसे बातचीत कर जाया करे। यदि पार्लियामेण्ट अथवा राज-कार्य्य-कर्ताओंको इसका जरा भी सूत लगे, तो कावूर

झट 'तोबा तोबा' करने लग जाय। सुदैवसे उनकी इस योजनाका पता उचित समयके पूर्व किसीको न लगा। सितम्बर १८५६ ईसवीसे लेकर चार वर्षों तक बहुधा रोज इन दोनोंकी मुलाकात छिपे छिपे हुआ करती। इसके बहुत समयके बाद यह हाल लोगोंको मालूम हुआ। परन्तु तब तक उसका बहुत काम बन चुका था। ला-फारिनाकी तरह कावूरने और भी एक बड़े आदमीसे इसी तरह अपना काम निकालना आरम्भ कर दिया था। वह पुरुष और कोई नहीं, प्रख्यात गेरीबाल्डी था। इसका संक्षिप्त वृत्तान्त पीछे कहा ही जा चुका है। अगस्त १८५६ ईसवीमें कावूरने उससे पहले पहल भेट की और आश्वासन दिया कि शीघ्र ही आपकी सहायता स्वीकार की जायगी। इसके बाद वह पीडमाण्टकी सेनाकी तैयारीमें लगा। उसने कुछ ऐसे काम नियमपूर्वक शुरू किये जिससे सेनाके काम-काजमें सुभीता हो। इसके लिए आवश्यक खर्चकी मंजूरी भी उसने अपनी महत्ताके बल पर प्राप्त कर ली। तात्पर्य्य यह कि अब वह अपना काम बड़े साहस-पूर्वक धड़ल्लेसे करने लगा। इसी बीच फ्रान्स और इंग्लैंडने नेपल्सके राजा और रोमके पोपको राय दी कि आप अपने अपने राज्योंमें मनमानी बन्द करके शासन-व्यवस्थामें उचित सुधार कीजिए। परन्तु उन्होंने इस पर विशेष ध्यान न दिया। आस्ट्रिया पर अलबत्ते इस चितावनीका कुछ असर हुआ और उसने अपने अधीन लाम्बार्डी और वेनिशिया प्रान्तोंके लोगोंको अधिक अधिकार—खास रियायतें—दे दिये। और भी तरह तरहसे वह उनका अनुरञ्जन करने लगा। वहाँके जो निवासी पीडमाण्टमें जा बसे थे उनकी जायदाद उसने जब्त कर ली थी। वह उन्हें आप होकर वापस कर दी। वहाँका गवर्नर लोगोंको अप्रिय

था। उसका तबादला कर दिया और उसकी जगह एक मिठबोला परन्तु मतलबी गवर्नर नियुक्त कर दिया। उसने राजनैतिक कैदियोंको छोड़ दिया। स्थानिक लोक-सभाओंका बहुतसा ऋण माफ कर दिया। स्वयं आस्ट्रियन सम्राट् फ्रान्सिस जोसेफ मिलान और वेनिसको गया। वहाँ जाकर उसने लोगोंको तरह तरहसे खुश करनेकी कोशिशें कीं। परन्तु उसकी सब कार्रवाईयाँ व्यर्थ गईं। जिस दिन (१५ जनवरी १८५७ ईसवी) वह सरकारी तौरपर मिलान नगरमें आया, उसी दिन ट्यूरिनके समाचार-पत्रोंने यह समाचार प्रकाशित किया कि पीडमाण्टकी सेनाका विजय-स्मारक स्थापित करनेके लिए स्थानीय इन इन लोगोंने इतनी इतनी रकमें दीं। उसीके साथ उन्होंने आस्ट्रियाके गतकालीन क्रूर और अमानुष कृत्योंकी एक सूची प्रकाशित करके उसके सम्राटकी शासन-पद्धतिकी तीव्र आलोचना की। उसके थोड़े ही दिन बाद ट्यूरिनकी म्युनिसिपालिटीने मिलान-निवासियोंका पूर्वोक्त दान प्रकट रूपसे, अभिनन्दन-पूर्वक, स्वीकार किया। इन दो घटनाओंसे आस्ट्रियाके तलवेकी आग सिरतक पहुँच गई। उसने अपने परामर्शदाता वकील या अधिकारी-(Changed affaires) के द्वारा कावूरसे शिकायत की—तीव्र आपत्ति की। परन्तु कावूर तो अब बड़ा ढीठ हो चला था। उसने उस वकीलसे साफ कह दिया,—

" पीडमाण्टने पेरिसकी परिषदमें इटलीकी तरफसे जो कार्य्य-सिद्धि की है उससे उऋण होनेके लिए कुछ रकम देनेकी इच्छा इटलीके भिन्न भिन्न प्रान्तवासियोंको होना स्वाभाविक है। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं। और समाचार-पत्रोंको-तो पीडमाण्टकी सीमामें कानूनने पूरी स्वतन्त्रता दे रक्खी है। कानूनकी दृष्टिमें जब यह आ जायगा कि वे अपनी स्वतंत्रताका दुरुपयोग कर रहे हैं तब उनका

उचित प्रबन्ध—उचित कार्रवाई—किया जायगा। यह तो हमारा कर्तव्य ही है और इसके पालन करनेसे हम कभी मुँह न मोड़ेंगे। अच्छा; हमारे यहाँके वर्तमानपात्र तो अधिकांशमें स्वतन्त्र हैं। तिस पर भी आप उनके व्यवहारकी हमसे शिकायत करते हैं—हमको डाँटडपट बतलाते हैं—परन्तु आपके देशके पत्र तो बिलकुल आपकी मुट्ठीही-में हैं। वे हमारे राजासाहब और हमारे देशकी तौहीन प्रकट रूपसे किया करते हैं। उनकी इस करतूत पर आपकी दृष्टि क्यों नहीं जाती, समझमें नहीं आता।"

यह निर्भीक उत्तर पाकर आस्ट्रियाने पीडमाण्टसे अपना सारा राजकाज बन्द कर दिया। कावूरने भी इसकी अधिक परवा न की। उसे तो किसी बहाने आस्ट्रियाको युद्धमें प्रवृत्त ही करना था। क्योंकि उसका निश्चय था कि जबतक आस्ट्रियन प्रभुताका पलायन इटलीसे न होगा, इटालियन राष्ट्रका निर्म्माण नहीं हो सकता। पीडमाण्टसे सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने पर आस्ट्रियाने लांबर्डी-वेनिशिया-प्रान्तकी प्रजाके आराधनकी मात्रा और भी बढ़ा दी। परन्तु वहाँके निवासी पिछले अत्यन्त कटु अनुभवको न भूले थे। अतएव वे आस्ट्रियाके मनोमोहक जालमें, मछलीकी तरह, फँस नहीं गये। उन्होंने डेनियल मेनिनके कथनके अनुसार, जिसका उल्लेख पहले किया ही जा चुका है पीडमाण्टकी सहायतासे इटलीका पुनरुज्जीवन करना ही अपना ध्येय माना था। इसी लक्ष्य पर उनकी दृष्टि थी। उनका कहना था कि—"हम यह नहीं चाहते कि आस्ट्रिया हम पर अधिक दयालुता दिखावे; बल्कि हमारी तो इच्छा है कि वह यहाँसे अपना डेरा-डण्डा उठा ले जाय।" ट्यूरिनमें स्थापित राष्ट्रीय सभा भी यही चाहती थी। इस तरहकी सहानुभूति और सहायतासे

कावूरको अपने कार्य्यमें खूब प्रोत्साहन मिल रहा था। तथापि, अब भी, मेजिनीको कावूरका यह कार्य्य-क्रम पसन्द न था। लोगोंको बलवेके लिए उभाड़ कर इटलीमें लोक-सत्ताक राज्य स्थापन करना वह अब भी सम्भव समझता था, अतएव वह इन्हीं दिनों इंग्लैंडसे लुक छिप कर जिनोआ आया और वहाँके क्रान्तिकारक पक्षकी सहायतासे उसने इटालियन लोक-सत्ताक राज्यस्थापनाका अन्तिम प्रयत्न किया। परन्तु उसके अन्य पूर्व-प्रयत्नोंकी तरह इसमें भी उसे सफलता न प्राप्त हुई। इससे उसके अनुगामियोंको बड़ी हानि उठानी पड़ी। इस घटनाका उल्लेख इतिहासमें Sapri expedition के नामसे किया गया है। इस घटनाके बादसे मेजिनीका कार्य्य-क्रम लोगोंको नापसन्द हो गया। नरम और मूलगामी (Radical) सुधारवादी दलोंकी दोनों शाखाओंने एकमत होकर कावूरके मार्गको ही स्वीकार किया। अब भी कुछ मूलगामी लोग कावूरके कार्य्यसे अलग रहा करते थे। उसी प्रकार, अनियन्त्रित सत्तावादी और प्रतिगामी दल (Reactionaries) के कुछ लोग भी उसके विरुद्ध थे। परन्तु कावूरने इनमेंसे किसीकी परवा नहीं की। इससे उसके कार्य्यकी उन्नति झपाटेसे होती गई। वह स्वयं अत्यन्त उद्योगी और दक्ष था। उसका स्वभाव भी बहुत अच्छा था। अतएव असफलताका सामना करनेकी आशङ्का उसे बहुत ही कम रहती थी। उसकी कार्य्य-क्षमता भी बड़ी विलक्षण थी। बड़े बड़े महत्त्व-पूर्ण राजकाजोंमें निमग्न रहते हुए भी छोटी मोटी बातों पर उसकी नजर रहा करती थी। वह सबेरे पाँच बजेसे पहले सोकर उठता और आठ बजे तक पत्रव्यवहार, खानगी काम, तथा गुप्त सलाह-मशवरा, करता था। फिर कुछ खाता था। इसके बाद सबका सलाम लेता और प्रेम भरे शब्दोंसे उन्हें सन्तुष्ट करता हुआ वह अपने दफ्तर जाया करता।

दिनमें अधिकतर दफ्तरमें काम करता और सरकारी कामसे आये हुए लोगोंसे मुलाकात करता। तीसरे पहर भिन्न भिन्न मुहकमोंके दफ्तरोंमें जाकर उनके अधिकारियोंको आवश्यक सूचनायें और हुक्म देता। फिर वह राजा साहबसे भेट करने जाता। शामके वक्त घर आता। आकर कुछ समय अपनी भतीजीसे गप-शप करनेमें बिताता। कोई छः बजे अपने जेठे भाईके साथ भोजन करता। उसके बाद अपने अध्ययन-भवन (Studying room) में चला जाता। एक सिगरट पीकर कुछ देर आराम करता और फिर सरकारी कागज-पत्र देखनेमें लग जाता। कोई १२ बजे रात तक काम करके सो जाता। कभी कहीं भोजन या नाटक इत्यादि मनोरञ्जनके काममें लग जाता, तो रात्रिका कार्य्य-क्रम भङ्ग हो जाता। परन्तु बाकीके सब काम यथावत् नियमानुसार हुआ करते। उनमें कभी व्यत्यय न आता। रातको १२ बजेके बाद वह सहसा कभी न जगता था। उसके इस नियमित व्यवहारके कारण उसके सब काम सुचारु रूपसे होते थे। भिन्न भिन्न दावित्व और महत्त्व-पूर्ण तथा कठिन कामोंमें भी उसके मनकी शान्ति भङ्ग न होती थी। उन्हें वह सहज ही पूरा कर लेता था। एक कामके करनेमें यदि कोई दूसरा झमेलेका काम आजाता, तो उसे भी वह उसी समय सुलझा देता। इस विद्यामें वह सिद्ध-हस्त था। इतने सब कामकाज करने पर भी महत्त्वपूर्ण पत्रव्यवहार वह स्वयं करता था। भिन्न भिन्न विषयोंपर लिखे गये उसके तीन हजार-से भी ऊपर पत्र अब छपकर प्रकाशित हुए है। पाठको ! विचार कीजिए, उसके मज्जातन्तु कितने बलवान् होंगे। इन पत्रोंमें उसका सुस्वभाव, स्पष्ट-हृदयता, उदार-भाव, (कार्य्यसिद्धिके लिए) व्याकुलता, मिलनसारी, सार्वजनिक हितकी उत्कट लालसा और तन्नि-

मित्त कभी कभी होनेवाला मनःक्षोभ, इत्यादि बातें स्पष्ट झलकती हैं । इन सबसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात जो प्रकट होती है वह है उसके हेतुकी शुद्धता—निर्म्मलता । उसके राष्ट्र-सेवाके भाव या उद्देशसे उसके वैयक्तिक हिताहितका लेशमात्र भी सम्पर्क कभी नहीं हुआ । कावूरके सदृश राज-काजी और सत्ताभिलाषी पुरुषमें यह उच्च गुण विद्यमान था, इसीसे वह केवल ९ ही १० वर्षोंकी अल्प अवधिमें इटालियन राष्ट्रकी इमारत खड़ी कर सका——सो भी ऐसी परिस्थितिमें जब कि बातोंका बतङ्गड होते और अर्थका अनर्थ करते देर न लगती थी । संसारमें आज तक कितने ही महत्त्वाकांक्षी और महान् पुरुष हो गये हैं, परन्तु उनमेंसे बहुतोंके ध्येय और कार्य्यके मूलमें या तो व्यक्तिगत महत्त्वका या अन्य कोई ऐसा भाव आपको कुछ न कुछ मिलेहीगा । बिस्मार्क कावूरका समकालीन था । वह था भी कावूरकी टक्करका आदमी । परन्तु वह भी इस गुणमें उसकी बराबरी नहीं कर सकता । आधुनिक समयके ऐतिहासिक महान् पुरुषोंमें यह गुण हमारे देशके समर्थ रामदासमें * अलबत्ते दिखाई देता है । योरपमें कावूरके अतिरिक्त यह गुण किसीमें नहीं देख पड़ता । इसी लिए अन्य सब महान् पुरुषोंकी अपेक्षा कावूरकी योग्यता और महत्ता श्रेष्ट मानी जाती है, जो सर्वथा उचित भी है ।

१०—प्लोम्बियरकी गुप्त-मन्त्रणा ।

कावूरने जो काम करना निश्चय किया था उसकी सिद्धिके लिए उसे पहले पहल किसी बलवान् राष्ट्रकी सहायता आवश्यक थी । क्योंकि

---

* समर्थ रामदास प्रातःस्मरणीय महाराज शिवाजीके गुरु थे । आपका विशेष हाल जाननेके लिए ‘ हिन्दी दास-बोध ’ को देखिए ।

आस्ट्रियाके सदृश प्रबल राष्ट्रसे जूझनेका सामर्थ्य अकेले पीडमाण्टमें नहीं था। अन्य इटालियन राज्योंकी ओरसे यद्यपि उसे सहायता मिलनेकी आशा थी तथापि वह सहायता सैनिक दृष्टिसे न तो उपयुक्त ही थी और न महत्त्वपूर्ण ही। इसके सिवा जब तक आस्ट्रियाका पराजय न हो जाय उस सहायता पर अवलम्बित रहना उचित न था। सैनिक दृष्टिसे, इस सहायताका मूल्य मामूली भीड़-भब्बरसे अधिक न था। नैतिक दृष्टिसे उसकी महत्ता अवश्य बहुत अधिक थी। परन्तु उससे लाभ उठानेके पहले आस्ट्रियाको समर-भूमिमें परास्त करना आवश्यक था। इस काममें उसे सिर्फ फ्रान्ससे ही सहायता मिलनेकी आशा थी। क्योंकि पेरिसकी परिषदके बादसे इंग्लैंड और आस्ट्रियामें मेल बढ़ता जा रहा था। फ्रान्सका सम्राट्, तीसरा नेपोलियन, भी कुछ शिथिल हो गया था। परन्तु उसे तो कावूरने ज्यों त्यों करके फिरसे अपनी सहायताके लिए उत्सुक कर लिया। इतनेहीमें एक ऐसी अनिष्ट घटना होगई कि जिससे उसका दिल टूटने लगा। फेलिस आरसिनी नामके एक इटालियन देशभक्तने जनवरी १८५८ ईसवीमें नेपोलियनके खून करनेका प्रयत्न किया। नेपोलियन और आरसिनी दोनों युवावस्थामें साथी रह चुके थे—एक ही साथ रह और बर्त चुके थे। आरसिनी इटलीकी एक क्रान्तिकारक गुप्त संस्थाका सभासद था। उस समय नेपोलियनकी पूर्ण सहानुभूति उस संस्थाके साथ थी। यही नहीं, एक बार तो वह उसमें प्रकट रूपसे शरीक भी हुआ था। आगे चलकर, दैववश नेपोलियन फ्रान्सका सम्राट् हो गया। तब आरसिनी आत्मरक्षाके लिए पेरिस आ बसा। वह और उसके पिछ-लगुओंकी इच्छा थी कि नेपोलियन इटलीको स्वतन्त्रता प्राप्त करादेनेके काममें नेतृत्त्व स्वीकार करे। नेपोलियन उसमें आनाकानी कर रहा था।

शायद इसीसे जोशमें आकर आरसिनीने उसके वधका प्रयत्न किया होगा। अस्तु। काबूरको इन क्रान्तिकारकोंकी कार्रवाई बिलकुल पसन्द न थी। वह ऐसे कामोंसे सदा अलिप्त रहता था। तथापि इस दुर्घटनाके कारण उसके मनमें यह भीति उत्पन्न हो गई कि कहीं नेपोलियनकी सहानुभूति हमारे अभीष्टके साथ नष्ट न हो जाय। इसका यह भय कुछ अंशमें सच भी निकला। काबूर बड़ा होशियार आदमी था। उसने पहलेहीसे आरसिनीके षड्यन्त्रसे सम्बन्ध या सहानुभूति रखनेवाले लोगोंको पीडमाण्टकी सीमामें न आने देनेका प्रबन्ध कर रक्खा था। परन्तु इससे भी नेपोलियनकी दिलजमई न हुई। इस दुर्घटनासे नेपोलियन बाल बाल बच गया। एतदर्थ विक्टर इमेन्युअलने अपना दस्तखती अभिनन्दन पत्र देकर एक सरदारको विशेष रूपसे उसके पास भेजा। नेपोलियनने उससे शिकायत की कि काबूरने काफी प्रबन्ध नहीं किया। उसके प्रबन्धसे उसकी कमजोरी प्रकट होती है। उसने यह भी ध्वनित किया कि पीडमाण्टकी सरकारने यदि इससे तीव्र उपायोंकी योजना न की, तो हम आस्ट्रियासे सन्धि कर लेंगे। परन्तु इस समय विक्टर इमेन्युअलने साहस रख कर नेपोलियनको मुँह तोड़ जवाब दे दिया। उसने लिखा--"आपके विश्वासपात्र मित्रके साथ ऐसा व्यवहार करना आपको उचित नहीं; मैंने आज तक किसीकी धमकीकी परवा नहीं की। मेरे राष्ट्रीय गौरवकी—जिसके लिए मुझे लोगों और भगवानके सामने उत्तर देना है—रक्षा करना मेरा धर्म्म है। कोई ८५० वर्षोंसे पीडमाण्ट निष्कलङ्क उसकी रक्षा करता आया है। आज यदि कोई मुझे नीचा दिखानेकी चेष्टा करे तो मैं उसके आगे सिर न झुकाऊँगा। इतना होते हुए भी मेरी इच्छा है कि मैं आपका सच्चा मित्र बना रहूँ।" पहले ही कह चुके हैं कि नेपोलियन

मनोविकारवश मनुष्य था। अतएव इस उत्तरका प्रभाव उस पर खासा हुआ। उसने विक्टर इमेन्युअलको नरमीका एक पत्र भेज दिया। इधर आरसिनीने कैदखानेसे नेपोलियनके नाम एक अत्यन्त हृदय-द्रावक और चित्तवृत्तियोंको उद्दीप्त करनेवाला पत्र लिखा। उसमें उसने इटालीको स्वातन्त्र्य प्राप्त करानेमें सहायता देनेके लिए बड़े आर्त स्वरमें उससे विनती की थी।* उसका भी अभीष्ट प्रभाव उसके मन पर पड़ा। इससे इटालियन कार्य्यके साथ उसकी सहानुभूति फिरसे जागृत हो गई। आरसिनीको अपने अपराधमें मृत्युदण्ड मिला। इसके एक दो महीने बाद नेपोलियनने उसका यह अन्तिम पत्र प्रकाशित करनेकी आज्ञा दे दी। अस्तु। अब नेपोलियन इस बातका विचार करने लगा कि कावूरको किस बातमें किस तरह सहायता दूं। इस तरह उसकी सहानुभूतिसे कावूरके मार्गकी एक रुकावट तो दूर हो गई। परन्तु अभी उसे एक और बाधासे पार पाना था। पीडमाण्टके पुरोगामी पक्षके अधिकांश लोगोंका खयाल नेपोलियनके विषयमें बुरा था। उससे मेल करके उसकी सहायता प्राप्त करनेका विचार उन्हें अभिमत न था। उन्हें डर था कि कहीं ऐसा न हो कि आगे-पीछे यह इटली पर अपनी प्रभुता कर बैठे—अपना आतङ्क जमा ले। स्वयं कावूरको भी यह शङ्का थी। परन्तु उस समय उसे स्वकार्य्यकी सिद्धिके लिए उससे मैत्री किये बिना दूसरी गति ही न थी। तथापि कावूरको यह विश्वास था कि नेपोलियन यदि ऊपरा-चढ़ी करनेका जोड़-तोड़ लगावेगा तो इंग्लैंडसे मन्त्रणा करके पलड़ा समतौल रख लेंगे। परन्तु प्रकाश्य रूपसे यह प्रकट कर देना प्रयोजनीय न था। अतएव इस तजवीज-

* "राजन्! मेरे देशको स्वतन्त्रता प्राप्त करा दीजिए। आपको ढाई करोड़ इटालियनोंकी आशीष मिलेगी!" उसके ये शब्द विशेष मर्मपूर्ण थे।

का जिक्र करना असम्भव था। तथापि परिस्थितिका उद्घाटन करके पार्लियामेण्टको यह निश्चय करा देनेमें उसने कोई बात उठा न रक्खी कि इस स्थितिमें फ्रेञ्च राष्ट्रसे सहायता प्राप्त करना आवश्यक है। उसने कहा—अपनेसे भिन्न हित-सम्बन्ध (Interest) रखनेवाले दूसरे राष्ट्रको क्षुब्ध न करके प्रागतिक नीतिका अवलम्बन करनेकी जो सदिच्छा हमारे भूतपूर्व राजा साहबकी थी, उसका पालन करना अब असम्भव होगया है। × × × × × × × × × अब यह छिपानेमें कुछ सार नहीं कि परिस्थिति अब बिकट और भयङ्कर हो गई है। सरकार और राष्ट्र दोनोंको इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। जिस राष्ट्रका मैं उल्लेख कर रहा हूँ उसके सामर्थ्यसे अपने सामर्थ्यकी तुलना कीजिए। तब, सज्जनो, आप जान जायँगे कि हमारी स्थिति सचमुच खतरेमें है। × × × × इस समय हमारे सामने सबसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न यहीं है कि यह अशुभ, यह खतरा, किस प्रकार नष्ट हो, अथवा हम किस प्रकार उसका सामना करें? इस प्रश्नको अच्छी तरह हल करनेके लिए हमने उन पश्चिमी राष्ट्रोंसे मित्रता करनेका प्रयत्न किया है जिनके हितसम्बन्ध हमारे हित-सम्बन्धोंसे भिन्न नहीं हैं। × × × × × × राज-काजके प्रश्न यद्यपि सामान्यतः राजनीतिज्ञोंके द्वारा कानून, बुद्धिवाद, अर्थात् तर्कना और लेखन-चातुर्य्यकी सहायतासे हल किये जाते हैं, तथापि उनका अन्तिम निर्णय विभिन्न राष्ट्रोंके सैनिक बल पर ही अवलम्बित रहता है। और अदृष्ट ऐसे न्याय्य पक्ष—सत्पक्ष—के ही सदा अनुकूल नहीं रहता। परन्तु जिसका सैनिक सामर्थ्य अधिक होगा उसके अनुकूल अदृष्टका होना विशेष सम्भवनीय है। अतएव सङ्कटके समय जब युद्ध-भूमि पर खड़ा होनेके लिए यथेष्ट सैनिक बल किसी राष्ट्रमें न हो

तो उसे अपने मित्रोंकी सेना अपनी सहायताके लिए काममें लानी चाहिए—इसके सिवा दूसरा उपाय नहीं।"

इस आशयका भाषण उसने अपरैल १८५८ ईसवीमें किया था। इसके कोई डेढ़ महीने बाद नेपोलियनका वैद्य, डाक्टर कान्यू (इसका परिचय पहले ही कराया जा चुका है) नेपोलियनका गुप्त सन्देश लेकर यात्राके निमित्तसे ट्यूरिनमें आया। उसने कावूर और विक्टर इमेन्युअलसे गुप्त रूपसे मुलाकात की और नेपोलियनका गुप्त सन्देश उन्हें सुनाया। निश्चय हुआ कि शीघ्र ही कावूर किसी न किसी बहाने प्लोम्बियर्सको जाकर नेपोलियनसे जो वहाँ सैर करनेके लिए गया था, भेट करे। ठहरावके अनुसार कावूर बिलकुल गुप्त रूपसे यात्रा करता हुआ २० जुलाई, १८५८ ईसवीको प्लोम्बियर्स जा पहुँचा। दूसरे दिन सवेरे उसने नेपोलियनसे भेट की। शिष्टाचार-की बातें हो जाने पर नेपोलियनने कावूरसे कहा कि आस्ट्रियासे यदि पीडमाण्टकी लड़ाई छिड़ी तो मैं निश्चय-पूर्वक पीडमाण्टकी सहायता करूँगा। पर शर्त यह है कि युद्धका आरम्भ आस्ट्रियाकी ओरसे होना चाहिए और युद्धका अवसर ऐसा होना चाहिए, जिसका योरोपियन राष्ट्र अनुमोदन करें। यह न मालूम होना चाहिए कि युद्ध क्रान्ति-कारक पक्षकी इष्टसिद्धिके लिए जान बूझकर छेड़ा गया है। ये शर्तें तय होजानेके बाद दोनोंमें इस बातकी चर्चा होती रही कि शर्तोंका पालन किस प्रकार किया जाय। विचार करते करते वे इस नतीजे पर पहुँचे कि युद्धके अभीष्ट कारणके लिए आवश्यक परिस्थिति मोडेना-राज्यमें विद्यमान है। मोडेना और पार्मा ये छोटेसे जागीरी राज्य थे। वे पीडमाण्टकी पूर्वसीमासे लगे हुए थे। उन राज्योंकी मासा और केरेराकी प्रजा स्थानीय ड्यूकके जुल्मी शासनसे अत्यन्त दु:खी थी। अतएव कावूरने यह सोचा कि वहाँकी प्रजासे विक्टर

इमेन्युअलसे सहायता मँगवाई जाय । तब विक्टर इमेन्युअल उनका पक्ष लेकर मोडेनाके ड्यूकको एक कड़ा पत्र लिखें । बस काम हो जायगा । क्योंकि निश्चय सा था कि आस्ट्रियाकी शय होनेके कारण वहाँका ड्यूक उस पत्रका उत्तर उद्धतता-पूर्वक देगा । तब विक्टर इमेन्युअल मासा शहरको अपने अधीन कर लें । इसपर आस्ट्रिया आप ही युद्धके लिए तैयार होगा । परन्तु इस प्रकार युद्ध आरम्भ हो जाने पर नेपल्स और रोमके सत्ताधारियोंपर इसका अनिष्ट प्रभाव पड़ेगा । इसका क्या प्रबन्ध किया जाय, यह समस्या उत्पन्न हुई । क्योंकि एकके साथ जारकी और दूसरेके साथ फ्रान्सके केथोलिक लोगोंकी सहानुभूति थी । अतएव नेपोलियन उनसे कटुता या मनोमालिन्य पैदा करनेको तैयार न था । परन्तु कावूरने इस जटिल प्रश्नको हल कर दिया । उसने कहा— " इटलीसे आस्ट्रिया किस तरह निकाल दिया जाय, यह तय हो जाने-पर बाकी सब बातें आप ही आप तय हो जायँगी । १८४९ ईसवीसे रोममें जो फ्रेञ्चसेना रक्खी गई है उसकी सहायतासे सम्राट् पोपके देशोंमें शान्ति रख सकेंगे । सिर्फ आस्ट्रियाके अधिकृत रोमाग्ना तह-सीलके लोगोंको गदर करनेका मौका आप दे दीजिए । नेपल्सके विषयमें मौनावलम्बके सिवा आपको कुछ भी करनेकी आवश्यकता नहीं । वहाँकी प्रजा परिस्थितिका उचित उपयोग करनेमें समर्थ है ।" कावूरकी यह राय सम्राटको पट गई । फिर उस युद्धके स्वरूप और कार्य्यके विषयमें बातचीत छिड़ी । आस्ट्रियाको इटलीसे निकाल देनेकी बात नेपोलियनने स्वीकार की । निश्चय हुआ कि इसके बाद रोमाग्ना सहित इटलीके उत्तरी * प्रदेशका एक ही स्वतन्त्र राज्य विक्टर इमे-

* यह तय हुआ था कि " किंगडम आव् अपर इटली " यह नाम इसका रक्खा जाय और इसमें पीडमाण्ट, जिनोआ, मोडेना, पार्मा, रोमाग्ना, लाम्बर्डी—वेनिशिया मार्चेस आव् अनेकानो इतने राज्योंका समावेश किया जाय ।

न्युअल स्थापन करे और सेवाय तहसील फ्रान्सको दे दी जाय। नेपो-लियनकी इच्छा थी कि नीस-शहर भी फ्रान्समें मिलाया जाय। परन्तु कावूरने उसे समझा दिया कि यह काम इटालियन राष्ट्रीयताका विघातक होगा। तब उसने उस समयके लिए यह आग्रह छोड़ दिया। इसके उपरान्त युद्धके साधनोंका विचार होने लगा। नेपोलियनने कहा—यह प्रबन्ध होना आवश्यक है कि इस युद्धमें आस्ट्रियाको किसी भी राष्ट्रसे सहायता न मिलने पावे। रूस, इंग्लैंड, और प्रशियाकी तटस्थताका मुझे पूर्ण विश्वास है, तथापि आस्ट्रियाके पास सैनिक बल बहुत है और वह दृढ़ भी खूब है। प्रत्यक्ष विएन्नापर धावा किये बिना इटली परसे आस्ट्रियाका प्रभुत्व नष्ट करना कठिन है। अतएव इस युद्धके लिए कमसे कम तीन लाख सैन्य तैयार करना चाहिए। इसमेंसे दो लाख तो मैं दे दूँगा; बाकी एक लाख सेना इटालियन लोगोंकी तैयार होनी चाहिए। ११ बजे दोपहरसे लेकर तीसरे पहर ३ बजे तक यही सलाह-मशवरा होता रहा। तीन बजे बाद कावूरको छुट्टी मिली। पर चार बजे फिर उसे नेपोलियनने घूमनेके निमित्तसे बुलाया।

निश्चयके अनुसार चार बजे कावूर और नेपोलियन एक सुन्दर फिटनमें बैठकर घूमनेके लिए निकले। इस समय सारथिका काम स्वयं नेपोलियन कर रहा था। साथमें सिर्फ खिदमतगार था। प्लोम्बि-यर्ससे बाहर होते ही नेपोलियनने अपने भतीजे, प्रिन्स जेरोम नेपो-लियन, का विवाह विक्टर इमेन्युअलकी कन्या (उसका नाम था क्लाटिल्डी) से करा देनेकी बात कावूरसे छेड़ी। परन्तु प्रिन्स नेपो-लियनका कुल-शील विक्टर इमेन्युअलके कुल-शीलसे हलका था। अतएव उसे अपनी कन्या देनेकी बात विक्टर इमेन्युअलको कहाँ तक

जँचेगी, इसका ठीक अनुमान कावूर न कर सका । उसने सम्राटको कोई निश्चयात्मक उत्तर नहीं दिया । उस बातचीतसे कावूर इतना जान गया कि नेपोलियन इस विषय पर बड़ा जोर दे रहा है । यदि इसकी बात न मानी जायगी तो अपनी अभीष्ट—भावी राजकाजकी—सिद्धिमें बाधा पड़नेकी सम्भावना है । अतएव उसने अपने स्वामी विक्टर इमेन्युअलको इस पर राजी कर लेनेका निश्चय किया । वह कोई दो दिन प्रोम्बियर्समें रहा । फिर वहाँसे जर्म्मनीको गया । वहाँ उसे कितने ही राजों, राजनीतिज्ञों, तथा प्रसङ्गवश आये हुए रशियन प्रतिनिधि अर्थात् वकीलसे बातचीत करनेका अवसर मिला । इससे उसे निश्चय होगया कि भावी युद्धमें इन दोनों राष्ट्रोंकी ओरसे आस्ट्रियाको जरा भी सहायता मिलनेकी आशङ्का नहीं । तब जर्मनीसे ही उसने विक्टर इमेन्युअलको एक हृदय-द्रावक पत्र लिखकर उसकी कन्या प्रिन्स नेपोलियनको दे देनेके लिए प्रार्थना की । उसने लिखा—"इटालियन राष्ट्रके भावी कल्याणके लिए यह अत्यन्त दुःसह स्वार्थत्याग करना आवश्यक है । इसके बिना सम्राट् नेपोलियनको सन्तोष न होगा और उसके सन्तुष्ट हुए बिना उसकी सहायताके बल पर रचा गया अपना यह राजकीय व्यूह सफल न हो सकेगा ।" उसने विक्टर इमेन्युअलकी चार कन्याओंके उदाहरण देकर यह भी दिखलाया कि "राजकन्याओंके विवाह चाहे कितनी ही सावधानी और दक्षतासे किये जायँ, उन्हें वे हमेशा सुखकर ही होंगे, इसका निश्चय नहीं ।" इसके अतिरिक्त उसने ला मार्मोराको भी एक पत्र लिखा कि मैंने विक्टर इमेन्युअलको यह यह लिखा है । यदि आपसे वे राय लें तो आप कृपा करके ऐसी चेष्टा कीजिएगा कि जिसमें वे मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लें ।"*

* इस विषयमें कावूरकी मनःस्थिति कितनी विचित्र होगई थी—वह कितना घबड़ा गया था यह—बात उसके इस पत्रांशसे ज्ञात होगी—

कावूरकी यह बात विक्टर इमेन्युअलको पसन्द आना कभी सम्भव न था। उसके सामने यह बड़ी समस्या उपस्थित हो गई। परन्तु वैयक्तिक विचार और हिताहितकी अपेक्षा राष्ट्रीय विचार और राष्ट्रके हितकी ओर विशेष ध्यान रखनेके लिए आवश्यक मनोधैर्य्य और मानसिक सामर्थ्य उसमें था। अतएव वात्सल्यके कारण होनेवाली हृदयकी व्याकुलताको ताकमें रख कर उसने, कुछ समयके बाद, यह बात स्वीकार कर ली। अस्तु। कावूर शीघ्र ही जर्मनीसे स्वदेश लौट आया। तबसे आस्ट्रियाके साथ युद्ध छिड़नेके दिन तक उसका शासन-काल बड़े महत्त्वका है। इस समयमें कावूरका मन तरह तरहके विचारों और चिन्ताओंसे अत्यन्त व्याप्त हो गया था। उसके इस महत्कार्यकी सिद्धि इस भावी युद्धके फलाफल पर ही सर्वथा अवलम्बित थी। अतएव उसने निश्चय कर लिया कि युद्धका परिणाम अपने अनुकूल निकालनेके लिए जितने उपाय आवश्यक देख पड़ेंगे उनका अवलम्बन करनेसे मैं न चूकूँगा। नेपोलियनने यद्यपि उसे बड़ी भारी सैनिक सहायता देनेका वादा किया था तथापि इतने

"सम्राटसे मैत्री करना और साथ ही, उसी समय, उसका ऐसा अपमान करना जिसे वह भूल न सके, बड़ी भारी गलती होगी। मैंने राजा साहबको पत्र लिख कर कातर-भावसे प्रार्थना की है कि—'साहस-सूचक यह वर्तमान उत्कृष्ट अवसर कुलीनताकी कल्पनाके फेरमें पड़कर आप न खो-दीजिएगा।' राजा साहब जब आपसे राय लें, मेरी आपसे प्रार्थना है, कि आप मेरे कथनकी पुष्टि करें। इसी बात पर अपने राजाके मुकुट और हम लोगोंकी भवितव्यताका फैसला होनेवाला है। अतएव या तो आप इस काममें हाथ ही न डालें, या डालें तो फिर इसमें विजय प्राप्त करनेके लिए जो जो बातें सहायक होनेवाली हों उनकी अवहेलना आपको न करनी चाहिए—उनके करनेमें आपको उपेक्षा न दिखानी चाहिए।"

पर उसकी दिलजमई न हुई। क्योंकि एक तो नेपोलियन 'चञ्चलचित्त' था; उस पर सर्वथा ही अवलम्बित रहना जोखोंका काम था। दूसरे इटलीके सभी काम यदि उसकी सहायतासे पूरे हुए तो आस्ट्रियाकी तरह इटली-पर उसकी नीयत विगड़ जानेका डर उसे दिखाई देता था। अतएव उसने यह निश्चय किया कि पीडमाण्टकी सेनाकी सहायताके लिए इटलीके देशभक्त स्वयं-सैनिकोंकी भी सहायता ली जाय। यह सहायता गेरीबाल्डीकी ओरसे मिल सकती थी। अतएव कावूरने उसे तुरन्त बुलाया और कहा कि आप सब तरहसे तैयार रहिए। आज तक गेरीबाल्डीका जीवन इटलीके क्रान्तिकारक दलकी सहायतामें बीता था। अतएव जब कावूरने उससे यह प्रकट सम्बन्ध किया तब तो पीडमाण्ट तथा अन्य प्रान्तोंके वैध-आन्दोलनकारियोंने तीव्र आपत्ति की। परन्तु कावूरने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया। सच पूछिए तो अब उसके पास जबानी-जमाखर्चके लिए वक्त ही न था। जिन जिन उपायोंसे उसने अपने कामकी बुनियाद मजबूत होती देखी, उन्हीं कामोंको वह करता गया। इसके लिए उसने पार्लियामेण्टकी मंजूरी की भी राह न देखी। इस समय वह सब काम अपनी ही मरजीसे कर रहा था। पर उसे विक्टर इमेन्युअलका पूरा जोर था। आस्ट्रियासे युद्ध करनेकी इच्छा विक्टर इमेन्युअलको कावूरसे भी अधिक तीव्र थी। कभी कभी तो राजकीय-नीति (Diplomacy) की रक्षाके लिए कावूरको राजाकी यह उत्सुकता मर्य्यादित करना पड़ती थी। उसे एक और भी मार्केकी बात इस समय साधना थी। इसके लिए उसे अपना दिमाग बहुत कुछ छीलना पड़ता था। वह बात थी आस्ट्रियाको युद्धमें प्रवृत्त किस तरह करना चाहिए। आस्ट्रिया उद्धतता-पूर्वक यदि पीडमाण्टसे

युद्ध छेड़े तभी नेपोलियन तथा अन्यान्य राष्ट्रोंकी सहायता मिल सकती थी। परन्तु आस्ट्रिया इसके लिए न तो तैयार ही था और न तैयार होनेकी सम्भावना ही देख पड़ती थी। इधर कावूर, अपनी चतुरता और कौशलके बल पर, उसे प्रवृत्त होने पर बाध्य करनेकी चेष्टा कर रहा था। परन्तु तत्कालीन किसी भी राजनीतिज्ञको यह विश्वास न था कि कावूर इसमें सफल हो सकेगा। प्रसिद्ध अँगरेज राजनीतिज्ञ मिस्टर ओडो रसेल इस समय ट्यूरिनमें आया था। उसकी जब कावूरसे इस विषय पर बातचीत हुई, तब उसने कावूरसे कहा कि "आप कुछ भी कीजिए, आस्ट्रिया युद्धके लिए तैयार न होगा।" इस पर कावूरने कहा—"परन्तु मैं उसे युद्धमें प्रवृत्त होने पर मजबूर कर दूँगा।" कावूरके इस साहस-पूर्ण उत्तर पर रसेलको विश्वास न हुआ। उसे कावूरकी यह बात असम्भव जान पड़ी। अतएव कावूरका उपहास करनेकी इच्छासे उसने पूछा—"आप यह कब तक कर दिखाइएगा?" कावूरने शान्ति-पूर्वक उत्तर दिया—"मईके पहले सप्ताहके इधर-उधर तक।" रसेलने आजकी बातचीत अपने रोजनामचेमें दर्ज कर ली, पर जब उसने यह सुना कि आस्ट्रियाने इस अवधिके पहले ही युद्धकी घोषणा कर दी, तब तो उसके तथा अन्य राजनीतिज्ञोंके भी आश्चर्यकी सीमा न रही। तब उन्होंने कावूरकी राजनीति-पटुताकी खूब तारीफ की। कितनोंहीके मुँहसे तो निकल पड़ा—"इसीको कहते हैं राजनीति-पटुता!" कावूरके इस परिश्रम और उद्योगको देखकर उससे कितने ही विषयोंमें मत-भेद रखनेवाला, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, मासिमो डी आजेग्लिओ, भी उससे बड़ा ही खुश हुआ। उसने कावूरको एक प्रोत्साहन-पूर्ण पत्र लिखा—"आपकी नीति कैसी है, इसकी चर्चा करनेकी अब आवश्यकता नहीं रह गई। अब तो

इसी बातका विचार होना अभीष्ट है कि आपका स्वीकृत कार्य्य सिद्ध किस तरह हो।"* मसिमो डी आजेग्लिओका यह पत्र पाकर कावूर बहुत सन्तुष्ट हुआ। जो महान् विचारवान् प्रभावशाली, मनुष्य किसी समय अपना प्रतिस्पर्द्धी रहा हो उसके विचार ऐसे ऐन मौके पर अपने पक्षमें देख कर किस मनुष्यको आनन्द प्राप्त न होगा? कौन अपनेको धन्य धन्य न कह उठेगा? उस समय जो कुछ जोड़-तोड़ लगाये जारहे थे वे इतनी होशियारीसे और इतने छिपे तौर पर हो रहे थे कि साधारण आदमीको उनकी जरा भी खबर न होती थी। परन्तु लोगोंका विश्वास कावूर पर खूब बैठ गया था; यहाँ तक कि वे उसके चेहरेको देखकर ही परिस्थितिका अनुमान करके सन्तुष्ट हो जाते थे। उसके मुँहसे स्पष्टीकरण तककी आवश्यकता वे न समझते थे। इस सम्बन्धमें एक मजेदार आख्यायिका है। इन्हीं गड़बड़ीके दिनोंमें एक बार ट्यूरिनमें रहनेवाले रूसी वकीलकी स्त्री एक दुकान पर सौदा लेने गई। दुकानदार उसके हाथमें माल देते ही देते रास्तेकी ओर भाग खड़ा हुआ और थोड़ी देरमें लौट आया। उस स्त्रीने इसका कारण पूछा। उसने कहा—"काउँट कावूर अभी इसी रास्तेसे गये हैं। मैं अपने देशकी वर्तमान स्थितिको जाननेके लिए उनका चेहरा देखने गया था। उनकी मुद्रा प्रफुल्लित और सतेज थी। इससे जान पड़ता है, सब कहीं ठीक ठीक है।" देशके जिस कार्य्य-

* कावूरकी कार्य्यक्षमताके विषयमें शत्रु-पक्षके, अर्थात् आस्ट्रियन, राजनीतिज्ञ वृद्ध मेटर्निचने भी (इसने पहले नेपोलियन तकको छकाया था) आदर प्रकट किया है। उसने एक बार कहा—

There is only one diplomatist left in Europe, and he unfotrunately, is against us; I mean count Cavour."

Cavour's life by Pietr oarsi p. 246.

क्षम मनुष्य पर जनताका इतना विश्वास हो, वह किस काममें सफल नहीं हो सकता ? निजकी कार्य्य-क्षमता, और लोगोंका विश्वास तथा प्रेम, इन दिव्य साधनोंकी सहायतासे ही कावूरने दो ही तीन वर्षों-में यह बात सम्भव करके दिखा दी जिसे लोग कहते थे कि इस पीढ़ीमें तो यह असम्भव है। वह कौनसी बात है, इसका हाल आगे देखिए ।

११—आस्ट्रियासे युद्ध ।

(सन् १८५९ ईसवी ।)
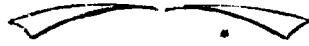
काउँटेस मार्टिनेंगोने आस्ट्रियन युद्धके पहले कावूरके शासन-कालके सम्बन्धमें लिखते हुए कहा है कि यह समय मानों कावूरकी कर्तव्य-क्षमताकी कसौटी ही था । कावूर उस पर कस भी गया और पूरा भी उतरा । परन्तु प्राण-पणसे परिश्रम करनेके कारण उसे, खेद है, असमय ही मृत्युका शिकार हो जाना पड़ा । अपने अभीष्टकी सिद्धिके लिए उसने भरसक दावपेंच खेले । नेपोलियनके साथ प्लोम्बियर्समें उसने जो मन्त्रणा की वह बिल्कुल गुप्त थी । नेपोलियनके पर-राष्ट्र-सचिवको भी उसका हाल मालूम न था—और नेपोलियन था चञ्चल-चित्त । अतएव कावूरने पहले नेपोलियनके वचनको लेखवद्ध करानेकी चेष्टा की । थोड़े ही दिनोंमें नया वर्ष आरम्भ होनेवाला था । उसके पूर्व ही प्रिन्स नेपोलियनका विवाह विक्टर इमेन्युअलकी पुत्रीसे होना निश्चित हुआ था । इसके लिए कावूरको टयूरिन आना था । यह मौका अच्छा देखकर कावूरने अपना काम बना लिया । सन्धिपत्र बिल्कुल गुप्त रक्खा गया । तथापि मेजिनी तथा योरपके अन्य राजनीतिवेत्ताओंमें यह

अफवाह फैल गई कि कावूर और नेपोलियनमें कुछ न कुछ गुप्त सन्धि हो गई है। प्रत्येक मनुष्य अपने अपने विचारके अनुसार सन्धिकी शर्तों पर तर्क-वितर्क करने लगा। परन्तु अन्त तक सच्ची स्थितिका पता किसीको न लगा। पूर्वोल्लिखित राष्ट्रीय सभाके द्वारा इटलीके प्रान्तोंमें आस्ट्रियाके विरुद्ध जो जोरका आन्दोलन हो रहा था उसने खूब ही बल पकड़ा। पीडमाण्टमें तो जिधर देखिए उधर युद्ध ही युद्ध-की तैयारी हो रही थी। और किसी काममें इतना विशेष रूपसे ध्यान न दिया जाता था। नवीन वर्षके आरम्भमें पीडमाण्टकी पार्लियामेण्टमें राजाने एक भाषण किया। * उससे यह स्पष्ट जाना जाता

---

* इस भाषणका मसविदा कावूरने तैयार किया था। उसने जब अपने अन्य सहकारियों—परामर्शदाताओं—मन्त्रियोंको वह दिखलाया तब उन्होंने कहा कि भाई, इसमें तो बड़े जोशकी बातें हैं। फिर कावूरने उसे नेपोलियनके पास पेरिस भेजा। उसने उसमें कुछ सुधार किया। परन्तु कुछ वाक्य तो उसने मूलकी अपेक्षा भी अधिक जोरदार जोड़ दिये। उसका पसन्द किया हुआ मसविदा यह है—

"हमारा गतकालीन अनुभव उत्साह-वर्द्धक है। अतएव भारी प्रसङ्गोंका—आपत्तियोंका—सामना धैर्य्यपूर्वक करनेको हम तैयार हैं। हमारा भविष्य आनन्दमय होगा। क्योंकि हमने न्याय, स्वातन्त्र्य-प्रेम, देश-प्रेम, की नींव पर अपनी नीति निश्चित की है। हमारा देश बहुत लम्बा-चौड़ा नहीं। वह छोटा है, तथापि उसका महत्त्व कम नहीं। उसने योरपके राज-दरबारोंमें सम्मान प्राप्त किया है। इसका कारण है। वह समयकी आवश्यकताके अनुकूल तत्त्वोंका हिमायती है। उसकी इस नीतिके साथ बड़े बड़े राष्ट्रोंकी सहानुभूति भी है। इसीसे उसका महत्त्व बढ़ गया है। पर, यह न समझिए कि यह स्थिति सङ्कट-रहित है। क्योंकि हमारे सन्धिके लिए तैयार रहने पर भी इटलीके कितने ही भागोंसे जो दुखभरी आवाजें हमारे कानोंमें गूँज रही हैं उनका प्रभाव हमारे हृदय पर हुए विना न रहेगा। हम एक-मतके कायल हैं। हमारा कार्य्य न्याय्य है। इस पर विश्वास रख कर दूरदर्शिता और निश्चयपूर्वक जैसी ईश्वरी प्रेरणा होगी उसके अनुसार काम करनेके लिए हम सानन्द तैयार हैं।"

था कि इटली युद्धके लिए कितना उत्सुक था । इसी प्रकार पेरिसमें नूतन वर्षारम्भके उपलक्ष्यमें हुए दरबारमें नेपोलियनने आस्ट्रियन वकीलको सम्बोधन करके कहा—"*आपकी सरकारके और हमारे सम्बन्ध सन्तोषकारक नहीं । तथापि आपके राजा साहबका आदर* मेरे मनमें कम नहीं हुआ है ।" नेपोलियनका यह भाषण सुनकर आस्ट्रियन तथा अन्य योरोपियन राष्ट्रोंके राज-नीतिज्ञोंके मन साशङ्क हो गये । इतनेहीमें ३० जनवरी १८५८ ईसवीको प्रिन्स नेपोलियनका विवाह विक्टर इमेन्युअलकी कन्यासे हुआ । इस घटना-से तो आस्ट्रिया मानों युद्धके स्वप्न ही देखने लगा । उसने अपने अधिकृत लाम्बर्डी-प्रान्तमें अधिक सेना भेज दी—इस खयालसे कि मौका पड़ने पर उससे मदद मिले । यह सेना उसने पीडमाण्टकी सरहद पर रक्खी । आस्ट्रियाका यह ढँग देखते ही कावूरने अपना कदम और भी आगे बढ़ा दिया । उसने, विशेष-खर्चके नामसे, ५ करोड़ लायर्स की * मंजूरी पार्लियामेण्टसे माँगी । पार्लियामेण्टने भी तत्काल मंजूरी दे दी । शहरके नेताओंने भी खानगी तौरपर सहायता करनेका अभिवचन कावूरको दिया । यह रकम ऋणके स्वरूपमें ली जानेवाली थी । लोग धड़ाधड़ थैलियाँ खाली करने लगे । इससे यह सूचित होता है कि कावूरका कार्य्यक्रम लोगोंको कितना पसन्द था और उसपर उनका कितना अधिक विश्वास था । इस प्रकार द्रव्यका प्रबन्ध हो चुकने पर कावूरने गेरीबाल्डीको बुलाकर कहा कि आप अपने स्वयंसैनिकोंका दल तैयार कीजिए । यह उसने इस उद्देशसे किया कि भावी युद्धको राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त हो जाय । इसके लिए उसने और भी काम किये । उसने पूर्व-कथित राष्ट्रीय सभाके द्वारा इटलीके

* १ लायर=८$\frac{3}{4}$ पेंस अथवा आने—उस समय कोई छः आने ।

भिन्न भिन्न प्रान्तोंसे स्वयंसैनिक प्राप्त करनेका प्रयत्न गुप्त रूपसे जारी किया। उसमें वह सफल भी हुआ। प्रायः समस्त राज्योंसे स्वयं-सैनिकोंके झुण्डके झुण्ड पीडमाण्डमें एकत्र होने लगे। पर पीडमाण्टके सैनिक और माली अधिकारी नहीं चाहते थे कि इन स्वयंसैनिकोंसे सहायता ली जाय। अतएव उन्होंने तत्सम्बन्धी कुछ कानूनी बाधायें कावूरके सामने पेश कीं। परन्तु कावूरने उनकी परवा न की। यही नहीं, बल्कि स्वयं-सैनिकोंकी सेना तैयार करनेका काम उसने अपने ही हाथोंमें ले लिया। अतएव अन्य-अधिकारियोंको उसकी प्रवृत्तिके अनुसार काम करने पर—व्यवहार करने पर—बाध्य होना पड़ा। नेपो-लियनने भी पहले अपने गुप्त वचन-पत्रमें यह शर्त की थी कि अन्य प्रान्तोंके स्वयं सैनिकोंसे युद्धमें काम न लिया जाय। परन्तु पीछे कावूरने जोर देकर वह शर्त रद्द करा ली। स्वयंसैनिकोंकी सहायता लेनेके लिए इतना जोर देनेमें उसका अभिप्राय था। वह यह कि विजय प्राप्त होने पर नेपोलियनको यह डींगें हाँकनेका अवसर न मिले कि केवल हमारी ही सहायतासे जीत हुई। इसके सिवा दो और उद्देश भी उसके थे—(१) जितनी अधिक हो सके सेना तैयार की जाय, जिससे युद्धमें जय अवश्य प्राप्त हो और (२) इटलीके समस्त प्रान्तोंमें एकराष्ट्रीय-ताके भाव उदय हों। उसके ये उद्देश अन्तमें सफल भी हुए। इस तरह कावूर भावी युद्धकी तयारी अपनी तरफसे भली भाँति कर रहा था। पर यह चिन्ता कि यह युद्ध छिड़ किस तरह जाय, उसे रात—दिन चैन न पड़ने देती थी। आस्ट्रिया आप होकर युद्धकी घोषणा करे, तभी फ्रान्सकी सहायता मिले। परन्तु क्या आस्ट्रिया ऐसा करेगा? क्या इंग्लैंड बीचमें पड़कर उसे चुप रहने पर बाध्य न करेगा? पीड-माण्टके लिए आस्ट्रियासे युद्ध करना नेपोलियनके दरबारी लोगोंको

पसन्द नहीं* और नेपोलियन भी स्वयं चञ्चल-चित्त मनुष्य है । अतएव कहीं ऐसा न हो कि ऐन वक्त पर वह धोखा दे बैठे ! इत्यादि शङ्का-ओंका निराकरण हुए बिना उसका मनोरथ सफल होना कठिन था । अतएव उसे इस समय पर-राष्ट्रोंकी गुप्त-मन्त्रणाओंकी—राजनैतिक चालोंकी—ओर काक-दृष्टिसे घात लगाये बैठना अनिवार्य्य था । इंग्लैंडके शासन-सूत्र इस समय लार्ड डर्बीके हाथमें थे । वह स्थापित-सत्ता-वादी था । अतएव इटलीकी आकांक्षासे वह अधिक सहानुभूति न रखता था । उसने अपने पेरिस-स्थित वकील, लार्ड काउली, को खास तौर पर विएन्ना भेजा और उसके द्वारा आस्ट्रियाको युद्धसे परावृत्त करनेका प्रयत्न किया । नेपो-लियनको भी फोड़ लेनेकी कोशिश उसने की । नेपोलियन नहीं चाहता था कि इंग्लैंडसे बिगाड़ करे । अतएव उसने ऊपरी मनसे, इंग्लैंडके मन्त्रिमण्डलकी बात स्वीकार कर ली । परन्तु इस शान्ति-पाठ-पर—शान्तिकी इस चेष्टाकी सफलता पर—आस्ट्रियाको अधिक विश्वा-स न था । अतएव वह दुरङ्गी चाल चलने लगा । एक ओर वह शान्ति-स्थापनाका भी उद्योग कर रहा था और दूसरी ओर सैन्य एकत्र करनेका भी । इस अवसरसे लाभ उठाकर कावूरने भी ८ मार्चको प्रकट किया कि "आस्ट्रियाकी तैयारीकी ओर ध्यान देकर अब हमें चुप न बैठना चाहिए ।" उसने प्रकाश्यरूपसे अपने सैनिक अधिकारियोंको सेना संग्रह करनेके लिए आज्ञा दे दी । जब तक इतनी तैयारी इधर

---

* स्वयं नेपोलियन आस्ट्रियासे युद्ध करनेको तैयार था । पर उसके दरबारके लोग—स्वयं उसका पर-राष्ट्र-सचिव भी इसके विरोधी थे । फ्रान्स-में रहनेवाले केथोलिक सम्प्रदायके नेता भी इस विचारके प्रतिकूल थे; क्योंकि पीडमाण्टकी प्रभुता बढ़ जानेसे पोपकी सत्तामें बाधा पहुँचनेकी सम्भावना थी ।

होती है तब तक उधर इटलीके अन्य प्रान्तोंमें पुरोगामी पक्षका आन्दोलन बहुत बढ़ गया । वह इस सीमा पर पहुँच गया कि उससे छेड़छाड़ करना या उसके रोकनेकी चेष्टा करना प्रायः असम्भव होगया था । इतनी तैयारी होने पर भी नेपोलियन अभी पीछे ही हटता जाता था । इस समय नेपोलियनका व्यवहार और मनः-स्थिति, कुछ अंशमें शेक्सपिअरके हैम्लेट-नाटकके नायक हैम्लेट-की सी होगई थी । "करूँ कि न करूँ" इसी मन्त्रका जप वह अब भी दिन-रात किया करता था । इतनेहीमें रशियाने बिचवाई करके वादग्रस्त विषयोंका निर्णय करनेके लिए समस्त योरोपियन राष्ट्रों-की एक परिषद् करनेकी चर्चा छेड़ी । उसने कहा कि इस परिषदमें नीचे लिखे विषयों पर विचार किया जाय- परन्तु

(१) आस्ट्रिया और पीडमाण्ट (सार्डीनी) में शान्ति स्थापन करनेके उपाय सोचना । वि

(२) रोमन-राज्योंसे आस्ट्रिया और फ्रेञ्च सेना किस रीतिसे हटाई जाय, इसका विचार करना ।

(३) यह जानना कि इटलीके राज्योंके शासन-कार्य्यमें कौन कौनसे सुधार किये जायँ ।

(४) इटलीके समस्त राज्योंका एक परस्पर-सहायक सङ्घ निर्म्माण किया जाय और पोपको उसका सन्मान्य (आनरेरी) अध्यक्ष बनाया जाय ।

इस पर आस्ट्रियाने यह प्रकट किया कि (१९ मार्च १८५९) यदि पीडमाण्ट इस परिषदमें न निमन्त्रित किया जाय और परिषदके होनेके पहले ही वह अपनी सैनिक तैयारी बन्द कर दे, तो यह प्रस्ताव हमें स्वीकार है । उसने यह भी कहा कि हम पीडमाण्ट पर आक्रमण

न करेंगे । अँगरेजी-राष्ट्रने ये शर्तें स्वीकार कर लीं और फ्रेञ्च सम्राटसे भी स्वीकृत करानेकी चेष्टा की । शान्तिपरिषदकी यह योजना नेपोलियनको हृदयसे तो अभिमत न थी, परन्तु उसके यहाँ युद्धकी तैयारी भी न हुई थी और दरबारमें युद्धका विरोधी एक प्रबल दल भी था । अतएव कालहरण करने—वक्त टालने—के खयालसे उसने भी यह बात मान ली । फिर उसने कावूरको सीधा पेरिसको बुलाया । तदनुसार वह २६ मार्चको पेरिस आ पहुँचा । नेपोलियनके पर-राष्ट्रीय-विभागका मन्त्री बेल्वेस्की युद्धका विरोधी था । उसे प्लोम्बियर्सकी गुप्तमन्त्रणाकी बात मालूम न थी । अतएव उसने उस समय युद्ध न करनेके विषयमें यथाशक्य सब आपत्तियाँ—अड़चनें नेपोलियनको दिखलाईं । उसने कावूरसे भी कहा कि आप पूर्वोक्त परिषद्के द्वारा अपना झगड़ा तय करा लीजिए । परन्तु ऐसी अपमानास्पद शर्त स्वीकार करनेसे उसने साफ इनकार कर दिया । फिर वह नेपोलियनसे अके-लेमें मिला और उसको खूब आड़े हाथों लिया । उसने नेपोलियनको धमकी भी दी कि यदि आप अपनी प्रतिज्ञा पर कायम न रहे, तो मैं इस्तीफा दे दूँगा और इस मामलेका सब गुप्त पत्र-व्यवहार प्रकट कर दूँगा । तब नेपोलियनने उसे समझा बुझाकर और एक दो महिने खामोश रहनेका अनुरोध किया । नेपोलियनकी बातचीतसे कावूरको निश्चय हो गया कि यह हमारे साथ आस्ट्रियासे युद्ध अवश्य करेगा । पर उसने कहा—खामोश रहनेकी जो बात नेपोलियनने कही है वह ठीक नहीं । देरी करनेसे हानि ही होगी । अतएव वह किञ्चित् उदा-सीन होकर ट्यूरिनको लौटा । (११ अपरैल १८५९ ईसवी ।) उसके वापस लौटते ही लोग उसके निवासस्थानके चारों ओर जमा हो गये और उन्होंने उसका बड़ा जयजयकार किया । परन्तु उसकी मनःस्थिति

उस समय ऐसी न थी कि इन बातोंसे उसे आनन्द या सान्त्वना होती। वह कुछ खिन्न और उदासीन हो रहा था। तथापि उसने अपने इच्छित कामसे हाथ न खींच लिया। एक ओर वह आस्ट्रियाको चिढ़ाकर उसे युद्धमें प्रवृत्त करनेके लिए उपाय कर रहा था और, दूसरी ओर, योरोपियन शान्ति-परिषदमें भी शामिल हो गया।

काव्रूर नाराज होकर वापस लौटा, यह बात पेरिसस्थ आस्ट्रियन वकील जान गया। और उसके जानेके बाद, पेरिसमें भी इधर-उधर शान्तिकी चर्चा छिड़ने लगी। फलतः उसने अपनी सरकारको यह खबर भेजी कि यहाँकी स्थिति ऐसी है। इस दशामें यदि युद्ध छिड़ जाय तो पीडमाण्टको फ्रान्सकी ओरसे सहायता न मिलेगी। आस्ट्रियन दरबारमें इस समय युद्धके अनुकूल पक्षका खूब दबदबा था। आस्ट्रियाका बादशाह फ्रान्सिस जोसेफ (२२ नवम्बर, १९१६ ईसवीको इसकी मृत्यु हो गई) इस समय भर जवानीमें था। अतएव वह स्वयं भी पीडमाण्टके सदृश (उसकी दृष्टिमें) तुच्छ राज्यकी हरकतोंको निर्मूल करनेके लिए तुला बैठा था। उसका परराष्ट्रीय मन्त्री, काउंट फौन ब्यूओल, भी उन्मत्त स्वभावका आदमी था। फिर, अनेक युक्तियोंके द्वारा, काव्रूरने उसे भुलावा भी खूब दिया था। इन सब कारणोंसे आस्ट्रियन दरबारमें शान्तिकी चर्चाकी गुजर, अधिक दिन तक होना, सम्भावनीय न था। शान्तिपरिषदकी शर्तोंकी चर्चा करनेमें काव्रूरने बहुत ही दिन लगा दिये। यह देखकर आस्ट्रियन सरकारको खटका हुआ। उसने अप्रैल महीनेके आरम्भमें अपने इटलीस्थ सेनापतिको युद्धकी पूर्व सूचना दे दी। तदनुसार आस्ट्रियन सेनाध्यक्ष जनरल ग्युलेने युद्धार्थ तैयार रहनेका आज्ञापत्र, जो बड़ी जोरदार भाषामें लिखा हुआ था, अपने सैनिकोंको पढ़

सुनाया। दूसरे ही दिन पीडमाण्टके समाचार-पत्रोंने वह आज्ञा-पत्र अक्षरशः प्रकाशित कर दिया और लिखा कि आस्ट्रियाने ही पहले युद्धका आरम्भ किया, इस बातका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। यह खबर पाते ही विक्टर इमेन्युअलके सिरसे पैर तक आग लग गई। उसने तुरन्त वह मजमून प्रिन्स नेपोलियनको पेरिस भेजा। इधर कावूरको भी उसने एक पत्र लिखा कि मेरी इच्छा है कि लड़ाईकी पहली तोप आज रातहीको दाग दी जायँ। इस घटनाके होते ही अन्य योरोपियन राष्ट्र और भी जोरशोरसे शान्ति स्थापन करनेका प्रयत्न करने लगे। इंग्लैंडने यह उपसूचना पेश की कि पूर्वोक्त परिषदमें इटलीके समस्त राज्योंके प्रतिनिधि बुलाये जाँय और परिषद होनेके पहले तक आस्ट्रिया और पीडमाण्ट दोनों अपनी सैनिक तैयारी बन्द रक्खें। इंग्लैंडके आग्रहसे फ्रान्सको यह सूचना स्वीकार करनी पड़ी। तब १८ अपरैलको ट्यूरिनमें रहनेवाले फ्रेञ्च वकीलको इस आशयका तार दिया गया। उसीमें यह भी लिख दिया कि पीडमाण्टकी सैनिक हलचल बन्द करनेके विषयमें कावूरकी राय शीघ्र भेजो—उसको सहमत करके शीघ्र इत्तला दो। तार मिलते ही फ्रेञ्च वकीलने उसे अपने सेक्रेटरीके हाथ कावूरको भेजा। कावूर उस समय सो रहा था। परन्तु सेक्रेटरीके आगमनकी खबर पाते ही उसने उसे भीतर बुलाया। सेक्रेटरीने उसे तार दिया। बिछौने पर ही कावूरने उसे पढ़ा। पढ़ने भरकी देर थी कि तत्क्षण उसका चेहरा लाल और चित्त उद्विग्न हो गया। उसे लगा, मानो फ्रान्सने हमें ऐन वक्त पर दगा दे दिया और उसके विश्वास पर मेरे हाथों अपने देशका सत्यानाश हो जायगा। सेक्रेटरीके चले जानेके बाद शोकावेगमें उसने यहाँ तक कह डाला कि "अब कपाल-मोक्ष कर लेने—सिर पीट लेने—के सिवा दूसरी गति नहीं।"

उस रात उसे पल भर नींद न आई। सबेरे तक वह तड़पता और बिछौने पर करवटें बदलता रहा। दूसरे दिन सवेरे ही फ्रेञ्च वकील स्वयं उससे मिलने आया। तब कावूरने अधिक बातचीत न करके इस आशयका खलीता उसे लिख दिया—

"जब कि फ्रान्स और इंग्लैंड मिलकर यह चेष्टा करते हैं कि युद्धका अवसर न उपस्थित हो और इसकी सिद्धिके लिए पीडमाण्ट लोगोंसे शस्त्रास्त्र छीन ले तब, यद्यपि राजाके मन्त्रि-मण्डलको यह देख पड़ता है कि यह शर्त इटलीकी अन्तःस्थ शान्तिके लिए अत्यन्त हानि-कारक होगी तथापि वे उसे स्वीकार करनेके लिए तैयार हैं।"

इन शब्दोंको लिखते समय कावूरका कलेजा टूक टूक हो रहा था। क्यों कि, उसे यह डर था कि कहीं ऐसा न हो कि इस घटना-से मेरे जीवन भरके सारे श्रम पर पानी फिर जाय। कावूरके जीवनमें यह दिन अत्यन्त दुःखद और करुणास्पद था। पूर्वोक्त खलीता लेकर फ्रेञ्च मन्त्री तो चला गया। इधर कावूर अपने दफ्तरके कमरेमें जा बैठा और उसने सब दरवाजे बन्द कर लिये। पहरेवालोंको उसने ताकीद कर दी कि किसीको अन्दर न आने देना। उसका यह ढँग देखकर उसके नौकर-चाकर तथा मित्रोंको बड़ी चिन्ता हुई। उसने यद्यपि यह आज्ञा दे रक्खी थी कि अन्दर कोई न आने पावे तथापि उसका पुराना मित्र केस्टेली उसके कमरेका दरवाजा खोलकर भीतर घुस गया। भीतर जाकर वह क्या देखता है कि कावूर कुछ कागज पत्रोंके तो टुकड़े टुकड़े कर रहा है और कुछको अपने पासकी भट्टीमें 'अग्नये स्वाहा' कर रहा है! केस्टेलीके अन्दर घुसते ही कावूरने उसकी ओर तीव्र दृष्टिसे देखा। उस समय केस्टेलीकी आँखें डबडबा आईं।

उसने आर्त-स्वरसे कहा—" क्या ऐन वक्त पर काउंट कावूर हमें छोड़ जायँगे ? " सुनते ही कावूर अपनेको न सँभाल सका । वह उसके गलेसे लिपट गया और उसने कातर-स्वरमें धीरेसे कहा—" शान्त होइए; जो कुछ होगा हम सब मिलकर धैर्य्यपूर्वक सहन करेंगे ।" तब कहीं केस्टेलीके जीमें जी आया और वह वहाँसे चला गया ।

कावूरके हृदयकी यह दशा हो गई थी । इधर आस्ट्रियाने यह जोड़-तोड़ लगाया कि इस समय पीडमाण्ट अकेला है । ऐसेहीमें उसे धर दबाना चाहिए । इसके बाद जर्म्मनीकी सहायतासे फ्रान्सकी खबर लेनी चाहिए । यह सोचकर उसने पीडमाण्टको अन्तिम निश्चयात्मक खलीता भेजा । इंग्लैंडने आस्ट्रियाको समझानेकी बहुत चेष्टा की, पर नतीजा कुछ न निकला । आस्ट्रियाका यह निश्चयात्मक खलीता एक खास अधिकारीके द्वारा भेजा जानेवाला था । वह अधिकारी २३ अप्रैलको टयूरिन पहुँच जानेवाला है, यह खबर कावूरको लगी । यह सुनकर उसे कितनी खुशी हुई होगी, इसका अनुमान पाठक स्वयं ही कर लें । उसी दिन कावूरने पार्लियामेण्टके चेम्बरकी एक विशेष बैठक की । क्योंकि उन दिनों ईस्टरकी छुट्टियोंके कारण पार्लियामेण्ट बन्द थी । उसने इस सभामें यह प्रस्ताव पास करा लिया कि युद्धका अवसर उपस्थित होने पर तत्सम्बन्धी सारे अधिकार राजा साहबको दिये जाँय । शामको ५½ बजे आस्ट्रियन अधिकारी वह निश्चयात्मक अन्तिम खलीता लेकर कावूरसे मिला । खलीताका आशय यह है—

" पीडमाण्टको तुरन्त ही अपनी सैनिक हलचल बन्द कर देनी चाहिए । वह ऐसा करनेके लिए तैयार है कि नहीं, इसका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' इन शब्दोंमें उसे तीन दिनके भीतर देना चाहिए ।

नकारात्मक उत्तर आने पर अथवा कुछ भी उत्तर न मिलने पर हमें जबरन् ऐसी तदबीर करना पड़ेगी कि वह ऐसा करने पर मजबूर हो।"

इसे पढ़ते ही कावूरका आनन्द दूना हो गया। क्योंकि नेपोलियनने उससे यह शर्त करा ली थी कि जब आस्ट्रिया पहले युद्ध छेड़ेगा तभी मैं सहायता दूँगा। वह शर्त इस खलीतेकी भाषासे सहज ही पूर्ण हो सकती थी। वह खलीता क्या, युद्धका एक घोषणा-पत्र ही था। उसने उसी दम उसे सरकारी तौर पर तारके द्वारा नेपोलियनको भेज दिया और राजाकी ओरसे सेनाकी सहायता माँगी। अब तो नेपोलियनको आगा पीछा करनेकी गुंजायश ही न रह गई। जो स्थिति वह चाहता था वह इस खलीतेकी बदौलत आप ही आप प्राप्त हो गई। अतएव उसने इस समय अपनी चञ्चल-वृत्तिका पुनः परिचय न देकर अपने सैनिकोंको पीडमाण्ट रवाना होनेका हुक्म दे दिया।

पूर्वोक्त खलीता पढ़ चुकने पर कावूरने आस्ट्रियन अधिकारीसे कहला भेजा कि खलीतेमें लिखे अनुसार तीन ही दिनके भीतर उत्तर मिल जायगा। फिर २५ तारीखको उसने पार्लियामेण्टके सेनेटमें भी सब अधिकार राजा साहबको देनेका प्रस्ताव पास करवा लिया। दूसरे दिन उसने आस्ट्रियन खलीतेका जो उत्तर लिखा वह यह था:—

"इस विषयमें इंग्लैंड और फ्रान्सने जो अन्तिम निर्णय किया है उससे अधिक हम कुछ नहीं कर सकते।"

अब क्या देर थी। दूसरे ही दिन दोनों राष्ट्रोंमें युद्धकी घोषणा प्रकाशित हो गई। इस युद्धमें आस्ट्रियाकी ओर १ लाख ७० हजार सेना थी और पीडमाण्टकी ओर स्वयं पीडमाण्टका सैन्य ६० हजार और नेपोलियनका १ लाख २० हजार मिलाकर कुल १ लाख ८० हजार सैन्य था! नेपोलियनकी सेनाके आनेके पहले यदि आस्ट्रियाने ट्यूरिन

पर आक्रमण किया होता तो पीडमाण्टकी बड़ी दुर्दशा हुई होती। परन्तु आस्ट्रियन सेनापतिको ऐसा साहस न हुआ । २९ अप्रैलके लगभग आस्ट्रियन सैन्य टिकिनो नदीको पार करके सेसिया प्रान्तमें आ पहुँचा । इस प्रान्तमें नहरें बहुत थीं । पीडमाण्टके अधिकारियोंने उन्हें तोड़-फोड़ डाला था । इससे जहाँ देखो वहाँ पानी ही पानी हो गया था । फलतः आस्ट्रियन सेनाके कार्य्यमें गड़बड़ होने लगी । ऐसे-हीमें पानी भी बरस गया । फिर क्या पूछना था । आस्ट्रियन सेनाका एक कदम भी आगे बढ़ाना मुश्किल हो गया ! पीडमाण्टकी सेना पोनदीके दाहने किनारे फ्रेञ्च सेनाकी बाट जोह रही थी । फ्रेञ्च सेना भी बड़े झपाटेसे आ रही थी । आस्ट्रियन सेनापतिका खयाल था कि हम बातकी बातमें टर्यूरिन पहुँच जायँगे । परन्तु ज्यों ज्यों फ्रेञ्च सेना पीडमाण्टकी सेनासे मिलती गई त्यों त्यों उसकी स्थिति विकट होती गई । अन्तमें उसे अपनी पहली योजना (Plan) बदलनी पड़ी । अब वह दक्षिण-भागकी ओर झुका । प्रायः इसी समय स्वयं नेपोलियन भी युद्धमें आ पहुँचा । उसने एक उत्तम चाल खेली, जिससे आस्ट्रियाकी हार हुई और उसे पीछे हटना पड़ा । इस समय उसने अपनी सेनाकी हलचलका हाल शत्रुको न मालूम होने देनेका अर्थात् शत्रुको चकमा देनेका काम पीडमाण्टकी सेनाको सौंपा था । यह काम उसने अत्यन्त कुशलता-पूर्वक किया, जिसके कारण नेपोलियन बहुत आसानीसे शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सका । इस विजयके पश्चात् शीघ्र ही, ८ जून १८५९ ईसवीको नेपोलियन और विक्टर इमेन्युअलने लाम्बर्डी-प्रान्तकी राजधानी मिलानमें, प्रवेश किया । इस शहरमें अब आस्ट्रियन सेना नामको भी न रह गई थी । इधर गेरीबाल्डीने भी पूर्वकी ओर एक आस्ट्रियन सेनाको हरा कर उत्तरकी

ओर भगा दिया था । एवं कोमो शहर पर अधिकार करके वह बर्गे-मोकी तरफ, उनका सम्बन्ध विछिन्न करनेके लिए, धावा कर रहा था। बीचमें जहाँ कहीं आस्ट्रियन अधिकार नष्ट हो गया था वहाँके लोग विक्टर इमेन्युअलके अधिकारियोंका स्वागत करके उनके अधीन होते जाते थे। इस पराजयकी खबर आस्ट्रियाके बादशाहको मिलते ही उसने अपने सेनापति ग्यूलेको पदच्युत कर दिया और आप स्वयं, सेनाका धुरीणत्व स्वीकार करके, रणस्थल-पर पहुँचा। पहली जगह फ्रेञ्च और दूसरी जगह पीडमाण्टिज और आस्ट्रियन सेनाका कोई १२ घण्टे घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें आस्ट्रियाको हार खानी पड़ी। इस विजयके बाद फ्रेञ्च और पीडमाण्टिज सेना जान गई कि अब हमें इटलीसे आस्ट्रियाको भगा देना कठिन नहीं है। इसकी सिद्धिके लिए उसने नवीन व्यूह रचने—चाल चलने—का आरम्भ भी कर दिया।

इधर तो लड़ाईका काम इस प्रकार हो रहा था उधर कावूरको भी टयूरिनमें बहुत काम करना पड़ता था। युद्ध-मन्त्री ला मार्मोरा रण-भूमि पर गया था। उसका काम भी कावूर ही करता था। इसके सिवा पर-राष्ट्रीय-विभागका काम, अन्तस्थ मन्त्रीका काम, जलसेना-विभागका काम, इतने सब काम करके उसे इटलीके अन्य प्रान्तोंमें प्रचलित आन्दोलनोंकी देख भाल—नियमन—भी करनी पड़ती थी। रणस्थल पर उपस्थित सेनाके लिए अन्न-वस्त्र, गोला बारूद, आदमी इत्यादि भरपूर भेजनेकी जिम्मेदारी भी उसी पर थी। इस विषयमें उसने इतनी बुद्धिमानी और दक्षतासे काम लिया कि फ्रेञ्च सेनाके एक दो बार कसौटी पर चढ़ानेकी कोशिश करने पर भी उसे हार न खानी पड़ी। उन्होंने जितना सामान माँगा उससे कहीं अधिक ही उसने भेजा, कम नहीं! इतने सब काम एक ही समयमें उसने किस प्रकार सँभाले होंगे,

इसका अनुमान करना भी अशक्य है।* सामान्य मनुष्यके लिए तो केवल कल्पना करना भी असम्भव है।

युद्ध शुरू होते ही, टस्कनी, बोलोग्ना, माडेना, पार्मा, इत्यादि इटालियन राज्योंके लोगोंने विप्लव—क्रान्ति—करके उन राज्योंको पीडमाण्टमें शामिल कर दिया। यह सब काम राष्ट्रीय-मण्डलके द्वारा हुए। अर्थात् इसमें कावूरका भी हाथ था ही। अन्य राज्योंमें भी ऐसे ही आन्दोलन खड़े हो गये थे। कावूर उन्हें भी छिपे छिपे उत्तेजना दे रहा था। परन्तु इटलीमें जो यह नवीन चाल वह चल रहा था वह नेपोलियनको पसन्द न थी। वह इस बातके लिए तो तैयार था कि इटली आस्ट्रियाके अत्याचारसे मुक्त हो जाय; पर वहाँ स्थानिक राजाका एकच्छत्र राज्य स्थापित हो, यह नेपोलियन बिलकुल न चाहता था। मोडेना, पार्मा, बोलेग्ना, इत्यादि छोटे राज्योंको पीडमाण्टमें शामिल कर लेना उसे सम्मत था। परन्तु टस्कनीका सम्मिलित हो जाना उसे स्वीकार न था। मध्य इटलीके राज्योंकी हलचल तो उसे बिलकुल ही अप्रिय थी। परन्तु उसे बन्द करना उसके बूतेका न था। और उतना प्रकट प्रमाण भी उसके पास न था कि वह कावूरको

* इस समय उसके मज्जा-तन्तुओंपर कितना जोर पड़ता था, इसका वर्णन उसके एक सेक्रेटरीने इस तरह किया है—

"अपरैल, मई और जून (१८५९ ईसवी) इन महीनोंमें उसके पास बैठा हुआ कोई भी मनुष्य इस बातकी पूरी कल्पना नहीं कर सकता था कि काम करनेका सामर्थ्य उसमें कितना है। उसका बिछौना युद्धविभागके दफ्तरमें लगा रहता था। रातके समय लबादा ओढ़े कभी परवानेके विषयमें, कभी पर राष्ट्रोंसे पत्रव्यवहारके सम्बन्धमें और कभी पुलिसके विषयमें हुक्म सुनाता हुआ वह एक विभागके दफ्तरसे दूसरे विभागके दफ्तरमें बड़ी तेजीसे जाता हुआ दिखाई देता था।

उलाहना दे सके—उसपर दोषारोपण कर सके। इन कारणोंसे युद्धके अवसर पर जो उत्साह उसने दिखलाया वह अब कम हो चला। इसके सिवा, उसकी इस विजयके कारण उधर जर्म्मनीको भय होने लगा। उसके आस्ट्रियासे मिल जानेके चिह्न दिखाई देने लगे। और फ्रान्सके पादरी-पुञ्ज भी युद्धके विषयमें लोकमत प्रतिकूल बना रहे थे—लोगोंको बहका रहे थे। फिर इस युद्धमें अपनी सेनाके कुछ दोष-भी उसके नजरमें आये। अतएव नेपोलियनने सोचा कि यदि इस दशामें जर्म्मनी और आस्ट्रियाने मिलकर सामना किया तो बड़ी विकट अवस्था उत्पन्न हो जायगी। इस लिए, मान मार्टिनोकी लड़ाईके बाद, उसने सन्धिकी बातचीत करना आरम्भ कर दिया और आस्ट्रियाके बादशाहको कहला भेजा कि युद्ध बन्द हो जाना चाहिए। बादशाहने उसकी बात मान ली। इसके पश्चात् तीनों सेनाओंके सेनापतियोंकी भेट होकर यह तय हुआ कि १५ अगस्त तक युद्ध स्थगित रक्खा जाय। फिर दो दिन बाद नेपोलियन और फ्रान्सिस जोसेफ विलाफ्राङ्कामें मिले। इस भेटमें सन्धिकी जो शर्तें ठहरीं वे ये हैं—

(१) आस्ट्रियाके सम्राट् लाम्बर्डी-प्रान्त नेपोलियनको दे दें और नेपोलियन फिर उसे विक्टर इमेन्युअलको दे दे।

(२) पोपकी अध्यक्षतामें इटालियन राज्योंका सङ्घ निर्म्माण किया जाय और उस सङ्घका एक भाग वेनिशियाके अधीन रहे।

(३) टस्कनी और मोडेनामें पहलेके राजवंश स्थापित किये जायँ।

(४) पार्मा और पापसेंजा, ये जागीरें पीडमाण्टमें मिलाई जायँ, तो आस्ट्रिया इस पर कुछ आपत्ति न करे।

सन्धिकी खबर पाते ही कावूर वायुवेगसे रणस्थल पर दौड़ आया। वह विक्टर इमेन्युअलसे मिला और बोला कि आप सन्धिके इस प्रस्तावसे कुछ वास्त न रखिए। विक्टर इमेन्युअलने जब सन्धिकी पूर्वोक्त शर्तें कावूरको सुनाई तब तो उसका मस्तिष्क सन्तापसे भ्रमिष्ट हो गया। आस्ट्रियाको पराजित करनेके लिए कावूरको आकाश-पाताल एक करना पड़ा। यह उसने इस लिए किया कि इटली स्वतन्त्र राष्ट्र बन जाय। यही उसके जीवनका एक मात्र उद्देश्य था। आस्ट्रियाके पराजयके कारण यह सुअवसर उपस्थित सा हो गया था। वही इस रद्दी सन्धि-प्रस्तावके बदौलत खोया जानेवाला था। यह देखते ही अपनी सारी जिन्दगीकी कमाईको नष्ट होते देखते ही—कावूरका खून उबल उठे तो इसमें आश्चर्य्य ही क्या! यह तो स्वाभाविक ही है। इस समय तक उसने बहुत ही शिथिलता और शान्तिसे काम लिया था। परन्तु अपने परिपक्व परिश्रम-फलके रसास्वाद लेनेके ऐन मौके पर उस फलका एकाएक छिन जाना कावूरके लिए अत्यन्त असह्य था। इसका फल यह हुआ कि आज तक जो मनोविकार उसने अपने मस्तिष्क-मन्दिरमें बन्द कर रक्खे थे अब वे अत्यन्त प्रबल हो उठे। उनके आवेगमें उसने विक्टर इमेन्युअलको कुछ सख्त सुस्त भी कह डाला। विक्टर इमेन्युअलने उसे शान्त करने—समझाने—की बहुत चेष्टा की; पर वह निष्फल हुई। स्वयं विक्टर इमेन्युअलको भी इन शर्तों पर सन्धि करना दिलसे पसन्द न था। ऐन वक्त पर नेपोलियनने जो यह विश्वास-घात किया, उस पर वह भी बहुत असन्तुष्ट था। परन्तु एक बात उसे सन्धि करने पर विवश कर रही थी। यदि यह सन्धि न की जाय तो सारे योरोपियन राष्ट्रोंकी सहानुभूति नष्ट होनेकी सम्भावना है। उस दशामें हम अकेले रह जायँगे। फिर

आस्ट्रियाको भगाना कठिन हो जायगा। इस विचारसे, वह, निरुपाय होकर, कहता था कि कमसे कम कुछ दिनोंके लिए तो यह सन्धि कर लेना चाहिए। परन्तु काबूरका मन इस समय अत्यन्त विकार-वश हो गया था। उसे उसका कहना न भाया। जन्मभर तरह तरहके कष्ट सहकर जिस इमारतको खड़ा किया उसके पूरा होनेके समय पर ही, उसके एकदम इस प्रकार गिर जानेकी कल्पना तक, उसके लिए दुःसह हो गई। उसने अपना इस्तीफा पेश कर दिया। विक्टर इमे-न्युअल इस घटनासे बड़ा दुःखी हुआ। परन्तु उसे सहन कर सन्धि-पत्र-पर हस्ताक्षर करना उसे अनिवार्य्य था। अतएव उसने यह वाक्य जोड़ कर कि "मैं अकेला इससे सहमत हूँ" बड़े दुःखित हृदयसे उस पर सही की।

१२—आन-बानका अवसर।

विलाफ्राङ्काकी सन्धि इटलीके किसी भी विचारवान् देश-भक्तको पसन्द न हुई। क्योंकि उसके बदौलत आस्ट्रियाके अत्याचारपूर्ण शासनसे इटलीके मुक्त होनेका प्राप्त अवसर खोजानेकी सम्भावना थी। इससे वे विशेष दुखी हुए। उन्होंने मनमें कहा "नेपोलियनने ऐन मौके पर हमें दगा दिया।" उसके इस कार्य्यने उन्हें बहुत सन्तप्त कर दिया। काबूरने तो एम. पेत्री नामक नेपोलियनके एक अधि-कारीसे क्रोधावेशमें साफ साफ कह दिया कि "आपके बादशाहने मेरी बड़ी बदनामी की है।" हाँ, विक्टर इमेन्युअलने अलबत्ते इस समय अपने चित्तकी समतोलताको हाथसे न जाने दिया। काबूरने

सात्विक क्रोधके आवेगमें उसकी निर्भर्त्सना करके इस्तीफा दे दिया था। इस घटनासे विक्टर इमेन्युअलको बड़ा ही हार्दिक दुःख हुआ। परन्तु इस समय उसने अपने मनोविकारोंको प्रबल न होने दिया। उसने राज्य-शकट खींचनेका संकल्प करके राटेजीको प्रधान मन्त्रीका पद दे दिया। राटेजीकी नियुक्तिके बाद उसे नवीन मन्त्रि-मण्डलका सङ्गठन करनेमें कोई एक हफ्ता लगा। इस अवधिमें कावूरहीको प्रधान मन्त्रीका काम करना पड़ा। अतएव विलाफ्राङ्काकी सन्धिके अनुसार टस्कनी, रोमाग्ना, मोडेना इत्यादि स्थानोंमें विक्टर इमेन्युअलके नाम पर शासन-कार्य्य करनेवाले कमिशनरोंको यह हुक्म भेजनेका काम उसीके सिर पड़ा कि ये राज्य पहलेके राजाओंको सौंप दो। उसने बड़े ही व्यथित हृदयसे ये हुक्मनामें लिखवाकर भिजवाये। परन्तु उसके साथ ही उसने पूर्वोक्त अधिकारियोंको खानगी तौर पर साग्रह कहला भेजा कि आप अपना काम (इटालियनोंका राष्ट्रीकरण) पूर्ववत् जारी रखिए। सरकारी आज्ञा पहुँचते ही मोडेनाके कमिशनर फारिनीने उसे तार द्वारा खबर दी कि "जिस नवीन सन्धिकी शर्तोंका मुझे कुछ भी पता नहीं, उनके बल पर यदि मोडेनाका ड्यूक फिरसे वापस आवेगा तो मैं उसे राजा और देशका शत्रु समझ कर काम करूँगा।" इस पर कावूरने उसे तार द्वारा उत्तर दिया कि "प्रधान मन्त्रीका अन्त हो गया! मित्रके नाते वह आपके निश्चय पर बधाई देता है।" एक विचारवान् इटालियन राजकाजी मनुष्यकी यह राय है कि उस समय कावूरके शरीरमें मेजिनीका सञ्चार हो आया था। अनेकांशमें यह सत्य भी है। इटलीकी उन्नतिके लिए कावूरने उस समय तक अत्यन्त सावधानी और शान्ति-पूर्वक प्राणपणसे परिश्रम किया था; परन्तु अपनी मिहनतका फल पल्ले पड़नेके ऐन मौके पर विलाफ्राङ्काकी

सन्धिके द्वारा उसको एकदम छीन लेनेका प्रयत्न होते देखकर कावू-रका, कुछ समयके लिए, विमनस्क हो जाना मनुष्य-स्वभावके अनु-सार ही है । कुछ समय तक उसका यही हाल रहा । तथापि शीघ्र ही उसकी चित्तवृत्ति बदल गई । उसकी विवेक-शक्ति फिरसे जागृत हुई । तब वह इस बात पर विचार करनेके लिए कि प्राप्त स्थितिमें मैं अपना अभीष्ट किस तरह सिद्ध कर सकूँगा, अपने विश्रामस्थान लेरीको चला गया । विलाफ्राङ्काके कच्चे—अस्थायी—सुलहनामेके अनुसार पार्मा, मोडेना, बोलोग्ना और फ्लारेन्सके अपने गवर्नरों अर्थात् कमि-शनरोंको पीडमाण्टकी सरकारने वापस बुलाया तो; पर वहाँकी जन-ताकी इच्छा यही थी कि वह विक्टर इमेन्युअलकी ही छत्रच्छायामें रहे । अतएव वे लोगोंकी कामना पूर्ण करनेके लिए वहीं रह गये । सरकारी तौर पर उन्होंने अपना अधिकार त्याग दिया; परन्तु लोगोंकी ओरसे पुन: अपने हाथमें उसे ले लिया । उदाहरणके लिए—मोडेनाके गवर्नरने पीडमाण्टके राजाके प्रतिनिधिके नाते अपनी सत्ता नष्ट हो जानेकी घोषणा प्रकाशित की । परन्तु उसी समय उसने यह भी प्रकट कर दिया कि मोडेना शहरके लोगोंकी ओरसे हम 'सर्व-सत्ता-धारी' बनाये गये हैं । इसी पुरुषको फिर क्रमसे पार्मा और रोमाग्नाके लोगोंने अपने अपने राज्योंका 'सर्व-सत्ता-धारी' (Dictator) बनाया । इन सब छोटे छोटे राज्योंका समावेश इटलीके 'एमिलिया' प्रान्तमें होता था । यह सारा प्रान्त फारिनीके अधिकारमें था । परन्तु फारिनी था इटलीका एक राष्ट्र करनेकी महत्त्वाकांक्षा रखनेवाला । वह तत्का-लीन परिस्थितिका सामना करनेमें समर्थ भी था । इससे कावूरकी ध्येय-सिद्धिका मार्ग अब अधिक सुगम होगया । टस्कनीकी राजधानी फ्लारेन्समें भी, पीडमाण्टके सरकारी कमिशनरकी सत्ता नष्ट हो जाने

पर, वहाँका शासन-सूत्र लोगोंने बैरन रिकाजोली नामक एक धीर पुरुषको सौंप दिया। वह भी उन्हीं लोगोंमेंसे था जो चाहते थे कि सारा इटली-देश विक्टर इमेन्युअलके अधीन हो जाय। अतएव उसने तत्काल फारिनीसे मिल कर पूर्वोक्त चारों राज्योंसे कोई ४० हजार आदमियोंकी एक संयुक्त सेना तैयार कर ली। इस सेनाका अधिपति मानफ्रेडो फांटी नामका एक देशाभिमानी वीर पुरुष बनाया गया। इसी बीच पूर्वोक्त चारों राज्योंकी लोक-नियुक्त सभाओंने अपनी अपनी राजधानियोंमें* अपनी बैठकें करके एक प्रस्ताव प्रकट रूपसे पास किया। उसका आशय यह था कि "प्राचीन राजवंशकी राजसत्ताकी 'इतिश्री' फिरसे हो गई और ये राज्य विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल किये गये।"

इटलीके मध्यभागमें हुई यह कार्रवाई आस्ट्रियाको पसन्द न आई। यह स्वाभाविक भी था। इस पर उसने आपत्ति की और यह धमकी दी कि विलाफ्राङ्काकी सन्धिकी शर्तोंके अनुसार सन्धिका कार्य्य पूर्ण करनेके लिए ट्यूरिनमें जो परिषद् स्थापन हुई है वह तोड़ दी जायगी। स्वयं फ्रान्सके बादशाह तीसरे नेपोलियनको भी यह बात अच्छी न लगी। मोडेना, पार्मा इत्यादि छोटे राज्योंके विषयमें तो उसे आपत्ति न थी; परन्तु टस्कनीके सदृश बड़े राज्योंको पीडमाण्टमें समाविष्ट करना उसे बिलकुल पसन्द न था। पर इस समय एक बात इटलीके बड़े अनुकूल हो गई थी। इन दिनों इंग्लैंडमें फिरसे सुधारवादी दल अधिकारारूढ़ हो गया था और इटलीकी आकांक्षाओंसे सहानुभूति

* फ्लारेन्स, बोलोग्ना, मोडेना और पार्मा इन राजधानियोंमें ये सभायें हुईं। ये शहर क्रमसे टस्कनी, रोमाग्ना, मोडेना और पार्मा इन चार राज्योंकी राजधानी थे।

रखनेवाले लार्ड पाल्मर्स्टन प्रधान मन्त्रीके पद पर प्रतिष्ठित थे। अत-एव मध्य इटलीके राज्योंके पूर्वोक्त कार्योंके विषयमें अँगरेजी सरकार और राष्ट्रकी सहानुभूति, किम्बहुना अनुमति, ही थी। इस कारण, फ्रान्स और आस्ट्रियाको यह हिम्मत न होती थी कि इटालियनोंके पूर्वोक्त कार्य्यका तीव्र निषेध और प्रकटरूपसे उसका प्रतिकार करे। यदि अकेला आस्ट्रिया ही ऐसा करना चाहता तो वह भी न कर सकता था; क्योंकि नेपोलियनकी सेना अभी तक लाम्बर्डी प्रान्तमें ही थी। इस समय विक्टर इमेन्युअलके मन्त्रि-मण्डलको जरा साहससे काम लेनेकी आवश्यकता थी। उसे अँगरेजी सरकारकी इस अनुकूलतासे लाभ उठा कर इटलीके चारों राज्योंकी प्रजाके अनुरोधके अनुसार उन्हें विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें सम्मिलित कर लेना चाहिए था। परन्तु मन्त्रि-मण्डलके अग्रणी, राटेजी और लामार्मोरामें, न तो इतना साहस ही था और न इतनी राजकार्य्य-पटुता ही। अतएव वे दुवि-धामें पड़ गये। स्वयं विक्टर इमेन्युअलकी भी यह इच्छा थी कि ये उसके राज्यमें शामिल किये जायँ। उसने अपना यह विचार प्रकट भी कर दिखाया था। परन्तु उसके मन्त्रि-मण्डलके मनोदौर्बल्यके कारण उसका यह अभीष्ट सिद्ध न हो रहा था। अन्तमें इस मन्त्रि-मण्डलने अपनी कमजोरीका पूरा पूरा परिचय दे दिया। उसने ज्यूरिचमें विलाफ्राङ्काकी सन्धि पक्की कर डाली। पूर्वोक्त चारों राज्य फिरसे उनके पूर्व अधिपतियोंके ही अधीन किये जायँ या नहीं, इस विषयका निर्णय अलग एक दूसरी परिषद् करके किया जाय यह निश्चय भी उसमें किया गया। यह परिषदकी बात नेपोलियनने उठाई। क्योंकि विलाफ्राङ्काकी सन्धिकी बातचीत होने पर उसने विक्टर इमे-न्युअलको यह सूचना दे दी थी कि सेवाय-प्रान्त मुझे देनेकी जो शर्त

कावूरने मुझसे प्लोम्बियर्समें की है उसे मैं अपनी खुशीसे रद्द करता हूँ। परन्तु यह देखते ही कि मध्य इटलीके चारों राज्य उसके राज्यमें सम्मिलित हुआ चाहते हैं और इंग्लैंड भी इस विषयमें विक्टर इमेन्यु-अलका पृष्ठ-पोषक है, अपने राष्ट्रको सन्तुष्ट करनेके लिए सेवाय और नीस ये छोटे प्रान्त ले लेनेकी लालसा नेपोलियनको हुई। पर वह नहीं चाहता था कि यह बात पूर्वोक्त सन्धिके समय, किम्बहुना इष्टसिद्धि होने तक, प्रकाशित की जाय। अतएव उसने पूर्वोक्त राज्योंकी बात, इस परिषदके मिस, आगे ढकेल दी। सच पूछिए तो उसकी यह बिलकुल इच्छा न थी कि वह परिषद् सचमुच की जाय। पीडमाण्टकी सरकारसे पूर्वोक्त प्रान्त प्राप्त करनेका जोड़-तोड़ छिपे छिपे लगानेके लिए अवकाश प्राप्त करना उसे अभीष्ट था और इसी लिए उसने यह परिषदकी युक्ति निकाली थी। अस्तु। विक्टर इमेन्युअलका मन्त्रि-मण्डल, अपनी दुर्बलताके कारण, दिनों दिन लोगोंको अप्रिय हो रहा था। ऐसेहीमें इस परिषदकी कार्रवाई शुरू हुई। अतएव लोगोंने इस बात पर जोर दिया कि इस परिषदमें इटलीकी तरफसे कावूर भेजा जाय। लोकमतका प्रवाह इस समय कावूरकी ओर इतने जोरसे बह रहा था कि उसको रोकनेका साहस मन्त्रिमण्डलको न होता था। अतएव उसने लोकमतके आगे सिर झुकाया और कावूरका वहाँ भेजा जाना निश्चित हुआ। इंग्लैंडकी भी उत्कट इच्छा थी कि इटलीकी तरफसे कावूर ही इस परिषदमें आवे। अतएव नेपोलियनने उसकी नियु-क्ति पर कुछ आपत्ति न की। परन्तु वह तो चाहता ही न था कि परिषद् हो। अतएव अपना मतलब गाँठनेके लिए अब वह गुप्त-मन्त्रणाओं —साजिशों—से काम लेने लगा। राटेजीके मन्त्रि-मण्डलने कावूरकी नियुक्ति परिषदके लिए की तो; परन्तु उसकी मातहतीमें काम करना

कावूरको अच्छा न लगा। इस दुर्बल मन्त्रिमण्डलको भङ्ग करने तथा अपने अभीष्टकी सिद्धि करनेके लिए उसके प्रयत्न निरन्तर जारी थे। तथापि उसने प्रकटरूपसे राटेजीसे बैर बढ़ाना उचित न समझा। उसने कहा—इससे देशमें अनिष्टकारिणी फूट उत्पन्न होगी और यह मुझे अभीष्ट नहीं। अतएव उसने परिषदमें जाना स्वीकार कर लिया। परन्तु कावूरके इस स्वीकार-पत्रसे ला मार्मोरा किसी कारण असन्तुष्ट हो गया और उसने अपना इस्तीफा पेश कर दिया। तब विक्टर इमेन्युअलने भावी कल्याण पर दृष्टि रखकर तथा कावूरके पिछले कोपकर व्यवहारको सहन करके फिरसे उसीको अपना प्रधान मन्त्री बनाया। कावूर तो ऐसे मौकेकी घातमें ही था। वह उसे अनायास मिल गई। फिर क्या था; उसने तत्काल नवीन मन्त्रि-मण्डलकी रचना की और मध्य इटलीके मोडेना, पार्मा, रोमाग्ना और टस्कनी इन राज्योंको अपने राज्यमें समाविष्ट करनेमें निमग्न हो गया। पहले उसने मुख्य मुख्य योरोपियन राष्ट्रोंको एक सूचनापत्रके द्वारा यह खबर की कि पूर्वोक्त चारों राज्योंकी प्रार्थनाको अस्वीकार करना——उसका अनादर करना——अब हमारे राजा साहबके लिए अशक्य हो रहा है। इंग्लैंडकी उत्कट सहानुभूतिके बदौलत ही उसने यह साहस भी कर डाला। नूतन इटालियन राष्ट्र निर्म्माण करनेमें फ्रान्सके तीसरे नेपोलियनने सेना द्वारा सहायता की थी; अतएव वहाँ इसका प्रभुत्व विशेष बढ़नेकी सम्भावना थी। परन्तु इंग्लैंडको अपने राजकार्य्यकी दृष्टिसे यह बात अनिष्ट जान पड़ती थी। इंग्लैंडका उदारवादी दल तो उसे बहुत ही बुरी समझता था। इसका फल यह हुआ कि व्हिलाफ्राङ्काकी सन्धिके कारण इटलीके कार्यक्षम मनुष्य जब नेपोलियनसे नाखुश हो गये, तब इंग्लैंडने नेपोलिय-

नका प्रभुत्व—प्रभाव—कम करके अपना प्रभाव बढ़ाना आरम्भ किया। इसके लिए उसने अपनी यह नीति बनाई कि इटलीके एक राष्ट्र बनाये जानेमें यथाशक्ति सहायता की जाय। इंग्लैंडकी यह नीति ज्योंही कावूरकी नजरमें साफ तौरसे आई, उसने इन दोनों राष्ट्रोंकी पारस्परिक स्पर्द्धा-बुद्धिका उपयोग, यथासम्भव स्वदेश हितके लिए करनेका सङ्कल्प किया। यही क्यों, उसके तत्कालीन कितने ही उद्गारोंसे * यह भी प्रकट होता है कि दोनों राष्ट्रोंकी इस स्पर्द्धाका उद्दीपन करना भी उसे अभीष्ट था। इंग्लैंडके राजनीतिवेत्ताओंकी चालों तथा कावूरके पहलुओंको देखकर नेपोलियन भी सँभल गया। वह इटालियन राष्ट्रको सन्तुष्ट रखके अपना प्रभाव कायम रखनेका प्रयत्न करने लगा। इस कामको सहज-साध्य करनेके लिए उसने इटालियन उच्च आकांक्षाओंके विरोधी अपने पर-राष्ट्रीय-विभागके मन्त्री, वेल्वेस्की, को पदच्युत कर दिया और उसके स्थान पर डोवेनेल नामके एक राजकाजी आदमीको नियुक्त किया। इसके द्वारा उसने पीडमाण्टके दरबारसे मेल-जोलका व्यवहार आरम्भ किया। उसने कहा कि विक्टर इमेन्युअलने यदि ये चारों राज्य अपने राज्यमें जोड़े तो उसके राज्यका विस्तार बढ़ेगा; ऐसी दशामें फ्रान्सको सन्तुष्ट करनेके लिए हमे सेवाय और नीस ये दो प्रान्त अवश्य मिलने चाहिए। कावूर यह जानता था कि नेपोलियन कुछ न कुछ जरूर माँगेगा और प्लोम्बियर्सके ठहरावके अनुसार वह सेवाय-प्रान्त देनेके लिए तैयार भी था; परन्तु नेपोलियन

* पेट्रोओर्सी नामके कावूरके एक चरित-लेखकने कावूरके एतद्विषयक उद्गारोंका उल्लेख और उनका खुलासा इस तरह किया है—"हमने जिस एक मार्गका अवलम्बन किया था वह अब बन्द हो गया है। कुछ परवा नहीं; हम दूसरा मार्ग ग्रहण करेंगे। वह यही कि इंग्लैंड पर भरोसा रखकर फ्रान्स और इग्लैंड दोनों राष्ट्रोंकी स्पर्द्धासे लाभ उठाना।"

तो नीसको भी हड़पना चाहता था। अतएव कुछ कालके लिए कावूर चिन्तित हो गया। नेपोलियनका यह पेंच उसे बड़ा दुःसह और जबरदस्त मालूम हुआ। परन्तु उसकी सेना अभी इटलीमें मौजूद थी। और नेपोलियनने उसे यह गुप्त आज्ञा दे रक्खी थी कि यदि नीस हमें न मिला तो बोलोग्ना और फ्लारेन्स नगर हस्तगत कर लेना। अतएव इस अरिष्टको टालनेके लिए, निरुपाय हो कर, उसे नेपोलियनकी इच्छाके अनुसार नीस भी उसको देना पड़ा। कावूर चाहता था कि यह सब मामला अपनी पार्लियामेण्टमें पेश किया जाय और उसमें पूर्वोक्त प्रान्त देनेकी बात मंजूर कराई जाय। पर नेपोलियनकी हठधर्म्मीसे ऐसा न हो सका। उसने इस बात पर जोर दिया कि यह बात जबतक बिलकुल पक्की (Accomplished fact) न हो जाय, प्रकट न होनी चाहिए। कावूरको यह भी स्वीकार करना पड़ा। परन्तु इन सब बातोंसे—घटनाओंसे—कावूरका चित्त अत्यन्त दुखी रहता था। पार्लियामेण्टके बिना पूछे ही अपने देशका कुछ भाग एक जबरदस्त लुटेरेको, लाचार होकर देनेमें भी, वह यह समझ रहा था कि मैं यह पाप कर रहा हूँ। इसके अतिरिक्त यह खयाल भी कि पार्लियामेण्टमें इसका समर्थन करना कितने साहसका और कितना बिकट काम है, उसके चित्तको अस्वस्थ—चिन्तित—कर रहा था। पर उसको इतमीनान था कि नेपोलियनसे खुले खुले शत्रुता उत्पन्न करना स्वदेशहितके लिए अत्यन्त विघातक है। क्योंकि उस अवस्थामें नेपोलियन और आस्ट्रियाके एक हो जानेकी सम्भावना थी। इसी लिए उसने इस बातकी सारी जवाबदेही अपने अर्थात् मन्त्रिमण्डलके सिर पर ले ली। इंग्लैंडकी सहानुभूति पर उसका सारा भरोसा—आधार था। परन्तु फ्रान्सके पर-राष्ट्रीय-मन्त्रीके इंग्लैंडके

दरबारको यह लिखने पर भी कि हम ये दो प्रान्त इटलीसे माँगेंगे, उसने कुछ आपत्ति न की, तब कावूरने अनुमान किया कि इंग्लैंडकी सहानुभूतिसे यह काम न बनेगा। इसका यह खयाल गलत भी न था। इस अवसर पर कावूरकी योग्यायोग्यताके विषयमें योरोपियन इतिहासकारोंमें बड़ा ही मतभेद है। स्वयं कावूरके हृदयमें भी अन्त तक यह घटना चुभती रही और उसका हृदय तलमलाता था कि कब ये प्रान्त फिरसे वापस ले लूँ। परन्तु उसके असमय ही काल-कवलित हो जानेसे उसकी यह महत्त्वाकांक्षा मनकी मनमें रह गई। इस विषयमें कावूरके व्यवहारके सम्बन्धमें चाहे किसीका कितना ही मत-भेद क्यों न हो, उसके सद्धेतुके सम्बन्धमें—उसकी नेकनीय-तीके बारेमें—किसीका भी मत-भेद नहीं, और होना सम्भव भी नहीं। प्रत्येक कार्य्य-कर्त्ता पुरुषके जीवनमें ऐसे कितने ही आन-बानके अवसर आते हैं और उस समय उसे अपनी अभीष्ट-सिद्धिके लिए कभी कभी न्यायासङ्गत और अप्रिय, परन्तु अन्तमें पथ्यकर, मार्ग धैर्य्यपूर्वक क्रमण करना पड़ता है। पर जब उसकी कार्य्य-सिद्धि हो जाती है तब निकम्मे वक्त गपशप लड़ानेवाले बकवादी लोग, उसके कार्य्यकी आलोचना ही करते हैं—उसे बुरा भला कहा ही करते हैं। तथापि इस आलो-चनासे भी, संसारके कल्याणमें सहायता मिलती है। पर एक बात है। ऐसे टीकाकारोंकी नजरके सामने उस मनुष्यके समयकी स्थिति हूबहू तो रहती नहीं। अतएव महत्त्वपूर्ण विषयोंमें उनके निर्णय कभी कभी गलत—भ्रमपूर्ण—भी हो सकते हैं। जान पड़ता है, कावूरके पूर्वोक्त कार्य्यके विषयमें मतभेद प्रकट करनेवालोंने ऐसी ही गलती की होगी। उसके निजके उद्गार और चारों ओरकी परिस्थितिकी जो कुछ जान-कारी उपलब्ध है उसे देख कर तो यही कहना पड़ता है कि उसने

अपनी परिस्थितिमें भरसक निर्दोष और उत्तम मार्ग ग्रहण किया था।* फ्रेञ्च राष्ट्र और नेपोलियनकी मित्रता कायम रखनेके

* काउंटेस मार्टिनेंगो सिजारेस्को-लिखित कावूरके चरितमें इस विषय पर जो कुछ लिखा गया है उसके नीचे लिखे अंशसे कावूरकी इस योजना पर विशेष प्रकाश पड़ेगा—

"मिस्टर थूवेनेलने साफ साफ कहा है कि यदि पीडमाण्टने अपने राज्यमें और अधिक प्रदेशोंको मिलाया तो सेवाय और नीस इन प्रान्तों पर मेरा हक है, यह प्रतिपादन करना फ्रेञ्च बादशाहको अभीष्ट है। इसकी सूचना इस समय अँगरेजी मन्त्रिमण्डलको भी दी गई थी। कावूरको निश्चय हो गया था कि स्वयं नेपोलियनसे ही यह मामला तय कर लेना उचित है। यह प्रश्न इसी एक तरीकेसे हल हो सकता है। प्लोम्बियर्समें एक प्रान्त देनेकी शर्त करना उसे जितना खला—अखरा—इस समय उससे भी अधिक मनोवेदना उसे होने लगी। पिछले छः महीनों तक नेपोलियनसे इस सौदेकी बातचीत—घटा बढ़ी—होती रही। उसका प्रभाव कावूर पर ऐसा पड़ा कि उसका जी यहाँ तक ऊब उठा कि उसने कह दिया 'फ्रेञ्च सेनाको इटलीमें लानेका प्रयत्न अब मैं कभी न करूँगा।' यह बात अन्त तक कायम रही। वह कहता था—'ये दोनों प्रान्त नेपोलियनको देना, किसी मित्र पर उपकार नहीं बल्कि किसी बटमारको राजी करना है।" परन्तु उसे यकीन था कि ऐसा किये बिना गुजर नहीं।"

काउंट विट्ज़थूम नामके एक स्पष्टदृष्टि—सुलझी हुई तबीयतके—पर-राष्ट्र-राजकाजी आदमीने अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है—"जिस जनवरी १८५९ ईसवीकी सन्धिके अनुसार फ्रान्सकी मित्रताका उपहारस्वरूप सेवाय और नीस प्रान्त देनेका वचन दिया गया, कावूरने यदि उसे न स्वीकार किया होता—उसका भङ्ग कर दिया होता—तो नेपोलियन ऐसी कैंचीमें फँस जाता कि उसे अपनी माँग एकदम छोड़ देनी पड़ती। परन्तु इस व्यवहारसे फ्रान्स, देश और नेपोलियन रुष्ट—अत्यन्त असन्तुष्ट—अवश्य हो जाता। इटालियन जनताका यह खयाल कि फ्रेञ्च राष्ट्रका 'उदार अन्तःकरण' अपनी ओर है, निरा भ्रम था। पर कावूर अब इसका बिलकुल कायल न रहा। एक बार उसने कहा था—'फ्रान्स यदि लोकसत्ताक हो जाय तो भी उससे इटलीको कुछ लाभ

लिए तथा इटलीके पूर्वोक्त चार राज्योंको अपने राज्यमें शामिल करनेमें वे बाधा न डालें इस खयालसे, बड़ी खिन्नतापूर्वक निरुपाय होकर उसने २४ मार्च १८६० ईसवीको सेवाय, और नीस प्रान्त नेपोलियनके हवाले कर देनेवाले सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। सुदैवसे विक्टर इमेन्युअलने भी बहुत आगा-पीछा न कर परिस्थिति पर ध्यान दे कावूरके कार्य्यको स्वीकार कर लिया। परन्तु इतनेहीसे इस मामलेका निपटारा न हुआ। उसे बाजाब्ता बनानेके लिए पॉर्लियामेण्टके चेम्बरमें उसका पेश होना आवश्यक था और वहाँ उसका विरोध भी होनेकी बहुत सम्भावना थी। इस बैठकमें पूर्वोक्त चारों राज्योंके प्रतिनिधि आनेवाले थे। अतएव कावूरको हिम्मत होने

नहीं, बल्कि उसका परिणाम इससे उलटा होगा।' अभी अनेक वाद-ग्रस्त विषयोंका निर्णय होना बाकी था। फिर रोमकी, जहाँ नेपोलियनकी प्रभुता है और उसकी सेना भी है, विकट समस्या उसके सामने उपस्थित थी। इस दशामें वह फ्रेंच लोगोंके हृदयमें सुलगनेवाली द्वेषाग्निको भड़कने देना न चाहता था—उससे डरता था। कावूरको अभी तक यह आशा थी कि नीस बचा लेंगे—जाने न देंगे। इतनेहीमें बेनिडेटी पेरिससे आया। उसने कहा कि यदि सम्पूर्ण गुप्त-सन्धि पर दस्तखत न किये तो बादशाह अपनी सेना लाम्बर्डीसे वापस बुला लेगा। इस पर कहते हैं—कावूरने जवाब दिया—"जितनी जल्दी बुला लें उतना ही अच्छा।' तब उसी दम बेनीडेटीने बादशाहका खानगी आज्ञा-पत्र दिखा कर कहा, यह देखिए मुझे सेना लौटा लेनेकी आज्ञा मिली अवश्य है; परन्तु फ्रान्स ले जानेकी नहीं बोलोग्ना और फ्लारेन्समें पड़ाव डालनेकी। सन्धिको गुप्त रखना न रखना—प्रकट न होने देना—कावूरके बसका न था। नियमबद्ध शासन-पद्धतिके नियमके अनुसार सही करनेके पहले उसे पार्लियामेंटमें पेश करना लाजिमी था। अतएव उसने नेपोलियनको समझाने बुझानेकी बहुत कोशिश की—प्रयत्नकी पराकाष्ठा कर दी—परन्तु सम्राटने अपना आग्रह न छोड़ा। वह यही कहता रहा कि आपके दस्तखत होनेके बाद ही उसका जिक्र पार्लियामेण्टमें किया जाय और तभी योरपवालोंको इसकी खबर की जाय, इसके पहले नहीं।"

लगी कि उन प्रतिनिधियोंके आधार पर यह गुप्त-सन्धि पार्लियामेण्टमें पास करा लूँगा। अस्तु। गुप्त सन्धिका काम समाप्त होने पर उन्हें अपने राज्यमें शामिल करना कहीं प्रधान योरोपियन राष्ट्रोंको आपत्ति-जनक न जँचे, इस लिए उसने एक तरकीब निकाली। उसने उन चारों राज्योंकी जनताकी सम्मति लेना शुरू की। उसने यही दो सवाल किये—(१) तुम्हें स्वतन्त्र शासन-पद्धति चाहिए, या (२) तुम विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल होना चाहते हो? अन्तमें दो तिहाईसे भी अधिक सम्मतियाँ दूसरे प्रश्नके अनुकूल उसे मिलीं।* तब उसने उन्हें विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें जोड़ लिया। सेवाय और नीस-प्रान्त भी, यह तरकीब लड़ाकर ही नेपोलियनके हवाले करनेका ठहराव हुआ था। इनमेंसे सेवाय-प्रान्त तो आदिसे ही फ्रेञ्चोंका तरफ़-दार था—उनके पक्षमें था। हाँ, नीसमें अलबत्ते कृत्रिम लोकमत तैयार करना पड़ा। अस्तु। पूर्वोक्त चारों राज्य पीडमाण्टके राज्यमें मिला लेनेके बाद एक संयुक्त प्रथम पार्लियामेण्टकी बैठक २ अप्रैल १८६० ईसवीको हुई। आरम्भमें शिष्टाचारके अनुसार राजाने सब प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंका स्वागत किया और फिर वह सभा-स्थानसे चला गया। इसके बाद नेपोलियनसे की गई गुप्त सन्धिका प्रस्ताव कावूरने सभामें पेश किया। जब वह उसे पढ़ रहा था, सभामें सन्नाटा था। सब लोग चुप थे। सबका ध्यान सन्धिपत्रके मजमूनकी ओर लगा हुआ था। वह दृश्य अत्यन्त गम्भीर था। कावूरके लिए तो यह प्रसङ्ग बड़ा टेढ़ा—

* टस्कनी राज्यमें ३,६६,५७१ सम्मतियाँ पीडमाण्टके राज्यमें सम्मिलित होनेके लिए और १४,९२५ स्वतन्त्र शासन-पद्धतिके पक्षमें मिलीं। पार्मा, मोडेना और रोमाग्नामें पूर्वोक्त क्रमसे ४,२६,००६ और ७५६ सम्मतियाँ प्राप्त हुईं।

आन-बानका—था। इस सन्धिपत्रके स्वीकृत होने ही पर उसका गौरव कायम रह सकता था और उसका जीवन सफल समझा जा सकता था। यदि ऐसा न होता तो उसे मुँह दिखानेको भी जगह न मिलती। यही नहीं, देशद्रोहका कलङ्क भी उसके मत्थे मढ़ जानेकी पूर्ण सम्भावना थी। यह बात उसने स्वयं राजासे भी कह दी थी। इस दशामें, वह केवल सात्विक तेजके बल पर, अपने कृत्यका समर्थन करनेके लिए खड़ा हुआ। उस समय उसके चेहरे पर किन किन मनोविकारोंकी—भावोंकी—छटा देख पड़ती थी यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। तथापि उसका धैर्य निश्चय ही तिलमात्र कम न हुआ था। और उसका आत्मविश्वास निरन्तर उसे उत्साहित कर रहा था। सन्धि-पत्र जब पहली बार पढ़ा जा चुका तब उस पर वाद-विवाद शुरू हुआ, जो दस दिनों तक होता रहा। उसमें सरकारके प्रतिपक्षियोंकी ओरसे जोरका विरोध होने लगा। नीस गैरीबाल्डीकी जन्मभूमि थी। उसे गैरोंके हवाले होते देख गैरीबाल्डीकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। क्रोधावेगमें उसने कावूर पर कठोर शब्दोंकी झड़ी लगा दी। आस्ट्रियाके साथ इसी युद्धमें गैरीबाल्डीने अपने स्वयंसैनिकोंकी सहायतासे इटालियन लोगोंकी तरफसे समर-भूमि पर अपना बल-पराक्रम दिखाकर इटालियन देश-भक्तोंको उपकार-बद्ध किया था। इस कारण उन पर उसका खूब प्रभाव था। नीसके दे देनेसे गैरीबाल्डीके चित्तको अत्यन्त दुःख होगा और इसके लिए कारण भी प्रबल है, यह देखकर कितने ही सभासदोंकी सहानुभूति उसके साथ होने लगी। उनमेंसे कितने ही लोग तो निर्भर्त्सना करने पर भी तुल गये। एकने तो केवल दोष-दृष्टिसे ही उसकी तुलना इंग्लैंडके मन्त्री अर्ल आव क्लेरेडनसे कर डाली। तब

कावूरने भी, अन्तमें अपने प्रतिपक्षियोंको उत्तर देते हुए क्लेरेंडनका ही उदाहरण दिया और शत्रुओंके रूपमें अपने शत्रुओंका और उनके दुःस्वभावका खाका, व्याजोक्तिमें, खूब ही खींचा। सभाके समञ्जस सभ्योंको सम्बोधन कर उसने कहा—" जिस प्रकारकी राजनीतिके बदौलत इतने थोड़े समयमें मिलान, फ्लारेन्स, बोलोग्ना ये प्रान्त हमें मिले, उस नीतिको निबाहनेके लिए सेवाय और नीस प्रान्त दे देना अत्यन्त आवश्यक था। लोकप्रियता हमें सदाकी ही तरह प्रिय है; और बहुतसे मौकों पर मेरे सहकारियोंको और मुझे उस लोकप्रियतारूपी पेयके, जो कभी कभी मादक भी होता है, आस्वाद करनेका अवसर मिला है। परन्तु जब हमें अपने कर्तव्यके वशीभूत होकर उसका त्याग करना पड़ता है तब यह कैसा करना चाहिए, यह हमें मालूम है। इस सन्धिपत्र पर दस्तखत बनाते समय हमें पूरा निश्चय था कि हम पर लोकनिन्दाकी वर्षा होगी; परन्तु हमने उसको सहन करना उचित समझा। क्योंकि हमारी रायमें यह काम करके हमने इटलीका हित ही साधन किया है। इस प्रकार खुलासा करके प्रतिपक्षके आरोपोंका यथोचित खण्डन कर चुकनेके बाद बहुतसे समझदार सभासदोंको इस सन्धि पर बहुत दुःख हुआ। तथापि अन्तमें उन्होंने कावूरके पक्षमें ही अपनी सम्मति दी। कावूरके भाषणका बहुत कुछ अभीष्ट प्रभाव सभासदों पर पड़ा। फिर उसकी देशभक्तिके विषयमें उनका चित्त निःशङ्क था। इन कारणोंसे अनुमानसे भी अधिक बहुमतसे सन्धिपत्र स्वीकृत हो गया। (२० अपरैल १८६० ईसवी।) इस प्रकार यद्यपि कावूरने सफलता-सम्पादन की, तथापि अपना राज्यांश गैरको दे देना उसे जीवन भर खलता रहा। उसके भावी जीवनमें जब जब उसे इस घटनाकी याद आती तब तब उसे अत्यन्त मनोवेदना होती और, इस कारण, फिर समझदार लोगोंने उसके आगे इस घटनाका जिक्र तक करना छोड़ दिया था।

१३—काबूरकी राजनीति-पटुता और गैरीबाल्डीकी शूरता।

मध्य इटलीके चारों राज्य विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल हो जानेके बाद, शीघ्र ही, दक्षिण-इटलीके लोगोंको भी उसके राज्यमें सम्मिलित होनेकी अत्यन्त प्रबल इच्छा हुई। दक्षिण-इटलीमें सिसली और नेपल्स ये दो राज्य बड़े थे। वे फ्रान्सके प्रसिद्ध बोरबन राज-वंशके वंशजोंके कब्जेमें थे। अतः उन्हें नेपोलियनका आश्रय था। इस दशामें इन राज्योंकी जनताकी इच्छाके अनुसार काम करनेपर नेपोलियनके रुष्ट हो जानेकी और आस्ट्रिया, रूस इत्यादि अन्य राष्ट्रोंका भी बखेड़ा पैदा होनेकी सम्भावना थी। यह देखकर काबूर कुछ दिनों तक उस ओर ध्यान न देना चाहता था। जो चार राज्य अभी शामिल किये गये हैं उनके सहित अपने राज्यमें उत्तर-इटलीमें, स्थिरता उत्पन्न करनेके लिए—उसकी बुनियाद पक्की करनेके लिए—उसे अभी एक वर्ष नये झगड़े न पैदा करनेकी आवश्यकता जान पड़ती थी। परन्तु इटालियन लोगों पर एकराष्ट्रीयत्वकी धुन इतनी ज्यादह सवार थी कि काबूरको उनकी हलचल पर ध्यान देकर उसका प्रबन्ध कर-नेका काम अपने सिर पर उठाना पड़ा। पिछले प्रकरणमें उल्लिखित पहली पार्लियामेण्टका अधिवेशन जब ट्यूरिनमें हो रहा था उन्हीं दिनों सिसलीमें क्रान्तिकारक आन्दोलनमें बाढ़ आरही थी। वहाँके मुख्य शहर और बन्दर—पालेर्मो—के लोगोंने ४ अप्रैल १८६० ईसवीको गदरका झण्डा खड़ा कर दिया। परन्तु राजपक्षीय सेनाने बलवेको तहस-नहस कर दिया। तथापि, इसके बाद, बलवेकी लपटें प्रत्येक

जिलेसे धधकने लगीं और मेसिना तथा कैटनिया नगरोंमें दङ्गे शुरू हो गये। इस बगावतकी खबर उत्तर-इटलीमें पहुँचते ही वहाँके लोगोंने उन्हें सहायता देनेके लिए एक स्वयं-सैनिकोंकी सेना भेजनेका प्रबन्ध किया और इस काममें नेतृत्व स्वीकारनेके लिए वे गैरीबाल्डीसे प्रार्थना करने लगे। परन्तु गैरीबाल्डीको शङ्का ही थी कि इस तरह सिसली-पर चढ़ाई करनेसे यश-प्राप्ति होगी या नहीं; अतएव वह उनकी बात क़बूल करनेमें आनाकानी करने लगा। इतनेहीमें सिसलीके जानकार और देशभक्त अगुआ फ्रान्सिस्को क्रिस्पी और शूर योद्धा निनो-विक्जोंने आकर उससे कहा कि आप निश्चय रखिए, वहाँकी परि-स्थिति बिलकुल अपने अनुकूल है। तब गैरीबाल्डीने उनकी बात मान ली। कावूरकी इच्छा थी कि सिसलीके बलवाइयोंकी सहायता की जाय। परन्तु पहले वह इस बातसे सहमत न हुआ कि गैरीबाल्डी प्रकट रूपसे जाकर सिसली पर आक्रमण करे। क्योंकि इससे बलशाली योरोपियन राष्ट्रोंके क्षुब्ध होनेकी और इटली राष्ट्रके भावी ऐक्यके अहित होनेकी सम्भावना थी। परन्तु गैरीबाल्डीकी इस मुहीमसे विक्टर इमेन्युअल सहमत था। अतएव इस विषयपर उसका और कावूरका खूब ही कड़ा वाद-विवाद हुआ। परन्तु अन्तमें गैरीबाल्डीकी योग्यता और महत्त्व तथा राजाकी इच्छा पर ध्यान देकर कावूरने इस आक्रमणका विरोध करना छोड़ दिया। यही नहीं, उसने गुप्त रीतिसे यथाशक्य सहायता देकर यह योजना की कि इस हमलेसे जितना लाभ हमारा राज्य उठा सके, उठाया जाय। तथापि, इस खयालसे कि योरोपियन राष्ट्रोंको आपत्ति करनेका मौका न मिले, उसने बाहरसे इस आक्रमणके विरोधी होनेका स्वाँग बना लिया। इस समय वह जान बूझकर राजधानी छोड़कर विक्टर इमेन्युअलके साथ मोडेना चला गया—यह दिखलानेके लिए

मानों गैरीबाल्डीकी करतूतोंका हाल उसे कुछ भी मालूम नहीं। उसने एक और भी चाल चली। पालेर्मो-स्थित अपने अधिकारियोंको उसने दो आज्ञापत्र दे रक्खे थे—एक तो यह कि गैरीबाल्डीको कैद कर लो और दूसरा यह कि उसे छिपे छिपे सहायता दो। पहला हुक्म केवल बनावटी था। उसका उपयोग तभी किया जानेवाला था जब गैरीबाल्डी-को सफलता न मिले और नतीजा भोगनेका प्रसङ्ग आ पड़े। इधर कावूर इस तरह चालें चल रहा था, उधर ५ मई १८६० ईसवीकी शामको गैरीबाल्डीने रुबाटिनो कम्पनीके जिनोआ बन्दरमें ठहरे हुए दो जहाजों पर घेरा डाला और उन्हें वह क्वार्टो नामक एक गाँवमें ले आया। इस जगह उसके सङ्केतके अनुसार कोई १,२०० स्वयंसैनिक सिसली पर चढ़ाई करनेके लिए एकत्र हुए थे। इस आक्रमणके लिए गैरीबाल्डीका निश्चय हो जाने पर कावूरने उससे छिपा कर, ला फारिना और ला मासा इन दो नामी देशभक्त और कार्यक्षम पुरुषोंको उसकी ओर भेजा। कावूरकी इच्छा देखकर उन्होंने भी स्वयं-सैनिकोंके दलमें प्रवेश किया और गैरीबाल्डीकी सहायताके लिए वे उसके साथ रवाना हुए। इन स्वयंसैनिकोंमें कोई ४०० आदमी तो अच्छे गृहस्थ थे और बाकी सामान्य श्रेणीके थे। वे सब आपसके भेद-भावको भूल कर एकदिलसे काम करनेमें लगे हुए थे। उत्कट देशाभिमान और स्वातन्त्र्य-प्रेम, इन दो उदात्त भाव-नाओंसे उनका हृदय सना हुआ था। अतएव उनके शरीरमें विलक्षण साहस उत्पन्न होगया था। उनकी धुन अपने स्वीकृत कार्य्यकी सिद्धिमें ही एकसी लगी हुई थी। उनका वह अद्भुत उत्साह, स्फूर्ति और चैतन्य देख कर यह भास होता था मानों पृथ्वीकी दासता—गुलाम-गीरी—नष्ट करनेके लिए ये देवदूत ही आकाशसे आ उतरे हैं! अस्तु।

कार्टोसे चलकर गैरीबाल्डी पहले पोंबिनोके जल-डमरु-मध्यके पास आया। वहाँ टस्कनीसे आये हुए कुछ स्वयंसैनिक उसे मिले। ७ मई, १८६० ईसवीको वहाँसे रवाना होकर टालमोना द्वीपसे कुछ दूर पर ठहरा। वहाँ उसने हङ्गरियन कर्नल टरके द्वारा जो उसके साथ था निकटस्थ आर्बेटेलो नामके किलेसे पीडमाण्टके सेनापतिसे जितना मिल सका गोला-बारूद और कुछ पुरानी तोपें हस्तगत कीं। वहाँसे उसने कोई ६० सिपाहियोंकी एक टोली पोपके राज्यों पर भेजी। यह तजवीज योरोपियन राष्ट्रोंको चमका देनेके लिए उसने की थी। उसने उन्हें यह धोखा देना चाहा कि इस आक्रमणका रुख पोपके राज्यों पर है, सिसली पर नहीं। कोई १० दिनोंमें इस टोलीने पोपकी सीमा पार कर ली। इधर ९ मईको गैरीबाल्डी टालमोना बन्दरमें आया और वहाँसे उसने बोरबोन सरकारके लड़ाऊ जहाजोंकी नजर चुकानेके लिए, छिपे रास्तेसे प्रयाण किया। ११ मईको वह सिसलीके मार्साला बन्दरमें आ पहुँचा। उस समय सुदैवसे वहाँ दो अँगरेजी सैनिक जहाज अपने राष्ट्रके हितोंकी रक्षाके लिए आये हुए थे। इधर नेपल्सके राजाके दो जहाज उसी समय किनारे पर घूमने-घामने निकल गये थे। गैरीबाल्डीने सोचा यह मौका बड़ा अच्छा है और अपना इतिहास-प्रसिद्ध देश-भक्त स्वयं-सैनिक-दल सामान-सहित किनारे पर ला उतारा। इतनेहीमें पूर्वोक्त नेपल्सके जहाजोंको, जो घूमने निकल गये थे, उसकी हल-चलकी आहट मिल गई। उन्होंने समुद्रसे ही उस पर गोले बरसाना शुरू कर दिया। तब अँगरेजी जहाजका कप्तान गोला बरसानेवाले जहाज पर गया और उससे बोला कि देखना, मार्सालाकी अँगरेजी कोठीको धक्का न लगने पावे। तब उनका गोला बरसाना आप ही आप बन्द होगया। इतनी अवधिमें गैरीबाल्डीने अपना सब सामान

और सारे आदमी बन्दरमें पहुँचा दिये और अपने जहाजमें आग लगा दी। दूसरे दिन सबेरे वह अपने दलबल-सहित सालेमी शहरको चल दिया। यहाँ आते ही उसने विक्टर इमेन्युअलके नामकी दुहाई फेर दी और उसके प्रतिनिधिके नातेसे सिसलीकी सारी शासन-सत्ता अपने हाथोंमें ले लेनेकी घोषणा कर दी। परन्तु अभी उसे सिसलीका प्रधान नगर पालेर्मो हस्तगत करना बाकी था। रास्तेमें उसका प्रतीकार करनेके लिए—उसको रोकनेके लिए नेपल्सके राजाकी सेना तैयार खड़ी थी। इस सेनासे उसका पहला सामना केलटेफिमी नामके घाटकी तलहटीमें हुआ। खूब घमासान लड़ाई हुई। गैरीबाल्डीका लड़का मेनाटी इस लड़ाईमें जख्मी होगया और उसे असफलताके लक्षण दिखाई देने लगे। तब उसके सहकारी सेनाध्यक्ष निनोविक्जोने जो उसीकी तरह शूर और साहसी था, सखेद कहा—"मैं समझता हूँ हमें भाग जाना होगा।" इस पर गैरीबाल्डीने आवेश-पूर्वक उत्तर दिया—"या तो हम यहाँ इटालियन राष्ट्रका निर्म्माण करेंगे या जूझ मरेंगे।"ऐसा निश्चयात्मक उत्तर देनेका कारण था। गैरीबाल्डीके आक्रमणका फलाफल—सफलता विफलता—प्रधानतः उसके गौरव पर अवलम्बित था। ऐसे आन-बानके समय कच्ची खा जानेसे—पीछे हट जानेसे—उसका गौरव तो नष्ट होता ही, साथियों और अनुयायियोंके भी पैर उखड़ जानेकी सम्भावना थी। अतएव उसने प्राणोंकी भी परवा न करके विजय प्राप्त करलेने तक लड़ाई करनेका निश्चय किया और अन्तमें उसी निश्चयरूपी शक्तिके सहारे उसें विजय प्राप्त हुआ। इस सफलताके बाद तुरन्त ही उसने पालेर्मो-शहर पर धावा कर दिया। वहाँ सङ्गीनोंसे काम लेना पड़ा। अन्तमें वह शहरमें घुस गया। नेपल्सके राजाकी सेनाने उससे पालेर्मोमें और भी कुछ दिन युद्ध किया। पर अन्तमें

उसे हारकर पालेर्मो छोड़ जाना पड़ा। (७ मई १८६० ईसवी।) इधर गैरीबाल्डी इस तरह विजय-सम्पादनमें लगा हुआ था, उधर कावूर परराष्ट्रीय क्षुब्धताके अभ्रोंका—बादलोंका—निवारण करनेमें दत्तचित्त था। इतने दिनों तक तो वह गैरीबाल्डीके सम्बन्धमें " नरो वा कुञ्जरो वा " कह कर अपनी बात बनाये रखता था; परन्तु गैरी-बाल्डीके सिसली-टापू अधिकृत करके पालेर्मोमें प्रवेश करनेके बाद वह उसकी सहायतामें अधिक ढीठतासे काम लेने लगा। उसने जिनोआ-से गैरीबाल्डीकी सहायताके लिए मेडिकी नामके सेनापतिके अधीन ३ हजार आदमियोंको सिसली भेजा। इसके सिवा पोलेर्मोस्थित अपने जल-सेनापतिको उसने गैरीबाल्डीका स्वागत आदरपूर्वक करनेका भी सङ्केत किया था। तदनुसार गैरीबाल्डी उससे मिलने गया तब १९ तोपोंकी सलामीसे उसका स्वागत किया गया और सिसली पर उसका आधिपत्य भी स्वीकार किया गया। गैरीबाल्डी यद्यपि अत्यन्त उदार और उत्कट देशाभिमानी पुरुष था, तथापि वह राजनीति-निपुण न था और, उसका स्वभाव कुछ उच्छृंखल तथा विकारवश भी था। लोकसत्तावादी उच्छृंखल लोग सदा उसे घेरे रहा करते थे। इस दशामें सिसलीकी सारी राजकीय सत्ता—शासनसत्ता—उसके हाथोंमें रहने देना भावी इटालियन स्वतन्त्रता और राष्ट्र-सङ्गठनके लिए अहित कर होगा, यह कावूरका खयाल था। अतएव वह इस बात पर जोर देने लगा कि यह प्रान्त विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल किया जाय। परन्तु गैरीबाल्डी इसके लिए तैयार न था। कावूरका खयाल था कि गैरीबाल्डी पर मेजिनीका प्रभाव अधिक है इससे उसका चित्त ठिकाने न था। पर बात वास्तवमें ऐसी न थी। इस अवसर पर मेजिनी अपने ही विचारोंको प्रधान

न समझ रहा था—अपनी ही बात पर जोर न देता था। बल्कि जिस प्रकार हो सके इटालियन राष्ट्रकी एकताका ही ध्यान रखता था। परन्तु इसका ज्ञान कावूरको न था और हो भी नहीं सकता था। क्योंकि ये दोनों महान् पुरुष सदा ही एक दूसरेके हेतुका विपर्य्यास करते थे। गैरीबाल्डीको शासन-कार्य्यका अनुभव तो कुछ था ही नहीं। इस दशामें कहीं ऐसा न हो कि वह आसपासके उच्छृंखल लोगोंके पञ्जेमें फँस जाय और ऐसे ऊटपटाँग काम कर बैठे जिससे योरोपियन राष्ट्रोंके चक्करमें आजाय, एवं उसका फल पीडमाण्टके राज्यको भी भोगना पड़े, यह डर कावूरको था। इसी लिए वह इस बातके लिए तैयार न था कि गैरीबाल्डीके हाथमें एक-सूत्री अधिकार (dictatorship) अधिक दिन रहे। इसके विरुद्ध गैरीबाल्डी समझता था कि सम्पूर्ण इटलीको स्वतन्त्र करनेके लिए इस प्रकारकी सारी सत्ता उसके हाथमें रहना आवश्यक है। इस प्रकार इन दोनोंमें बहुत ही मत-भेद, नहीं बेबनाव, सा उत्पन्न हो गया। तब कावूरने यह निश्चय किया कि गैरीबाल्डीको असन्तुष्ट करनेसे राष्ट्रकी हानि ही होगी; अतएव युक्ति-प्रयुक्तिसे ही अपना काम निकालना चाहिए। तदनुसार उसने सिसली-प्रान्तको अपने राज्यमें जोड़नेका प्रस्ताव पार्लियामेण्टमें पेश करनेका खयाल छोड़ दिया। यदि कावूरने ऐसा न किया होता—सिसली गैरीबाल्डीसे ले लिया होता—तो उसका गौरव बढ़ जाता और वह फिर गैरीबाल्डीको शह भी दे सकता। परन्तु अपने गौरवकी अपेक्षा कावूरका ध्यान स्वदेश-हितकी ही ओर अधिक था। अतएव उसने गैरीबाल्डीका विरोध न करके उसे अपने इच्छानुसार काम करने दिया।

सिसलीकी राजधानी पालेर्मो हाथ आते ही गैरीबाल्डीकी सत्ता उस टापूमें सर्वत्र स्वीकार कर ली गई। तथापि मिलाजो नामक शहर-

के पास नेपल्सके राजाकी एक बड़ी भारी सेना उसे परास्त करनेके इरादेसे पड़ी हुई थी। गैरीबाल्डीके पास भी इस समय सेना खूब थी। बहुतसे नवीन सैनिक आ गये थे। अतएव उसने इस सेना पर आक्रमण करके २० जुलाई १८६० ईसवीके करीब उसे हरा दिया। सिसलीकी यह उथल-पुथल अकेले इंग्लैंडको ही पसन्द थी। क्योंकि स्वयं ग्लेडस्टन साहबने ही, कुछ वर्ष पहले, कहा था कि सिसलीकी शासन-पद्धति अत्यन्त जङ्गली और अत्याचारपूर्ण है। अतएव इंग्लैंड-के मन्त्रिमण्डलने कावूरको सलाह दी कि गैरीबाल्डीको अपनी इच्छाके अनुसार काम करने दीजिए। परन्तु फ्रान्स, रूस और आस्ट्रियाको सिसलीका यह स्थिति-परिवर्तन न रुचता था। वे आपत्ति करने लगे। परन्तु इन तीनों राष्ट्रोंमें ऐक्य-भाव न था। और रूस तथा आस्ट्रियाको इस झमलेमें पड़नेकी फुरसत न थी। अतएव वे केवल आपत्ति करके ही चुप रह गये। परन्तु फ्रान्सके सम्राट् तीसरे नेपोलियनका पोपसे तथा बोरबोन वंशीय राजासे निकट राजकीय सम्बन्ध था। अतएव उसने इस बातका प्रयत्न किया कि इंग्लैंड गैरी-बाल्डीके इस कार्य्यका जोरसे निषेध करे। इंग्लैंडने इस समय उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। तथापि पूर्वोक्त राष्ट्रोंने उससे कह दिया कि आप अपनी इच्छाके अनुसार कार्य्यवाही करनेके लिए स्वतन्त्र हैं। अर्थात् उन्होंने नेपोलियनको यह कह दिया कि यदि आपने गैरीबा-ल्डीका प्रतीकार किया तो हम लोग तटस्थ रहेंगे। इधर तो यह हो रहा था, उधर सिसली और नेपल्सके राजा दूसरे फ्रान्सिसने हार कर विक्टर इमेन्युअलसे दया-प्रार्थना की और पीडमाण्टसे मित्रता करके नियम-बद्ध शासनपद्धति (constitution) प्रचलित करना स्वीकार कर लिया। विक्टर इमेन्युअलने इससे तीन ही महीने पहले

उसको लिखा था कि अपने राज्यमें ऐसी शासन-पद्धति जारी कीजिए; परन्तु उस समय उसने यह स्वीकार न किया था, अतएव अब उसकी इस प्रार्थना पर ध्यान देना विक्टर इमेन्युअलके लिए सम्भव न था। परन्तु इधर यह रङ्ग दिखाई देने लगा कि यदि यह प्रार्थना अस्वीकार की जायगी तो नेपोलियन रुष्ट हो जायगा। अतएव उसे विवश होकर गैरीबाल्डीको बाह्यत: लिख देना पड़ा कि अब आगे नेपल्सके राजाके देश पर चढ़ाई न कीजिए। ज्योंही यह पत्र सरकारी तौर पर रवाना हुआ, कावूरने पालेर्मो-स्थित अपने जल-सेनाधिकारी (पर्सानो) को लिख भेजा कि आप अपनी चढ़ाईका काम पूरा कर डालिए। नेपल्सका राजा पीडमाण्टके राजवंशसे जब तब विरोध किया करता और उस राज्यकी राष्ट्रीय आकांक्षाओंकी वृद्धिमें बाधा डाला करता था। अतएव कावूरकी यह इच्छा थी कि यह कण्टक-भूत राज्यवंश जितने जल्द नष्ट हो जाय, अच्छा। उसकी सिद्धिके लिए उसने ऊपर कहे अनुसार गैरीबाल्डीको केवल सन्देश ही नहीं भेजा, बल्कि उसके—गैरीबाल्डीके—मेसिना जलडमरुमध्यके पार करके नेपल्सके राज्यके देशमें पाँव रखनेके पहले ही वहाँ बलवे पैदा करानेकी तरकीब लड़ा दी। इधर विक्टर इमेन्युअलके सरकारी तौरसे आये हुए पत्र पर गैरीबाल्डीने कुछ भी ध्यान न दिया-परन्तु उसने राजाको यह खयाल भी बनानेका मौका न दिया कि गैरीबाल्डीने मेरे पत्रका अपमान किया। गैरीबाल्डीने राजाके पत्रका यह उत्तर लिखा—

"महाराज! श्रीमानके चरणोंमें मेरी कितनी सादर भक्ति है यह श्रीमानको ज्ञात ही है। श्रीमानकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य्य है। परन्तु इटलीकी स्थिति देखते उसका मैं सर्वथा पालन नहीं कर सकता। नेपल्सपर चढ़ाई करनेके लिए वहाँके लोगोंने मुझे आह्वान किया है,

यही नहीं वे निरन्तर तकाजा भी कर रहे हैं । मैंने उनसे बार बार कहा—अपने प्रयत्नकी परकाष्ठा कर दी—कि इससे अधिक अच्छा, अधिक अनुकूल, मौका आने तक आप धीरज रखिए । परन्तु फल कुछ न हुआ । इस समय यदि मैं कदम पीछे करूँगा तो मैं अपने मातृ-भूमि-विषयक कर्तव्यसे भ्रष्ट होऊँगा और उसकी स्वतन्त्रताके महत्-कार्य्यमें बाधा पड़ेगी । अतएव इस समय श्रीमान् मुझे एक बार अपनी आज्ञा न पालन करनेकी अनुज्ञा कृपा करके दें । अत्याचार-पीड़ित अपने देशभाइयोंकी इच्छासे प्राप्त यह कर्तव्य पूर्ण होते ही मैं अपनी तलवार श्रीमानके चरणों पर रख दूँगा और फिर आमरण श्रीमानका आज्ञा-धारक सेवक बन कर रहूँगा । श्रीमानका—

गैरीबाल्डी ।"

इस तरह राजाकी उपेक्षा करके गैरीबाल्डी नेपल्स पर चढ़ाई करनेको तैयार हुआ । १९ अगस्तकी रातको उसने मेसिनाके जलडमरुमध्यको पार करके केलाब्रिया-प्रान्तमें प्रवेश किया । इस समय तक राज्यक्रान्तिकी हलचल नेपल्सके पड़ौसी बेसालिकाटा-प्रान्त तक फैल चुकी थी, फलतः गैरीबाल्डीका प्रवेश होते ही आस-पासके समस्त लोगोंके शरीरमें स्वतन्त्रता-देवीका सञ्चार होगया । वे बड़ी श्रद्धापूर्वक गैरीबाल्डीके आसपास जमा होगये और इस तरह स्वागत करने लगे मानों गैरीबाल्डीके रूपमें कोई देवदूत उनकी मुक्तिके लिए आया है । वहाँके समझदार आदमियोंने घोषणा कर दी कि नेपल्सके राजा दूसरे फ्रान्सिसकी सत्ता नष्ट होगई और स्थान स्थान पर क्रान्तिकारिणी कमेटियाँ स्थापन करके शासन-कार्य्य चलानेका प्रबन्ध कर दिया । इसका उच्छेद करनेके लिए नेपल्सके राजाने जो सेना भेजी थी वह भी बदल कर उसमें मिल गई ! इस तरह ग्लैडस्टनसाहब-वर्णित

"जङ्गली और अत्याचार-मूलक शासन-सत्ता" की इतिश्री, आनकी आनमें, होगई। तब गैरीबाल्डीने अपनी सेना पीछे छोड़ दी और कुछ चुने हुए जवान—सैनिक अधिकारी—साथ लेकर वह शीघ्रता-पूर्वक नेपल्स शहरको चल पड़ा। रास्तेमें उसका जगह जगह जयजयकार होता जाता था। यह खबर लगते ही कि गैरीबाल्डी नेपल्स-शहरके नजदीक आगया, वहाँके राजाके छक्के छूट गये। वह वहाँसे गेटा नामके बन्दरमें चला गया। दूसरे दिन दोपहरको अर्थात् ७ सितम्बर १८६० ईसवीको, गैरीबाल्डीने बड़े समारोहसे नेपल्स-शहरमें प्रवेश किया। राजा तो वहाँसे पहले ही चल दिया था। बस सारी सरकारी इमारतें गैरीबाल्डीके कब्जे हो गई। उस पर उसने विक्टर इमेन्युअलके झण्डे फहरा दिये। सारे शहरमें उसके नामकी दुहाई फिरवा दी और घोषणा कर दी कि सिसली और नेपल्स दोनों राज्योंका शासन भार (Dictatorship) मैंने अपने ऊपर लिया है।

१४—इटालियन राष्ट्रकी प्राण-प्रतिष्ठा।

पिछले प्रकरणमें कहा जा चुका है कि गैरीबाल्डीने सिसली और नेपल्सके राज्य प्राप्त कर लिये—दक्षिण-इटली पर अपना अधिकार कर लिया। अतएव कावूरने समझा कि अब सर्व इटालियन राष्ट्रके एकीकरणका अवसर उपस्थित हो गया है और वह उन राज्योंको विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल करनेका प्रयत्न करने लगा। मार्चेस और उम्ब्रिया ये दो राज्य पोपके अधीन थे। पोपके शासनसे ये प्रान्त बहुत तङ्ग हो गये थे—उकता उठे थे। अतएव इन प्रान्तों पर भी चढ़ाई करके उन्हें स्वराज्यमें मिलानेका निश्चय कावूरने किया। वहाँके लोगोंने

भी, कुछ दिन पहले, विक्टर इमेन्युअलके नामका जयघोष करके बलवा किया था। परन्तु पोपने उसे शान्त करके उन्हें डरानेके लिए वहाँ विदेशियोंकी एक सेना रख दी। इस सेनाका अधिपति था एक फ्रेञ्च सरदार—लामोरिसियर। इस सेनाने वहाँ बड़ा अत्याचार मचा रक्खा था। यह अवसर कावूरने अपने अनुकूल देखा और ७ सितम्बरको विक्टर इमेन्युअलकी तरफसे पोपके पास एक वकील भेजकर कहलाया कि "मार्चेस-प्रान्तमें विदेशी सेनासे बड़ी प्राणहानि हो रही है। इस ओर आपका ध्यान जाना चाहिए और उस सेनाको वहाँसे हटानेका प्रबन्ध होना चाहिए। नहीं तो विक्टर इमेन्युअलको विवश होकर उस प्रान्तके लोगोंकी रक्षा करना पड़ेगी।" कावूरका यह सन्देशा एक चाल मात्र थी। क्योंकि किसी न किसी बहाने उन प्रान्तों पर आक्रमण करनेका इरादा उसने पहलेही-से कर रक्खा था। यदि कावूर स्वयं ऐसा विचार न करता तो बहुत सम्भव था कि गैरीबाल्डी ही चढ़ाई कर देता। गैरीबाल्डी बड़ा साहसी और शूरवीर था। परन्तु उसके पास इतनी सेना नहीं थी, जो लामोरिसियरकी सेनाको परास्त कर सके। इस दशामें यदि कहीं उसे मुँहकी खानी पड़े तो आज तककी कमाई व्यर्थ जानेकी तथा फ्रान्सके बीचमें कूद पड़नेकी आशङ्का थी। इसके अतिरिक्त गैरीबाल्डीके द्वारा उन प्रान्तोंको जीत कर उन्हें विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें मिलानेकी अपेक्षा स्वयं विक्टर इमेन्युअलकी सेनाके द्वारा ही उनको हस्तगत करके स्वराज्यमें सन्निविष्ट करना राज-काजकी दृष्टिसे अधिक अभीष्ट था। पोपका 'रोमाग्ना' प्रान्त विक्टर-इमेन्युअलनें खालसा कर लिया था, अर्थात् पोपसे छीन कर अपने राज्यमें मिला लिया था। अतएव पोपने, कावूर, विक्टर इमेन्यु-

अल और उसकी प्रजाका बहिष्कार कर दिया था। बस, पोपकी अक्ल ठिकाने लानेके लिए यह एक अच्छा कारण मिल गया। कावूरने चढ़ाई करनेके पहले नेपोलियनसे अनुमति प्राप्त करनेके लिए अपने दो प्रतिनिधि भेजे। इन दिनों नेपोलियन अपने नव-प्राप्त सेवाय प्रान्तमें दौरा कर रहा था। वहाँ चेम्ब्रे नामक गाँवमें कावूरके प्रतिनिधिसे उसकी गुप्त मन्त्रणा हुई। अन्त पर्य्यन्त यह सम्भाषण इतना गुप्त रक्खा गया कि आज दिन उसकी ठीक तारीख भी मालूम करनेका कोई साधन नहीं। तथापि किंवदन्ती यह है कि नेपोलियनने उस समय हाँ हूँ करके कावूरको अपनी ही जवाबदेही पर सब कुछ करनेकी आजादी दे दी थी। तब कावूरने यह समझ-कर कि नेपोलियन कमसे कम हमारे कार्य्यका प्रतिकार न करेगा, जनरल कालिडर्नीके सेनापतित्वमें मार्चेस और उम्ब्रिया-प्रान्तोंके लिए बड़ी भारी सेना भेजी। उसने विक्टर इमेन्युअलसे कहा कि इस सेनाका आधिपत्य आप स्वयं ग्रहण कीजिए। विक्टर इमेन्युअलने उसकी राय पसन्द की और वह सेनाके साथ हो लिया। ११ सितम्बरको इस सेनाने पोपकी सीमामें प्रवेश किया। इस समय सिर्फ इंग्लैंड और स्वीडन राष्ट्रोंको छोड़कर शेष सब योरोपीय राष्ट्रोंने कावूरके इस कार्य्य पर अपनी अप्रसन्नता प्रकट की और विक्टर इमेन्युअलके दरबा-रमें अपने जो वकील थे उन्हें बुला लिया। नेपोलियन इस समय मार्सेल्समें था। उसके मन्त्रिमण्डलने उससे तार द्वारा पूछा कि "अब हमें क्या करना चाहिए" पर उसने कुछ उत्तर न दिया। तब फ्रेञ्च मन्त्रिमण्डलने रोमस्थित अपने वकीलके द्वारा इस आक्रमण पर अप्रसन्नता प्रदर्शित कराई और कहलाया कि उसके प्रतिकारके लिए हमने हुक्म छोड़ दिया है। परन्तु नेपोलियन

इस समय दुबिधामें था। अतएव उसका मन्त्रिमण्डल इस योजनाके अनुसार काम न कर सका। तथापि पोपके सेनापति लामोरिसियरने काल्डीनीकी सेनाका खूब ही मुकाबला किया। परन्तु अन्तमें काल्डी-नीने केस्टेल फिडारोकी पहाड़ी पर उसे परास्त कर दिया (१८ सितम्बर)। फिर वह आकोना शहरमें घुसा। परन्तु वहाँ भी सार्डिनियन सेनाने स्थल-जल पर घेरा डाल दिया। तब उसे लाचार होकर २९ सितम्बरको वह शहर भी उनके हवाले करना पड़ा। इसी बीच विक्टर इमेन्युअलके दूसरे सेनापति जनरल फांटाने उम्ब्रिया-प्रान्तके पेरुगिया शहर पर धावा बोल दिया और ज्यों ही वह विटर्बो शहरके पास आया, उसे समाचार मिला कि रोमस्थित फ्रेञ्च सेनाकी एक पल्टनने उस शहर पर अपना अधिकार कर लिया। यह नेपोलियनकी अधूरी नीतिका परिणाम था। परन्तु अधूरे काममें कभी सफलता नहीं मिल सकती, इस नियमकी प्रतीति करानेके ही लिए मानों फांटाने फ्रेञ्च-सेनाको हरा दिया और शहर अधिकृत कर लिया। इस पराजयके बाद लामोरिसियर खिन्न होकर स्वदेशको लौट गया। फलतः सारा मार्चेस-प्रान्त विक्टर इमेन्युअलके हाथ लग गया। वहाँसे निकल कर वह तो अपनी सेनासहित एब्रूजी प्रान्तमें प्रयाण कर रहा था और इधर गैरीबाल्डी और नेपल्सके राजाकी सेनाका घमासान युद्ध हो रहा था। (अक्टूबर १—२।) गैरीबाल्डीके पास इस समय २४ हजार सेना थी। परन्तु राजसैन्यकी संख्या इसकी दुगुनी थी। तथापि गैरीबाल्डीके जवान जी-जान लगाकर एकदिलसे लड़ रहे थे। अतएव जीत भी अन्तमें उन्हींकी हुई। इस पराजयसे राजाकी सेना ऐसी हताश हुई कि उसने फिर उनका नाम न लिया। तब गैरी-बाल्डी सिसली और नेपल्सका शासनकार्य्य स्वेच्छानुसार करने लगा।

कुछ योरोपीय राष्ट्र एक तो पहले ही गैरीबाल्डीके इन साहसपूर्ण कामोंसे असन्तुष्ट थे; इधर विक्टर इमेन्युअलको पोपके प्रान्तों पर चढ़ाई करते देख कर और भी अधिक भड़क उठे। उन्होंने कावूरके पास निषेधात्मक—अप्रसन्नता-दर्शक—खलीतोंका ताँता बाँध दिया और आस्ट्रिया तो युद्धकी घोषणा कर देनेकी भी तैयारी करने लगा। तब कावूर बड़ी चतुराईसे योरोपियन राष्ट्रोंके इस तूफानको शान्त करनेकी कोशिश करने लगा। उसने नेपोलियनकी अधूरी सम्मति—अनुज्ञा—पहले ही प्राप्त कर ली थी। इधर ब्रिटिश वकील सर जेम्स हडसनकी सहायतासे इंग्लैंडकी भी सहानुभूति किम्बहुना सम्मति ही प्राप्त कर ली। इंग्लैंडके पर-राष्ट्र-सचिव लार्ड जान रसेल कावूरका ही तरफदार था। उसके द्वारा कावूरने प्रशियाके राजाको भी तटस्थ-वृत्ति धारण करने पर राजी कर लिया। अब रह गये सिर्फ रूसके जार साहब। उसे अपना तरफदार बनानेके लिए आस्ट्रियाका सम्राट् विशेष रूपसे वार्सा पहुँचा था; परन्तु वहाँके लोगोने उसका विशेष आदरातिथ्य नहीं किया। जारने पोपके लिए इटलीके झगड़ेमें पड़नेसे इनकार कर दिया। तब लाचार होकर आस्ट्रियाको भी चुप बैठ जाना पड़ा। क्योंकि अब विक्टर इमेन्यु-अलके पास इतना जन-बल और सामग्री-बल था कि अकेले आस्ट्रियाका सामना वह कर सके। फिर आस्ट्रियाको यही डर था कि नेपोलियन कहीं बीचमें ही कुछका कुछ न कर बैठे। इस तरह इस तूफानके आप ही आप शान्त होनेका रङ्ग दिखाई दे रहा था कि इतनेही-में नेपोलियनने विक्टर इमेन्युअलके कार्य्यका विचार करनेके लिए प्रधान योरोपीय राष्ट्रोंकी परिषद् करनेका प्रस्ताव किया। परन्तु इस समय इंग्लैंडके पर-राष्ट्र-मन्त्री लार्ड रसेलने विक्टर इमेन्युअलके सब कार्य्योंका मण्डन स्पष्ट शब्दोंमें करके नेपोलियनका मुँह बन्द कर दिया।

उसने इस विषयमें इटलीस्थित अपने वकील सर जेम्स हडसनको स्पष्ट लिख दिया कि "इटलीकी वर्तमान राज्यक्रान्ति बड़ी बुद्धिमानी और मन्दगतिसे हो रही है। उसमें न तो कहीं अत्याचार ही किया गया है और न कोई गैर कानूनी बात ही हुई है। इस क्रान्तिमें विधि-विहित शासन-पद्धतिके तत्त्वोंकी अवहेलना नहीं की गई है। बल्कि इसके विपरीत एक विभवशाली राजवंशके राजपुरुषका सम्बन्ध उससे है। × × इस क्रान्तिके कारणों तथा चारों ओरकी परिस्थितिको देखते, आस्ट्रिया, रूस और प्रशियाकी तरह सार्डिनियाके राजाके कार्य्य पर अप्रसन्नता दिखलानेका कोई कारण श्रीमती रानी साहिबाको नहीं दिखाई देता। बल्कि इटालियन लोगोंको योरोपीय राष्ट्रोंकी सहानुभूतिसे अपने राष्ट्रकी स्वतन्त्र इमारत बनाते देख कर रानी सरकारको प्रसन्नता ही होती है।" अँगरेजी राज्यकी इस स्पष्टनीतिको देख कर नेपोलियनको भी खामोश रहना पड़ा। थोड़े ही दिनों बाद कावूरने सरकारी तौर पर प्रकट किया कि नेपल्स और मार्चेसकी घटनाओंका सम्बन्ध इटलीहीसे है। अतएव उनका निर्णय करनेका अधिकार हमीको है। अन्य राष्ट्रोंको हस्तक्षेप करनेका प्रयोजन नहीं। इधर पर-राष्ट्रोंमें इटलीके सम्बन्धमें इस तरह चर्चा हो रही थी; उधर विक्टर इमेन्युअल नेपल्सके लिए रवाना हुआ। कावूर चाहता था कि ये राज्य विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें मिला लिये जायँ। पर गैरीबाल्डी इस बात पर तैयार न था, अतएव उसे अप्रसन्न न करके कावूर इस कार्य्यको सिद्ध करनेकी चिन्ता करने लगा। नीस शहर जबसे कावूरने नेपोलियनको दे दिया था, तबसे गैरीबाल्डी उससे बहुत नाराज रहता था। तथापि कावूरके हृदयमें उसके प्रति पूर्ण आदर था और गैरीबाल्डीकी महत्त्वपूर्ण देश-सेवा पर भी उसका ध्यान था। अतएव उसने विक्टर इमेन्युअलको

खास तौर पर लिखा कि " गैरीबाल्डीसे मिलते समय बड़े सन्मानपूर्वक उससे व्यवहार कीजिएगा । " * इसके सिवा वह यह भी चाहता था कि उसके सैनिकोंकी देश-सेवाके उपलक्ष्यमें कृतज्ञता-पूर्वक उनका सत्कार किया जाय । इसके लिए उसे अपने सैनिक अधिकारियोंसे बड़ी कड़ी बहस करनी पड़ी । परन्तु गैरीबाल्डी कावूरके हृदय और उसके रहस्यको न जान पाया था । अतएव वह बराबर उसके खिलाफ आवाज उठाता रहा । कावूरकी यह सलाह कि सिसली और नेपल्स विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें सम्मिलित कर लिये जायँ, माननेके लिए वह तैयार न होता था । तब कावूरके कुछ मित्रोंने यह सलाह दी कि गैरीबाल्डीको अपनी इच्छा तृप्त करनेके लिए कुछ दिनों तक एक-सूत्री शासन करनेकी अनुज्ञा पार्लियामेंटसे दिला दीजिए; परन्तु कावूरने ऐसा करनेसे साफ इनकार कर दिया । उसने कहा—मैं अपने शीलको भङ्ग न करूँगा । जन्मभर मैंने जिन तत्त्वोंके अनुसार आचरण किया है उनके विरुद्ध मैं व्यवहार न करूँगा । मैं स्वतन्त्रताका उपासक हूँ और उसीके पुरस्कारके बदौलत मैं आज इस महत्त्वको प्राप्त हुआ हूँ । अतएव मेरे हाथों ऐसा काम कदापि न होगा जो स्वतन्त्रताका विघातक हो ।" कावूरके इन वचनोंसे यह अच्छी तरह जाना जा सकता है कि विधि-विहित राजनैतिक स्वतन्त्रताका वह कितना कट्टर अभिमानी था ।× इधर निश्चयके अनुसार विक्टर इमेन्युअल नेपल्स जा पहुँचा ।

---

* उसने लिखा—" गैरीबाल्डी मेरा बड़ा शत्रु बन गया है; परन्तु उसका पूरी तरह सन्तुष्ट हो जाना इटलीके कल्याण और महाराजके गौरवकी दृष्टिसे अभीष्ट है ।"

× कावूर लोक-नियन्त्रित शासन-पद्धतिका—पार्लमेंटरी गवर्नमेंटका—बड़ा उपासक और कट्टर अभिमानी था । एक वार उसने कहा था " प्रामाणिक और उद्योगी—कर्तव्य-क्षम मन्त्रिमण्डलको इस पद्धतिसे डरनेका कुछ भी

तब गैरीबाल्डीने आदर-पूर्वक उससे मुलाकात की और उसने भी उसका यथोचित सत्कार किया। परन्तु राज-काजकी—शासन-विषयकी—बातचीत छिड़ते ही गैरीबाल्डीने उससे प्रकटरूपसे अनुरोध किया कि आप कावूरको पदच्युत कर दीजिए। अपने प्रति गैरीबाल्डीके सदृश मनुष्यके इस प्रकार प्रकट रूपसे अनादर और अविश्वास प्रकट करने पर कावूर खामोश न रह सका। उसने तत्काल ही पार्लियामेण्टका अधिवेशन किया और कहा कि—"गैरीबाल्डीके सदृश प्रख्यात देशभक्त मनुष्यने हमारी कार्यक्षमता पर अविश्वास प्रकट किया है। अतएव इस बातका निर्णय होना आवश्यक है कि हम अपना काम आगे बढ़ायें या इस्तीफा पेश करें।" तब पार्लियामेण्टने प्रकट किया कि आप पर हमारा पूर्ण विश्वास है। तदुपरान्त उसने यह प्रस्ताव सभामें पेश किया कि दक्षिण और मध्य इटलीके जो राज्य बहुमतसे

प्रयोजन नहीं। यह तो बड़ी अच्छी चीज है। किसी भी पक्षके मूलगामी लोगोंकी धमकियोंकी परवा न करके शासन-कार्य्य सुचारुरूपसे चलानेमें इस पद्धतिका बड़ा उपयोग होता है। १३ वर्षोंके अपने अनुभवसे मेरा यही मत पक्का हो गया है। कावूरके एतद्विषयक भाषणकी प्रतिमा पेट्रो ओर्सी नामके कावूरके एक चरित्र-लेखकने इस प्रकार खींची है—

"अन्य शासन-शैलियोंकी तरह लोकनियन्त्रित शासन-प्रणालीमें भी बाधायें और कठिनाइयाँ होती हैं; परन्तु इन त्रुटियोंके होते हुए भी अन्य सभी शासनप्रणालियोंकी अपेक्षा यह श्रेष्ठतर है। हाँ, कुछ विशेष प्रकारका विरोध मुझे बिलकुल सहन नहीं होता और मैं उसका बल-पूर्वक प्रतिकार करता हूँ। परन्तु उसके विरोधका परिणाम मेरे अनुकूल ही होता है। क्योंकि उससे मुझे अपने विचार अधिक स्पष्ट रूपसे प्रकट करनेमें और जनताकी सम्मति प्राप्त करनेमें दुगुने बलसे प्रयत्न करना पड़ता है। अनियन्त्रित मन्त्री तो आज्ञा करता है परन्तु नियन्त्रित मन्त्रीको लोगोंको अपने अनुकूल बनाना पड़ता है। मेरी इच्छा सदा रहा करती है कि लोगोंको यह समझाकर निश्चय करा दूँ कि मेरा मार्ग अच्छा है।

विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल होनेको तैयार हों उन्हें अपने राज्यमें मिला लिया जाय। सभामें यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। (१ अक्टूबर।) अर्थात् कावूरने गैरीबाल्डीको मात कर दिया। तब गैरी-बाल्डीको भी होश हुआ। उसने अपने परामर्षदाताओंको बुलाया और उनकी राय पूछी। फिर अपने ही हाथोंसे विक्टर इमेन्युअलको खलीता लिख भेजा कि ये प्रान्त आप अपने राज्यमें जोड़ लीजिए। इस तरह गैरीबाल्डीने अत्यन्त साहस और कठिन परिश्रमसे प्राप्त दोनों प्रान्त आनकी आनमें निस्स्वार्थ-भावसे विक्टर इमेन्युअलको अर्पण कर दिये। विक्टर इमेन्युअलने उसे बड़ी पदवी, जागीर, जहाज और सम्पत्ति देना चाही, पर उसने इनमेंसे किसीका भी स्वीकार न किया। जैसा आया वैसा ही खाली हाथ अपने घर लौट गया। इतना निस्सीम स्वार्थत्याग और अपरिमित देशभक्ति बहुत कम लोगोंमें मिलती है। गैरीबाल्डीकी इस निस्वार्थ देशसेवाके कारण उसकी कीर्ति समस्त योरप खण्डमें फैल गई और मृत्युके पश्चात् भी उसका नाम अजरामर हो गया। कावूर गैरीबाल्डीकी चित्तवृत्तिको अच्छी तरह जानता था। उसे पह-चानकर ही उसने उसे इस प्रकार अपना कथन स्वीकार करने पर विवश किया। इसमें कावूरको सफलता भी मिली, जिससे उसके दिलको बड़ा सन्तोष हुआ। गैरीबाल्डीके अपने घर (कैप्रेरा टापू) चले जानेके बाद कावूर कुछ दिनके लिए नेपल्स गया। वहाँके लोगोंने उसका बड़ा सत्कार किया। फिर शीघ्र ही, मार्चेस, उम्ब्रिया, सिसली और नेपल्सके लोगोंके मत लिये गये। चारों प्रान्तोंका बहुमत हुआ कि विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें हम शामिल कर लिये जायँ। तब नवम्बर १८६० ईसवीमें वे बाकायदा स्वराज्यमें सम्मिलित किये गये। इस तरह, कावूरकी इच्छाके अनुसार उसीके हाथों इटली-राष्ट्रका एकी-

करण हो गया। कावूरने अपनी कल्पनाके अनुसार इटालियन राष्ट्रका निर्म्माण तो किया; परन्तु अभी उसमें दो तीन कण्टक विद्यमान् थे। और जब तक वे चूर्ण न हों, कावूरको तसल्ली न होती थी कि राष्ट्र-निर्म्माण-कार्य्य पूर्ण हो गया। पहला कण्टक था पोप। उसके अधिकारमें रोम और उसके आसपासका बहुतसा भाग बाकी बच रहा था। दूसरा शल्य था नेपल्सका राजा। वह अभी गेटा-बन्दरमें नेपोलियनके आश्रयमें था। किस समय वह नेपोलियनकी सहायतासे उठ खड़ा होगा, इस बातका निश्चय नहीं था। इस लिए कावूर पहले उसीकी दवामें लगा। उसने अपनी सेनाके द्वारा जल और स्थल दोनों मार्गसे उस बन्दरको घेर लिया और शहर पर कब्जा कर लेनेका प्रयत्न शुरू कर दिया। ब्रिटिश सरकारने नेपोलियनको समझा बुझाकर कहा कि अब आगेसे इटालियन लोगोंके रास्तेमें व्यर्थके विघ्न न उपस्थित कीजिएगा। तब उसने गेटा-बन्दरसे अपनी जल-सेनाको बुला लिया, जो नेपल्सके राजाकी रक्षाके लिए उसने वहाँ रक्खी थी। इसके थोड़े ही दिन बाद नेपल्सका राजा फ्रेन्सिस, नेपोलियनकी रायसे, एक फ्रेञ्च जहाजमें बैठकर पोपके राज्यमें चला गया। इस तरह यह कण्टक निर्मूल होकर गेटा-बन्दर विक्टर इमेन्युअलके अधीन होगया। (१३ फरवरी १८६१ ईसवी।) सैनिक दृष्टिसे यह बन्दर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था। इसके हस्तगत हो जानेसे कावूरकी एक चिन्ता दूर हुई। तीसरा कण्टक था—वेनिशिया प्रान्त। यह प्रान्त अभी तक आस्ट्रियाके ही अधीन था। रोम और वेनिशिया इन कण्टकोंका निर्मूलन आसान नहीं था। अतएव इस कामको उसने आगे पर छोड़ दिया और उनको छोड कर अन्य इटालियन राष्ट्रोंकी नवीन पार्लियामेण्ट बनानेके उद्योगमें वह लगा।

इटलीका नक़शा निकालकर देखिए। पश्चिमकी ओर रोम शहर है और उसके आसपास एक छोटासा प्रान्त है। यही पोपके अधीन था। उत्तरकी ओर आस्ट्रियाकी सरहदसे लगा हुआ वेनिशिया अर्थात् वेनिसका प्रान्त है। यह आस्ट्रियाके कब्जेमें था। इन दो छोटेसे प्रान्तोंको छोड़कर शेष सारा इटली देश अब विक्टर इमेन्यु-अलकी छत्रच्छायामें आगया था। उस समस्त राज्यको "इटालीके राज्य" संज्ञा दी गई। फिर १८ फरवरी, १८६१ ईसवीको टयूरिनमें समस्त इटालियन राष्ट्रोंकी पहली पार्लियामेण्ट सभा हुई जिसमें प्रकट किया गया कि यह राज्य विक्टर इमेन्युअलके शासनाधिकारमें किया गया है। इस समय इस सभाके सभासदोंकी संख्या ४४३ तक बढ़ गई थी। इटलीके प्राय: सभी प्रख्यात पुरुषोंका समावेश उसमें किया गया था। कार्य्यारम्भ होनेके पहले प्रथम विक्टर इमेन्युअलका प्रास्ताविक भाषण हुआ। उसमें उसने आज तककी घटनाओंका थोड़ेमें सिंहावलोकन करके कहा कि इटालियन राष्ट्रकी भव्य इमारत खड़ी करनेका काम मेरी जिन्दगीहीमें पूरा होगया, इस बातकी मुझे बड़ी खुशी है। फिर उसने उन सज्जनोंके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापन की जिन्होंने इस काममें परिश्रम किया और सहायता दी थी। उसमें उसने इंग्लैंडके प्रति अपना बहुत आदर-भाव व्यक्त किया।*

---

* "इंग्लैंड स्वतन्त्रताकी मातृ-भूमि है। वहाँकी जनता और सरकारने अपनी उन्नति आप ही कर लेने (Arbiter of one's fate) का स्वत्व बड़े उदारता-पूर्वक (Nobly) स्वीकार किया है और हमारे काममें सहायता देनेमें भी उन्होंने उदारतासे काम लिया है। इसके लिए उनके प्रति हमारा कृतज्ञता-भाव अविचल रहेगा।"—पीट्रो ओर्सी-लिखित कावूरका चरित्र, पृष्ठ ३२७।

आजतक विक्टर इमेन्युअलके नामके साथ 'सार्डिनियाके राजा' यह मामूली खिताब लगाया जाता था। पर अब उसे 'इटलीके राजा' पदवी धारण करना आवश्यक था। अतएव इसके लिए एक बिल अर्थात् कानूनका मसविदा सभामें पेश किया गया। उसीमें इटालियन राष्ट्रके एकीकरणका भी उल्लेख था। पर कानून समस्त मुख्य इटालियन लोगोंकी इच्छाके अनुसार पेश किया गया था। अतएव उसकी भाषामें ही थोड़ी बहुत काट-छाँट होकर १४ मार्चको वह सेनेट और चेम्बर दोनों सभाओंमें एकमतसे पास हुआ। १७ मार्चको उस पर राजाने अपने हस्ताक्षर किये और वह बाजाब्ता कानून माना गया। विक्टर इमेन्युअलको नोवेराके पराजयके पश्चात् खिन्न दशामें पीडमाण्टकी गद्दी स्वीकार किये आज कोई १२ वर्ष हो गये थे। इतनी अवधिमें मैं समस्त इटलीका अधिपति होजाऊँगा, इसका खयाल भी उसे न हुआ होगा। उसकी इच्छा और महत्त्वाकांक्षा तो थी कि इटालियन राष्ट्रका एकीकरण हो। परन्तु जिस समय वह सिंहासनारूढ़ हुआ उस समयकी परिस्थिति बड़ी निराशाजनक और विकट थी। उससे पार पाकर अपने जीवन-समयमें ही यह शुभ दिन देखना मिलेगा, इसका निश्चय उसे अवश्य ही न था। स्वयं कावूर भी यह नहीं जानता था कि यह सुदिन इतना शीघ्र उदय हो जायगा। परन्तु उसके सदृश सुयोग्य राज-काजी मनुष्यके परिश्रम और भाग्यकी अनुकूलता इन दोनोंके योगसे, जो उसे एक ही समयमें प्राप्त हो गये थे, विक्टर इमेन्युअल अपने जीवनमें ही अपनी महत्त्वाकांक्षाको सफल देख सका। अस्तु। परन्तु इटालियन राष्ट्रका स्वतन्त्र राज्य स्थापित हुआ देख पोप और आस्ट्रियाके सम्राटको बड़ा सन्ताप हुआ। आस्ट्रियाके पत्रोंने तो बड़ी अपमानजनक भाषाके द्वारा अपने द्वेष-

के फूत्कार प्रकट किये। परन्तु पोपप्रान्तीय और वेनिशियाके लोगोंने नूतन इटालियन राष्ट्रंका हृदयसे अभिनन्दन किया। इसी बीच इंग्लैंडने भी इस नव-स्थापित राज्यको स्वीकार किया। उसके पश्चात् शीघ्र ही अमेरिका और स्विजरलैंडने भी उसे स्वीकार कर लिया।

नवीन राज्यकी स्थापना होने पर वैध शासनपद्धतिके शिष्टाचारके अनुसार कावूरने अपने सहित अपने मन्त्रि-मण्डलका इस्तीफा दिया। विक्टर इमैन्युअलको कावूरका अभिमान सहन न होता था। अतएव केवल शिष्टाचारके लिए दिये गये कावूरके क्षण-कालीन इस्तीफेको उसने सदाके लिए मंजूर करके बैरन रिकाजोलीको प्रधान मन्त्रीका पद देनेकी योजना की। परन्तु उसने राजाको यही सलाह दी कि आप कावूरको ही फिरसे प्रधान मन्त्री बनाइए। तब उसने कावूरको ही कहा कि नये मन्त्रि-मण्डलका सङ्गठन कीजिए। कावूरने पहलेसे ही सङ्गठन कर रक्खा था। इस बार उसने अपनी तरफ पर-राष्ट्र-विभाग और जल-सेना-विभाग दोनोंका काम रक्खा था। उसके अभीष्ट कार्य्यका अत्यन्त बिकट और कठिन समय अब बीत गया था। और पिछले कामोंके बदौलत सारे योरप-खण्डमें राज-काजीके नामसे उसका गौरव और महत्त्व भी बहुत बढ़ गया था। उसकी कार्य्य-क्षमता पर उसके देश-भाइयोंका पूरा विश्वास हो गया था। उसे स्वयं भी अपने बुद्धिसामर्थ्य पर पहलेसे अधिक विश्वास हो चला था। इस दशामें उसके देश-बन्धुओंको तथा स्वयं उसे भी यह जान पड़ता था कि वेनिशिया और रोमका प्रश्न भी सहज ही हल हो जायगा। कोसुथ नामके एक हङ्गेरियन देश-भक्तसे उसने एक बार कहा था—"मेरे और राजाके इच्छानुसार यदि परमेश्वरकी भी इच्छा होगी तो आगामी जाड़ेमें——कमसे कम एक वर्षके भीतर—वेनिशिया हमारे

अधीन हो जायगा और हङ्गेरी स्वतन्त्र होगा।" इसके थोड़े ही दिन बाद वेनिशियन देशभक्त डेनियल मानिनके स्मारकमें ट्यूरिनमें एक उत्सव हुआ। कावूर यह दिखलानेके लिए कि वेनिशियन लोगोंका खयाल उसे है, उस समारम्भमें उपस्थित हुआ। इसके सिवा आस्ट्रियाके पञ्जेसे वेनिशियाको छुड़ानेके लिए उसने प्रशियाके सम्राटसे कुछ गुप्त मन्त्रणा भी आरम्भ की थी। रोमके लिए तो उसने और भी ढीठतासे काम लिया। परन्तु दुर्दैववश, उसी वर्ष, उसका देहावसान होगया। अतएव उसकी यह इच्छा 'मनकी मनहीमें' रह गई!

१५—कावूरका अन्तिम साहस और स्वर्गवास।

रोम-रूपी कण्टक यद्यपि बिकट था तथापि उसे निर्मूल किये बिना इटालियन राष्ट्रका सङ्गठन स्थायी नहीं हो सकता था। दाक्षिण-इटलीके राज्य विक्टर इमेन्युअलके अधिकारमें आनेके पहले ही उसने ट्यूरिनकी पार्लियामेण्टमें रोमको हस्तगत करनेकी आवश्यकता स्पष्ट शब्दोंमें प्रकट की थी। यही नहीं, इटालियन राष्ट्रकी पहली पार्लियामेण्ट भी इसी बात पर अधिक ध्यान दे, इस लिए उसने चेम्बरमें एक प्रस्ताव भी उपस्थित किया। उसका आशय यह था कि रोम-नगर इटालियन राष्ट्रकी भावी राजधानी बनाया जाय। इस प्रस्ताव पर उसने जो भाषण किया वह देशमें बहुत विख्यात हो गया है। कावूर दर्शकों—उपस्थित जनसमाज—की कल्पनाशक्तिको प्रज्वलित करके तालियाँ पिटवानेवाला वक्ता न था। उसका व्याख्यान सदा विचार-परिप्लुत, उदात्त और गम्भीर तथा तर्क-शास्त्रसम्मत होता था। अतएव विचार-शील लोगोंके हृदय पर उसका विलक्षण प्रभाव पड़ता था। उनका

चित्त झट उसकी बात स्वीकार कर लेता था। उसकी भाषा आलङ्कारिक न होती; परन्तु आत्म-प्रत्यय और आत्म-विश्वासके तेजसे सनी हुई ही होती थी। प्रत्येक विषयका विवेचन कार्य-कारण-परम्पराके अनुसार सुश्रृङ्खल होता था। अतएव उसके व्याख्यानोंका प्रभाव क्षणिक नहीं, दीर्घकालिक होता था—बहुत दिनों तक रहता था। अपनी इस शैलीका अनुसरण करके कावूरने पार्लियामेण्टको दिखला दिया कि "रोम शहर जब तक इटलीकी राजधानी न होगा, राष्ट्रकी एकता स्थायी न होगी।" अपनी जन्म-भूमि ट्यूरिनको छोड़कर रोमको जाना यद्यपि उसे अच्छा न मालूम होता था, तथापि 'रोम' के दो अक्षरोंमें २५०० वर्षोंका देदीप्य-मान इतिहास भरा हुआ था। इटालियन राष्ट्रसे उसका अति निकट सम्बन्ध था। अतएव नैतिक और राजकीय दृष्टिसे वही शहर उस राष्ट्रकी राजधानीके उपयुक्त उसे जँचता था। रोम शब्दमें भरा हुआ जादू अथवा उसके विषयमें इटालियन लोगोंकी, नहीं सारे संसार की, विशेष भावना ही मानों इटालियन राष्ट्रका प्राण थी। रोमके बिना इटालियन राष्ट्र निर्जीव है। उसे सजीव करके चिरस्थायी बनाना चाहिए। पर इसके लिए रोमको राजधानी बनाना अत्यन्त आवश्यक था। और इसी बात पर कावूरने पार्लियामेण्टका ध्यान आकर्षित किया। रोमको हस्तगत करनेके लिए पोपकी सत्ता नष्ट करना अनिवार्य्य था। और कावूर बहुत दिनोंसे उसे निर्मूल करने-की फ़िकरमें भी था। उसका कहना था कि धर्म्मसत्ता और राज-सत्ता एक दूसरेसे अलग रहनी चाहिए। उसका खयाल था कि धार्मिक स्वतन्त्रता मिलने पर लोग अधिक धर्मनिष्ठ होंगे—धर्म-कार्य्य अच्छी तरह होगा। उस भाषणमें कावूरने इस बातका भी स्पष्टीकरण

किया था। इस प्रस्ताव पर खूब वाद-विवाद हुआ। पर अन्तमें, २७ मार्च, १८६१ ईसवी, को पार्लियामेण्टके चेम्बरमें वह प्रायः एकमतसे पास हो गया।

परन्तु इस घटनाके पहले ही काबूरने पोप और नेपोलियनसे गुप्त रूपसे बातचीत शुरू कर दी थी। उसे निश्चय था कि मुझे सफलता भी मिलेगी। परन्तु भवितव्यता कुछ और ही विचारमें थी। अतएव इस कार्य्यमें सिद्धि प्राप्त करनेका सौभाग्य उसे न प्राप्त हुआ। इन्हीं दिनों पार्लियामेण्टमें एक बात दर पेश थी। गैरीबाल्डीके जिन स्वयंसैनिकोंने इटालियन राष्ट्रके सङ्गठनके लिए अपना खून बहाया था, उनका उचित आदर-सत्कार करके उनमेंसे कुछ लोगोंको यथाशक्य सैनिक पद देने न देनेके सम्बन्धमें विचार हो रहा था। काबूरका कहना था कि इस विषयमें बहुत ही उदारतासे काम लेना चाहिए। परन्तु उसके सैनिक परामर्श-दाता इन सैनिकोंको सेनामें सम्मिलित करनेके लिए तैयार न होते थे। अतएव इस बात पर मन्त्रिमण्डलमें तीव्र मतभेद उत्पन्न हो गया था। इससे उसके चित्तको बड़ी ही व्यथा पहुँची। तथापि इस मतभेदका परिस्फोट होने देना राजनैतिक दृष्टिसे काबूरको अभिमत न था। अतएव वह अपने मित्रोंको अपने तौर पर समझानेका यथासाध्य प्रयत्न करने लगा। इतनेहीमें कुछ स्वयंसैनिक, मन्त्रिमंडलकी इस नीतिसे असन्तुष्ट होकर गैरीबाल्डीके पास जा पहुँचे और उन्होंने उससे इसकी शिकायत की। इसका फल यह हुआ कि उसका खयाल काबूरकी तरफसे और भी खराब हो गया। वह सन्तप्त होकर ट्यूरिनको आया। पार्लियामेंटके चेम्बरमें उपस्थित होकर उसने मन्त्रिमण्डलकी नीतिका भरी सभामें तीव्र निषेध किया और कहा कि—"काबूर देशमें विरोध फैलानेका प्रयत्न कर रहा है।" व्यक्ति-विषयक निन्दा

तो कावूरने शान्तिपूर्वक सहन कर ली। परन्तु जब उस पर देशमें विरोध फैलानेका आरोप किया गया तब वह चुप न बैठ सका। वह भी कुछ कम उग्र न था, तुरन्त ही इस आरोपका उत्तर देनेको उठ खड़ा हुआ। उस समय सब सभासदोंमें सनसनी फैल गई। वे डरे कि इन दोनों महान् देशभक्तोंमें कहीं ठनाठनी न हो जाय। परन्तु कावूर अच्छी तरह जानता था कि गैरीबाल्डीसे ठनाठनी होनेसे उसका परिणाम इटलीके लिए हानिकारक होगा। अतएव वह सिर्फ उसके आरोपका निषेध भर करके शान्तिपूर्वक बैठ गया। कावूरका स्वभाव यद्यपि उग्र था तथापि वह था राजकाजी आदमी। अपने क्रोधको रोकनेमें वह बहुत कुछ सिद्ध-हस्त था। उसने इस समय पूरी सहन-शीलताका अवलम्बन करके गैरीबाल्डीको खूब मनभाना बोलनेका अवसर दे दिया। गैरीबाल्डीके भाषणकी समाप्तिके बाद बड़े शान्त और गम्भीर भावसे उसने उत्तर दिया। आरम्भमें उसने कहा—"गैरीबाल्डी साहब जो मुझसे मनमुटाव रखते हैं उसका एक कारण है। वह मुझे भी ज्ञात है। परन्तु जिस बातसे—सेवाय और नीस प्रान्त फ्रान्सको देनेकी सलाह राजा और पार्लियामेंट सभाको देनेसे—वे अप्रसन्न हैं उसे मैंने एक अत्यन्त खेदजनक कर्तव्य समझकर किया है। इससे स्वयं मुझे जो दुःख हुआ उससे मैं अनुभव करता हूँ कि गैरीबाल्डी साहबको कितना दुःख होता होगा। इस घटनाके लिए यदि उन्होंने मुझे न क्षमा किया तो मैं उन्हें दोष न दूँगा।" फिर उसने गैरीबाल्डीके आक्षेपोंका यथोचित खण्डन किया।

गैरीबाल्डी और कावूरके इस बेबनावको देखकर विक्टर इमेन्यु-अलको बड़ा दुःख हुआ। उसने दोनों सज्जनोंको अपने राज-प्रासादमें बुलाकर उनमें मेल करा दिया। उस समय कावूरने गैरीबाल्डीके

सामने दिल खोलकर इस बातका स्पष्टीकरण किया कि आस्ट्रिया और फ्रान्सके साथ व्यवहार करनेके लिए किस नीतिका अवलम्बन किया गया है तथा आगे किया जायगा। तब गैरीबाल्डीके भी गले उसकी बात उतर गई और उसने कावूरका कार्य्य-क्रम पसन्द किया। इस तरह इन दो प्रख्यात और कार्य्य-क्षम देशभक्तोंके हृदयका पारस्परिक वैमनस्य दूर हो गया। इसके थोड़े ही दिन बाद (१८ मई १८६१ ईसवी) गैरीबाल्डीने कावूरको इस आशयका पत्र लिखा—

" विक्टर इमेन्युअल इटलीके बाहु और आप इटलीके मस्तक हों। आपके विशाल सामर्थ्य पर और देशहित करनेकी दृढ़ इच्छा पर भरोसा रखकर मैं इस बातकी बाट जोहता रहूँगा कि कब मुझे फिरसे समरभूमिके लिए आह्वान हो।" इससे कावूर और गैरीबाल्डीकी आत्मसान्त्वना—दिलजमई तो हो गई; परन्तु देश-हितार्थ उसका उपयोग करनेके लिए कावूर बहुत दिनों तक संसारमें न रहा। इटलीके राष्ट्रका सङ्गठन करके उसका एकच्छत्र राज्य किया जाय, इसके लिए पिछले १२ वर्षों तक उसने जो प्राणपणसे परिश्रम किया उससे कावूरका स्वास्थ्य खराब हो चला था और उसके लक्षण स्पष्ट रूपसे उसके चेहरे पर देख पड़ने लगे थे। तथापि उसे यह खयाल न था कि मैं इतनी जल्दी चल बसूँगा। वह समझता था कि रोम-शहरको इटलीकी राजधानी बनानेके बाद मेरा स्वीकृत कार्य्य पूर्ण होगा और उसे मैं पूर्ण कर सकूँगा—उतने दिन मैं जीऊँगा। तथापि उसका स्वास्थ्य दिन पर दिन बिगड़ता ही गया। उसे व्यायाम या मनोरञ्जनकी आदत न थी। मनोरञ्जक साहित्यसे भी उसे विशेष प्रेम न था। उसका सारा ध्यान एक मात्र इटालियन कार्य्यकी ओर ही लगा रहता था। दिन रात उसके दिमागमें यही विचार घूमा करता था। उसकी सिद्धिके

लिए वह मन-वचन कर्म्मसे निरन्तर उद्योग किया करता था। कभी उसका चित्त स्वस्थ न रहा—उसे विश्राम न मिला। उसका स्वभाव कुछ उग्र—क्रोधी—था। अतएव वह किसी भी कार्य्यको तत्काल कर डालनेका आदी हो गया था। इससे उसके मनको बहुत परिश्रम करना पड़ता था। यह काम बढ़ जाने पर तो उसके मस्तिष्क पर अधिक ही बोझ पड़ने लगा। इससे, आगे चल कर, उसे रातमें गाढ़ी नींद न पड़ने लगी। बिछौने पर पड़े रहते भी उसके दिमागमें निरन्तर विचारोंका तूफान उठा करता था। उसको रोकनेके लिए वह जहाँ नींद न आई कि कमरेमें कुछ देर टहलने लगता और थोड़ी देरके बाद फिर सोनेकी कोशिश करता। परन्तु इसका भी विशेष फल न होता था। पल भर आँखें लगीं या न लगीं कि फिर विचारोंका तूफान उठ खड़ा हुआ। इससे वह भी जान गया था कि मेरे मस्तिष्ककी अवस्था अच्छी नहीं है। उसने अपने मित्र केस्टेलीसे कहा भी था कि " अब मेरा दिमाग मेरे बसका न रहा। " पर उसने विश्राम ग्रहण न किया, या यों कहिए कि विश्राम-ग्रहणकी गुंजायश ही उसे न थी। दक्षिण इटलीके राज्य उसके अधीन हो जाने पर उसकी झञ्झटें और भी बढ़ गई थीं। रोज एक न एक नवीन विषय उपस्थित होता था और उसका मन व्यग्र हो जाता था। ऐसे समय भला विश्राम ग्रहण करनेकी बात उसे कैसे अच्छी लगती! पार्लियामेण्टके अधिवेशनोंमें वह कभी गैरहाजिर न रहता था। महत्त्वपूर्ण कार्य्य वह कभी अपने मातहतों (Subordinates) को न सौंपता था। निद्रा नाशके कारण उसके मस्तिष्क पर बहुत जोर पड़ रहा था। परन्तु इसी स्थितिमें वह चार महीने और घसीट ले गया। तब मईके उत्तरार्धमें उसके स्वभाव और व्यवहारमें फर्क पड़ने लगा। उसके चेहरे पर

क्षीणताकी छाया पहले ही पड़ चुकी थी। अब उसका स्वभाव चिढ़चिढ़ा और उतावला हो गया। अब विपक्षकी टीका—आलोचना—उसे सहन न होने लगी। पार्लियामेण्टकी बहसोंमें उसका सिर घूमने लगता। एक दिन पूर्वोक्त सभामें अपने स्थान पर बैठे हुए उसने कहा—"इटालियन राष्ट्रका एकीकरण हो जाने पर देशके अलङ्कारशास्त्रके अध्यापकोंके समस्त पद तोड़ देनेका एक बिल अर्थात् कानूनका मसविदा मैं पार्लियामेण्टमें पेश करनेवाला हूँ।" उसी दिन अर्थात् २९ मईकी शामको, उसे जोरका बुखार आया। उसका गृह-वैद्य वहाँ मौजूद न था। दूसरा डाक्टर बुलाया गया। काबूरने उससे विशेष प्रकारके औषधोपचार करनेको कहा। तदनुसार कोई चार दिनोंमें पाँच बार उसके शरीरसे खून निकाला गया। तब उसे कुछ आराम मालूम होने लगा। इसी समय उसने सरकारी काम-काज देखनेकी इच्छा प्रकट की और घर पर कौन्सिलके मेम्बरोंको बुलाया। कौन्सिलके सभासदोंको भी उसकी तबीयत कुछ अच्छीसी मालूम हुई। अतएव उन्होंने भी कुछ आपत्ति न की। घण्टों वह उनसे बातचीत और काम-काज करता रहा। इससे तबीयत फिर गिरने लगी। दूसरे दिन पहलेसे भी जोरका बुखार चढ़ा। एक दो दिनके बाद तो तबीयत बहुत ही खराब हो गई। बीचमें वह बर्राने लगा—सन्निपात हो गया। इसी दशामें वह सहसा चिल्ला उठा—" राजा साहबको बुलाओ।" पास आनेवाले लोगोंको वह पहले तो पहचान लेता; परन्तु फिर धीरे धीरे भूलता जाता। उसकी बीमारीकी खबर तत्काल सारे शहरमें फैल गई। सुनते ही झुण्डके झुण्ड लोग उसके मकानके आस-पास जमा हो गये। तबीयतका हाल जाननेके लिए सब बड़े चिन्तित थे। पर हालत खराब ही होती गई। यह देखकर उसके घरके लोगोंने

अन्तिम धर्म-संस्कारके लिए फ्रा गायकोमो नामक धर्मोपदेशकको बुलाया। उसी दिन अर्थात् ५ जूनकी शामको, विक्टर इमेन्युअल भी उसको देखने आया। बिछौनेके पास आते ही कावूरने उसे पहचान लिया और वह चिल्ला उठा— O Maesta (स्वामिन्) परन्तु फिर उसे भूलता गया। राजा उसको सान्त्वना दे रहा था। बीचहीमें उसने उन्हें रोककर कहा—" यह नेपोलियनकी सेना यहाँसे हटा देनी चाहिए। " * इतना कहने पर फिर उसने हुक्म दिया कि " हमारा सेक्रेटरी कल सबेरे पाँच बजे काम-काज लेकर यहाँ आवे। " फिर कहा—" समय खोना अच्छा नहीं। " इसी तरह लगातार बकता-बर्राता था। अपने जीवनमें जो जो काम उसने किये और जिन कामोंको आगे वह करना चाहता था उन्हींके सम्बन्धमें वह बकता झकता था। दूसरे दिन, ६ जून १८६१ ईसवीको, सबेरे मानों मैं पार्लियामेंण्ट सभामें मन्त्रीके नातेसे भाषण कर रहा हूँ इसी खयालमें वह बर्रा रहा था कि एकाएक बेहोश हो गया। जबान बन्द हो गई। इसके दो घण्टे बाद उसने इस भूलोकको त्याग दिया। विक्टर इमेन्युअलकी इच्छा थी कि दफन-विधि वहाँ कराई जाय जहाँ राजवंशके लोग दफनाये जाते हैं। परन्तु कावूरने यह इच्छा दिखलाई थी कि मेरे घरानेके लोग जिस जगह (अर्थात् सँटेना नामके गाँवमें) दफनाये जाते हैं वहीं मेरा शव भी धरा-शायी किया जाय। यह मालूम होनेपर राजाने कावूरकी इच्छाके ही अनुसार उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया होने दी।

---

* १८४८ ईसवीकी क्रान्ति-कारक हलचलके उपरान्त नेपोलियनकी बहुतसी सेना पोपकी रक्षाके लिए रोम शहरमें पड़ी हुई थी। उसे हटालेनेके लिए कावूरने नेपोलियनसे लिखा पढ़ी शुरू की थी। इसीका सङ्केत इस उद्गारमें पाया जाता है।

काबूरकी असमय मृत्युसे इटालियन राष्ट्रकी बड़ी भारी हानि हुई। उसका सोचा हुआ काम यद्यपि प्रायः पूर्ण हो चुका था तथापि अभी रोम और वेनिस ये दो प्रान्त स्वराज्यमें सम्मिलित न हो पाये थे। इतना काम बाकी ही था। उसकी पूर्तिके लिए यदि वह जीवित रहता तो फिर उसके आनन्दका क्या पूछना था! उसकी मृत्युके बाद उसके देश भाइयोंने भी रहा-सहा काम पूरा किया ही; परन्तु और दस वर्षोंके बाद। काबूर होता तो बहुत जल्दी और बड़ी कुशलतासे कर डालता। कोई एक ही वर्षके भीतर वेनिस ले लेनेकी वह हिम्मत रखता था। रोमकी समस्या भी दाँव पेंच लगाकर वह शीघ्र ही पूरी कर डालता। उसकी मृत्युके पश्चात् सङ्गठित हुए मन्त्रिमण्डलने पहले फ्लारेन्स शहरको अपनी राजधानी बनाया, फिर रोमको। काबूर सीधा रोमहीमें पहुँच जाता। उसके चरित्रका परिशीलन करनेवालोंका यही अभिप्राय है। अस्तु। इसमें सन्देह नहीं कि राजनीतिज्ञ, राज-काजी और कार्य्यक्षम मनुष्यके नाते काबूरकी योग्यता तत्कालीन सर्व राज-काजियोंकी अपेक्षा अधिक बढ़ी चढ़ी थी। उसके शत्रुवंशीय वृद्ध और अनुभवी राज-काजी प्रिन्स मेटर्निच (आस्ट्रियन मन्त्री) ने तो एक बार यहाँ तक कहा था कि योरपखण्डमें इस समय उसकी जोड़का कोई राजनीतिज्ञ पुरुष नहीं। उसके देहान्तके बाद इंग्लिश पार्लियामेण्टमें इंग्लैंडके मन्त्री लार्ड पाल्मर्स्टनने भी उसका गुण-गान किया था। शीलकी दृष्टिसे भी काबूरकी योग्यता बहुत बढ़ी चढ़ी थी। उसके हाथमें अपरम्पार सत्ता थी। परन्तु उसने उसका कभी दुरुपयोग नहीं किया। यही नहीं, आत्म-प्रतिष्ठा अथवा अपना सिक्का जमानेके लिए भी उसने उससे लाभ नहीं उठाया। उसका देशाभिमान और कर्तव्य-निष्ठा अत्यन्त निर्म्मल और उज्ज्वल थी।

उसमें स्वार्थकी जरा भी बू नहीं थी। उसने जितने काम किये सब निर्म्मल हृदयसे, शुद्ध हेतुसे और वह भी इटालियन कार्य्यकी सिद्धिमें दृष्टि रख कर, किये। इसके सिवा, जिस प्रतिकूल परिस्थितिमें उसने इटालियन राष्ट्रका भव्य भवन खड़ा किया उस परिस्थितिका विचार करने पर यही स्वीकार करना पड़ता है कि उसने बड़ा अद्भुत तथा अतिमानुष कार्य्य सिद्ध कर दिखाया, इसमें सन्देह नहीं। फिर भी यह कार्य्य उसने एकतन्त्री अधिकार—हुकूमत—के बल पर नहीं बल्कि लोक-स्वतन्त्रताके तत्त्वके अनुसार उसकी सहायतासे, लोगोंको खुश रखके, उनकी सन्तोषयुक्त सम्मतिसे, किया। इस बातपर ध्यान देनेपर यह कहना अत्युक्ति न होगा कि उसके कार्य्य अलौकिक थे—दैवी थे। भिन्न भिन्न विषम परन्तु सबल शक्तियोंका अपने अभीष्टकी सिद्धिके लिए एकीकरण करके उनके द्वारा अपने इच्छानुसार काम कर लेनेकी कलामें वह खूब सिद्ध-हस्त था। यही कारण है जो वह इतनी विपरीत परिस्थितिमें, थोड़े साधनोंसे, इतना बड़ा दुष्कर कार्य्य केवल १२ वर्षमें ही सम्पादन कर सका। कावूरके उदाहरणको ही लेकर, आगे, प्रशियाके मन्त्री बिस्मार्कने भी जर्म्मन राष्ट्रोंका ऐसा ही एकीकरण किया। इस तरह कावूरका उदाहरण औरोंके लिए आदर्शभूत हुआ है और आगे भी होने योग्य है। ऐसे पुरुष चाहे जिस देशमें पैदा हों, समस्त संसारके श्रद्धाभाजन होते हैं और भूतलका प्रत्येक राष्ट्र अर्थात् मानवसमाज सदैव उन्हें आदरकी दृष्टिसे देखता है।

१६—उपसंहार।
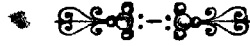
कावूरका व्यक्तिगत चरित पिछले प्रकरणमें समाप्त हो गया। परन्तु उसके सार्वजनिक अङ्गकी पूर्ति न हुई। अतएव इस प्रकरणमें उसकी पूर्ति की जाती है। कावूरके जीवनका मुख्य कार्य्य था—इटालियन राज्योंका एक स्वतन्त्र राष्ट्र निर्म्माण करके वहाँ लोकनियन्त्रित राजसत्ताकी स्थापना करना। अपने जीवनमें उसने इस कार्य्यको बहुत कुछ पूरा किया भी। उसकी मृत्युके समय वेनिशिया और रोम दो ही इटालियन प्रान्त दूसरी राजसत्ताके अधीन थे। कावूरने अपने जीते जी ही इटलीकी पार्लियामेण्टमें यह प्रस्ताव स्वीकृत करा लिया था कि रोम इटलीकी राजधानी बनाया जाय। इससे भविष्यका मार्ग निश्चितसा हो चुका था। अतएव उसके पश्चात् जो लोग उसके पद पर प्रतिष्ठित हुए उन्हें इस कामके किये बिना दूसरी गति न थी। परन्तु उसकी मृत्युके अनन्तर दो तीन मन्त्रियोंसे यह कार्य्य न बन पड़ा। वे कावूरके सदृश बुद्धिमान् और कार्य्यक्षम न थे। इसके सिवा उनका प्रायः सारा समय प्राप्त राज्योंकी आबादी करने तथा उसमें शान्ति और स्वस्थता स्थापन करनेमें ही चला गया। तथापि रिकाजोली और मिङ्घेटि नामके मन्त्रियोंने उस कार्य्यकी सिद्धिके लिए थोड़ी बहुत चेष्टा की। राटेज़ीने अलबत्ता अपने शासन-कालमें सन्तोषजनक प्रयत्न नहीं किया। यह देख कर गैरीबाल्डी बहुत उत्तेजित हो उठा, उसने स्वयं अपने स्वयंसैनिकोंको साथ लेकर रोम-पर चढ़ाई कर दी। परन्तु इससे फ्रान्स-सम्राट् नेपोलियन आपेसे बाहर हो गया। उसने इटालियन सरकारको धमकी दी कि गैरीबाल्डीको सँभालकर रखिए—समझा दीजिए नहीं, तो मैं युद्ध शुरू कर दूँगा। तब गैरीबाल्डी-

को रोकनेके लिए राटेजीको अपनी सेना रोममें भेजनी पड़ी। उसकी सेनाने गैरीबाल्डीके स्वयं-सैनिकों पर गोलियाँ झाड़ना शुरू कर दिया। दोनों दलोंमें लड़ाई छिड़ गई। तब आपसीका यह युद्ध बन्द करनेके लिए गैरीबाल्डी दोनों दलोंके बीचमें घुसा। उस समय भूलसे दो गोलियाँ उसे भी लग गईं। वह घायल होगया और किलेमें पहुँचाया गया। उसके सेनापति और सिपाही सब कैद कर लिये गये। इसके एक ही दो महीने बाद विक्टर इमेन्युअलकी कन्याका विवाह हुआ। उसकी खुशीमें इटालियन सरकारने समस्त देशभक्तोंको माफ कर दिया—छोड़ दिया। इसी समय मेजिनीने वेनिशिया प्रान्तकी स्वतन्त्रताके लिए बलवेका झण्डा उठाया। परन्तु इससे अधिक काम न निकला। गैरीबाल्डीके मनमें भी वेनिशिया-प्रान्तको स्वतन्त्र करनेकी धुन समाई। इसके सिद्धयर्थ इंग्लैंडकी सहायता प्राप्त करनेके लिए वह वहाँ गया। (मार्च १८६४ ईसवी।) वहाँ उसका अश्रुतपूर्व स्वागत किया गया। परन्तु फ्रान्स और इंग्लैंड, परस्पर, विशेष राजनैतिक सम्बन्ध रखते थे। अतएव उसे सफलता न प्राप्त हुई। उसे निराश होकर वापस लौटना पड़ा। इसी बीच इटलीके मन्त्री मिङ्घेटीने रोम-स्थित फ्रान्सकी सेनाको हटालेनेके सम्बन्धमें लिखा पढ़ी शुरू की। नेपोलियनने इस शर्त पर यह बात कुबूल की कि फ़्लारेन्स इटली की राजधानी बनाया जाय और पोपके प्रान्त पर किसी प्रकार अत्याचार न हो। इस प्रकार दोनों पक्षोंका निर्णय होने पर १८६५ ईसवीमें फ़्लारेन्समें इटालियन सरकारका दफ्तर कायम हुआ। नेपोलियनने भी अपनी सेना रोमसे हटा ली। १८६२ ईसवीमें ही जर्म्मनीमें बिस्मार्कका शासन शुरू होगया था। फ्रान्स और आस्ट्रिया ये दो राष्ट्र इटलीकी तरह ही जर्म्मनीके शत्रु थे। कावूरने अपने जीवन-

समयसे ही जर्म्मनीसे मित्रता करनेकी नींव डाल दी थी। उसी नीतिके आधार पर १८६६ ईसवीमें जर्म्मनी और इटालियन राष्ट्रकी सन्धि हुई। शर्त हुई—सम-शत्रु-मित्रत्वकी। फिर तुरन्त ही जर्म्मनी और आस्ट्रियामें युद्ध छिड़ गया। उसमें जर्म्मनीकी ओरसे इटलीको लड़ना पड़ा। इस युद्धमें इटलीकी अधिक विजय नहीं हुई। तथापि युद्धके अन्तमें वेनिशिया-प्रान्त उसे मिला। ७ नवम्बर १८६६ ईसवीको वेनिस नगरमें विक्टर इमेन्युअलने सरकारी तौर पर प्रवेश किया। इस समय नेपोलियनकी सेना रोमसे चली गई थी। इटालियन मन्त्रिमण्डलका सूत्रधार फिरसे राटेजी होगया था। पहले उसने गैरीबाल्डीके विरुद्ध सेना भेजी थी। अतएव उस समय लोगोंने उसे खूब फटकारा था। इस दशामें गैरीबाल्डीने समझा, राटेजी मुझे न रोकेगा और फिर एक बार रोम पर धावा बोल दिया। यह देख कर नेपोलियनने फिरसे इटालियन सरकारको युद्धकी धमकी दी। तब राटेजीने गैरीबाल्डीको पकड़कर कैप्रेरा टापूमें नज़रबन्द कर दिया। परन्तु इसके बाद भी गैरीबाल्डीके स्वयं सैनिक रोमकी सरहदमें घुसकर उपद्रव करने लगे। स्वयं रोम-नगरमें भी एक बलवा उन्होंने करा दिया। परन्तु क्रूरतापूर्वक उसका निर्मूलन किया गया। इस बलवेमें सहायता देनेके लिए गैरीबाल्डीके कोई ७० आदमी टैबर नदीके पास आये थे। पोपकी सेनाने उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले। इतनेहीमें गैरीबाल्डी भी नज़रकैदसे निकल कर रोमन प्रान्तमें आपहुँचा। एक जगह तो उसने पोपकी सेनाको पूरा परास्त कर दिया। परन्तु नेपोलियनकी सेना पोपकी सहायताके लिए आजानेसे गैरीबाल्डीको पीछे हटना पड़ा। रोमपर यह दूसरा आक्रमण भी व्यर्थ गया। १८६७ ईसवी।) पर इससे इटालियन लोगोंकी रोम पर आधिपत्य

करनेकी उत्सुकता बहुत बढ़ गई। वे कहने लगे—चाहे जो करना पड़े, पर रोम तो हस्तगत करना ही चाहिए। इस समय इटलीके राज्यसूत्र गियोवानी लॉजा नामके एक बुद्धिमान् और कार्य्य-क्षम युवकके हाथमें थे। (१८६९ ईसवी) कावूरकी नीतिके रहस्य-का वह पूर्ण ज्ञाता था। उसका शील भी तत्कालीन सभी इटालियन राजनीतिज्ञोंसे बढ़ा चढ़ा था। उसके प्रधान मन्त्री होते ही फ्रान्स और प्रशिया अर्थात् जर्म्मनीमें लड़ाई छिड़नेका रङ्ग दिखाई देने लगा। इस अवसरसे लाभ उठाकर रोमकी समस्या सदाके लिए हल करनेका इरादा उसने किया। जब नेपोलियन लल्लो-चप्पोकी बातें करने लगा तब गियोवानी लॉजाने उससे कहा कि १८६७ ईसवीमें जो सेना रोममें आपने भेजी थी उसे वहाँसे हटा लीजिए। नेपोलियनने इस बातसे इनकार करदिया। परन्तु आगे जब आप ही फ्रांको-जर्म्मन युद्ध-में उसकी हार होने लगी तब उसने अपनी सेना रोमसे हटा ली। सेडनमें नेपोलियनका पूरा पराभव हुआ। तब विक्टर इमेन्युअलने पोपको एक पत्र लिखकर अनुरोध किया कि आप कृपा करके रोम परसे अपनी मुल्की सत्ता हटा लीजिए। परन्तु उसने उसपर ध्यान न दिया। तब इटालियन सरकारने रोम पर अपनी सेना भेजी। २० सितम्बर १८७० ईसवीके आसपास रोम नगर पर गोले दागे गये। लगातार गोलोंकी वर्षा होती रही। अन्तमें उसकी दीवार छिद गई और विजयी इटालियन सेना उसके द्वारा शहरमें घुसगई। तब पोप अपने राज-महलमें छिप गया। २ अक्टूबरको रोमन-प्रान्तीय लोगोंसे पूछा गया कि आप स्वतन्त्र शासन-संस्थाकी स्थापना चाहते हैं या विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें शामिल होना चाहते हैं? पहले प्रश्नके अनुकूल १,५०७ और दूसरेके अनुकूल १,३३६,८१ मत प्राप्त

हुए। तब यह घोषणा कर दी गई कि रोम-प्रान्त विक्टर इमेन्युअलके राज्यमें सम्मिलित किया गया। इसतरह भूगोल और आबादीकी दृष्टिसे 'इटालियन' शब्दमें जिन प्रान्तोंका समावेश हो सकता है, उन सब प्रान्तोंको एक ही शासन-सत्ताके अधीन करके उसकी एकता करनेका जो कार्य्य कावूरने आरम्भ किया था वह सम्पूर्ण हो गया। इटालियन सरकारका आधिपत्य रोममें बाजाब्ता हो जाने पर उन्होंने पोपको उसके समस्त धर्माधिकार दे दिये। खर्चके लिए उसे बहुतसा इलाका और नकद रकम देनेका भी प्रबन्ध कर दिया। फिर शीघ्र ही अर्थात् १८७१ के जुलाई महीनेमें, रोम नगर इटालियन सरकारकी राजधानी बनाया गया। तबसे आज तक वही इटलीकी राजधानी चला आरहा है।
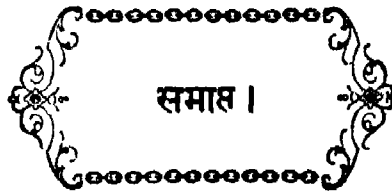
हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-सीरीज।

विक्रमसंवत् १९६९ से यह ग्रन्थमाला निकल रही है। हिन्दी संसारमें यह अपने ढंगकी अद्वितीय और सबसे पहली ग्रन्थमाला है। अब तक इसमें ३७ ग्रन्थ निकल चुके हैं, जो भाव, भाषा, छपाई, सौन्दर्य आदि सभी दृष्टियोंसे बेजोड़ हैं। प्रायः सभी साहित्य-सेवियोंने उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है। इतिहास, जीवनचरित, तत्त्वज्ञान, सदाचार, राजनीति, नाटक, उपन्यास आदि सभी विषयोंके ग्रन्थ निकले हैं। यहाँ केवल दो जीवनचरितोंका परिचय दिया जाता है।

स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते हैं। स्थायी ग्राहक बननेकी 'प्रवेश फी' आठ आने है। ग्राहक बननेके समयसे आगेके सब ग्रन्थ स्थायी ग्राहकोंको लेना पड़ते हैं। पिछले ग्रन्थ लेना न लेना उनकी इच्छा पर है। प्रत्येक हिन्दी भक्तको इस ग्रन्थमालाका ग्राहक होना चाहिए।

आत्मोद्धार।

आत्मावलम्बनकी तात्त्विक शिक्षा देनेवाली सैकड़ों पुस्तकोंसे जो लाभ न होगा, वह आत्मोद्धारकी अद्भुत मूर्ति वाशिंगटनके आत्मचरितसे हो सकता है। यह अमेरिकाके प्रसिद्ध हबशी (नीग्रो) नेता डा० बुकर टी. वाशिंगटनका आत्मचरित है। अर्थात् यह स्वयं वाशिंगटन महाशयके लिखे हुए जीवनचरितका अनुवाद है। इसके प्रारंभमें २५, ३० पृष्ठकी विस्तृत भूमिका है, जिसमें इस विषयका विचार किया गया है, कि यह ग्रंथ भारतवासियोंके लिए क्यों उपयोगी है और इस जीवनचरितका अनुकरण वे कहाँतक कर सकते हैं। इसे पढ़कर पाठक जान सकेंगे कि एक दरिद्र गुलामके घरमें पैदा हुआ लड़का अपने सदाचरण, उद्योग, परिश्रमप्रियता, आत्मविश्वास और परोपकारशीलतासे कितनी उन्नति कर सकता है। संसारमें इस विषयका वाशिंगटन जैसा दूसरा उदाहरण नहीं मिल सकता। अपने अन्तिम समय तक वाशिंगटन सारी नीग्रो जातिके नेता समझे जाते थे और उनका विद्यालय अमेरिकाका सर्वश्रेष्ठ आदर्श विद्यालय है, जिसमें इस वक्त २०० अध्यापक और कई हजार विद्यार्थी हैं। यही विद्यालय आजसे कोई ३७

वर्ष पहले उन्होंने एक झोपड़ीमें १५, २० विद्यार्थियोंको इकट्ठा करके खोला था। उन्होंने इस विद्यालयकी किस तरह इतनी उन्नति की, किन किन कठिनाइयोंको पार किया, किन सिद्धान्तोंका अवलम्बन करके सफलता पाई, असली शिक्षापद्धति कैसी होती है, एक गरीब कौमको कैसी शिक्षा मिलना चाहिए, आदि बातें प्रत्येक देशहितैषीके मनन करने योग्य हैं। शिक्षासंस्थाओंके संचालकों और कार्यकर्ताओं को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। दूसरी बार छपा है। मूल्य एक रुपया दो आने।

अब्राहम लिंकन।

अमेरिका–संयुक्तराज्यके सुप्रसिद्ध प्रेसीडेंटका जीवनचरित। लिंकन रंकसे राजा कैसे हो गया, झोंपड़ीका रहनेवाला राजमहलका निवासी कैसे बन गया, स्कूलमें केवल एक वर्ष शिक्षा पाकर भी प्रसिद्ध वक्ता, लेखक और राजनीतिज्ञ कैसे बन गया, गुलामों पर जुल्म करनेवालोंके वंशमें उत्पन्न होने पर भी उसके हृदयमें दयाका झरना कैसे बहने लगा और उस झरनेसे अमेरिकाके हबशियों या नीग्रो लोगोंके अनन्त कष्ट कैसे धुल गये, उन्हें स्वाधीनता कैसे मिल गई, और गुलामोंके लिए सिविल–वार (घरू युद्ध) कैसे हुआ, आदि प्रश्नोंके उत्तर इस महात्माके जीवनचरितके पढ़नेसे मिलेंगे। अँगरेजीके कई जीवनचरितोंके आधारसे इसे बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय, बी. ए. ने बहुत ही सरल भाषामें लिखा है। मूल्य दस आने।

नोट––सीरीजके अन्यान्य ग्रन्थोंका परिचय पानेके लिए बड़ा सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

मिलनेका पता––

मैनेजर, **हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर-कार्यालय,**

हीराबाग पो० गिरगाँव, बम्बई।